सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

www.newsparivahan.com

# परिवहन विशेष

वर्ष 03, अंक 123, नई दिल्ली, शनिवार 12 जुलाई 2025, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

असफलता एक चुनौती है, इसे स्वीकार करो, क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो।

03 दिल्ली में बीजेपी को लाकर पछता रहे दिल्लीवाले- सौरभ भारद्वाज

06 भारत की जनसंख्या क्षमता का दोहन

08 जब छात्र हत्यारे बन जाएं: चेतावनी का वक्त

## भारत में प्लास्टिक कचरे से सड़क बनाने की नई पहल, दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के 100 मीटर हिस्से से निर्माण की शुरुआत

संजय बाटला

भारत पेट्रोलियम ने अनुपयोगी प्लास्टिक से सड़कें बनाने की जियोसेल तकनीक का पेटेंट कराने के लिए आवेदन किया है। माना जा रहा है कि यह तकनीक विश्व में पहली बार इस्तेमाल हो रही है। वैज्ञानिकों का कहना है कि प्लास्टिक पूरे विश्व के लिए एक समस्या है और भारत इसमें मदद कर सकता है। दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेस-वे पर इस तकनीक का परीक्षण किया जा रहा है।

**नई दिल्ली:** प्लास्टिक से सड़कें बनाने के लिए तैयार की गई जियोसेल तकनीक का पेटेंट कराया जाएगा। भारत पेट्रोलियम ने केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान (CRRI) की ओर से इस तकनीक के परीक्षण के बाद पेटेंट के लिए आवेदन किया है।

माना जा रहा है कि भारत ही नहीं, पूरे विश्व में भी अभी तक इस तरीके का प्रयोग नहीं हुआ है । इस कार्य में लगे भारत पेट्रोलियम और CRRI के विज्ञानी इसे बड़ी उपलब्धि मान रहे हैं । उनकी मानें तो प्लास्टिक पूरे विश्व की समस्या है। सब कुछ ठीक-ठाक रहा तो आने वाले समय में भारत दूसरे देशों को भी इस मामले में मदद कर सकेगा।

**दिल्ली-मुंबई एक्सप्रेसवे के 100 मीटर हिस्से पर काम शुरू**

जियोसेल से सड़क बनाने के काम का आश्रम के पास एनएचएआई की ओर से बनाए जा रहे दिल्ली मुंबई एक्सप्रेसवे के लूप पर शुक्रवार को उद्घाटन किया गया। यहां इसे 100 मीटर में प्रयोग किया जाएगा। सीआरआरआई की महानिदेशक डॉ. एन कलैसेलवी ने उद्घाटन करते हुए इस प्रयास की सराहना की।

बता दें कि विश्व के अन्य प्रमुख देशों की तरह भारत में भी अनुपयोगी प्लास्टिक एक बड़ी समस्या है। भारत में प्रति व्यक्ति प्लास्टिक की खपत लगभग 11 किलोग्राम प्रति वर्ष हो गई है और बढ़ते औद्योगिकीकरण और उपभोक्तावाद के साथ इस संख्या के और बढ़ने की उम्मीद है।

विभिन्न अध्ययनों में यह बात सामने आ चुकी है कि भारत भर में हर साल 58 लाख टन प्लास्टिक कचरा खुलेआम जलाया जाता है।

यह प्रथा न केवल वायु प्रदूषण में योगदान देती है, बल्कि हानिकारक प्रदूषक भी छोड़ती है, जिससे स्थानीय समुदायों का स्वास्थ्य प्रभावित होता है और जलवायु परिवर्तन की समस्या और भी गंभीर हो जाती है।

**इस तरह से अनुपयोगी प्लास्टिक भी उपयोगी हो जाएगी**

कुल प्लास्टिक कचरे का अनुमानित

30% अनियंत्रित लैंडफिल में फेंका जा रहा है। भारत पेट्रोलियम कॉरपोरेशन के मुख्य महाप्रबंधक डॉ. रवि कुमार वी कहते हैं कि जियोसेल की परत का प्रयोग आने से अनुपयोगी प्लास्टिक भी उपयोगी हो जाएगी।

अनुपयोगी प्लास्टिक से जियोसेल की परत और प्लास्टिक शीट तैयार करने से खर्च में कम से कम 25 प्रतिशत की किफायत होगी। मगर इसके और कई बड़े फायदे भी हैं।

भारत पेट्रोलियम के मुख्य प्रबंधक डॉ. महेश कस्तूरे कहते हैं कि लैंडफिल पर फेंका गया प्लास्टिक जिसे रिसाइकिल नहीं किया जा सकता है, कूड़ा बीनने वाले उसे छोड़ देते हैं और लैंडफिल पर इसका ढेर लग जाता है, इसके बाद ढेर नहीं मिलेगा।

परियोजना पर काम कर रहे सीआरआरआई के वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. गगनदीप ने बताया कि शुक्रवार को जियोसेल से जिस भाग पर काम का उद्घाटन किया गया है। मौसम ठीक होने पर जल्द ही इस काम को शुरू किया जाएगा।

उन्होंने कहा कि इस तरह का यह पहला प्रयोग है, माना जा रहा है कि यह सड़क सामान्य से दोगुनी उम्र से भी अधिक चल सकेगी।

**पेटेंट के लिए किया गया है आवेदन**

सीआरआरआई की वरिष्ठ प्रधान वैज्ञानिक डॉ. अंबिका बहल ने कहा कि अनुपयोगी प्लास्टिक के जलाए जाने से होने वाला प्रदूषण रुकेगा, लोगों के रोजगार के मार्ग खुलेंगे, सड़कें मजबूत होंगी और अनुपयोगी प्लास्टिक की समस्या समाप्त होगी।

उन्होंने कहा कि भारत सरकार ने इस बारे में रिपोर्ट मांगी है, सभी कुछ ठीक ठाक रहा तो एक साल के अंदर इस पर काम शुरू हो जाएगा। भारत पेट्रोलियम के अधिकारी ने पेटेंट के आवेदन की पुष्टि की है।

## पूर्वी दिल्ली में बिना हेलमेट बाइक से पैट्रोलिंग कर रहे एसआई को टैक्सी ने मारी टक्कर, सिर पर चोट लगने से मौत

पूर्वी दिल्ली में एनएच-नौ पर गश्त कर रहे दिल्ली पुलिस के एसआई यशपाल की टैक्सी की टक्कर से मौत हो गई। वह हेलमेट नहीं पहने थे। पुलिस ने टैक्सी जब्त कर ड्राइवर को गिरफ्तार कर लिया है। यशपाल बुलंदशहर के रहने वाले थे और उनके परिवार में पत्नी और बेटा है। पुलिस मामले की जांच कर रही है।

**पूर्वी दिल्ली:** एनएच-नौ पर बाइक से पैट्रोलिंग कर रहे दिल्ली पुलिस के एसआई को एक टैक्सी ने पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में एसआई की मौत हो गई। मृतक की पहचान एसआई यशपाल के रूप में हुई है। पुलिस सूत्रों के मुताबिक एसआई ने हेलमेट नहीं लगाया हुआ था। कल्याणपुरी थाना में टैक्सी चालक पर केस दर्ज किया गया है।

पुलिस ने टैक्सी को जब्त करने के साथ ही सरिता विहार निवासी टैक्सी चालक विष्णु यादव को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने शव पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। पुलिस सीसीटीवी कैमरे भी खंगाल रही है।

यशपाल मूलरूप से बुलंदशहर के रहने वाले थे। वह परिवार के साथ राजनगर एक्सटेंशन स्थित एमआर प्लैटिनम 321 सोसायटी में रहते थे। परिवार में पत्नी अनीता, इकलौता बेटा तरुण है।

बेटा सरकारी नौकरी की तैयारी कर रहा है। वर्ष 1987 में वह दिल्ली पुलिस में कांस्टेबल भर्ती हुए थे। उनकी तैनाती पांडव नगर थाने में चल रही थी।

जिला पुलिस उपायुक्त अभिषेक धानिया ने बताया कि एसआई यशपाल की ड्यूटी हाईवे की पैट्रोलिंग में लगी हुई थी। वह बाइक से एनएच-नौ पर पैट्रोलिंग कर रहे थे।

दोपहर ढाई बजे के आसपास वह डीपीसी ईस्ट ऑफिस के कट के पास पहुंचे, तभी पीछे से आ रही एक टैक्सी ने उन्हें टक्कर मार दी।

घायल हालत में एसआई को मैक्स वैशाली अस्पताल में भर्ती करवाया, जहां डॉक्टरों ने उन्हें मृत घोषित कर दिया। पुलिस ने चालक को गिरफ्तार कर लिया है। आरोपित से पूछताछ की जा रही है।

## दिल्ली के पुराने वाहनों को बचाने के लिए आतिशी की सीएम रेखा गुप्ता को चिट्ठी, विशेष सत्र बुलाने की मांग

आम आदमी पार्टी की नेता आतिशी ने पुरानी कारों को हटाने के नियम के खिलाफ सीएम रेखा गुप्ता को पत्र लिखा। उन्होंने इसे मध्यवर्ग पर हमला बताया और विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर कानून बनाने की मांग की ताकि कार मालिकों को बचाया जा सके। आतिशी ने कहा कि 1 नवंबर की डेडलाइन लोगों को परेशान कर रही है।

**नई दिल्ली।** आम आदमी पार्टी की वरिष्ठ नेता और दिल्ली विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष आतिशी ने उम्र पूरी कर चुके वाहनों को बचाने के लिए कानून लाने की मांग को लेकर सीएम रेखा गुप्ता को चिट्ठी लिखी है। आतिशी ने कहा कि दिल्ली की सड़कों से 10 साल पुरानी कारों को हटाना मिडिल क्लास पर सीधा हमला है। मिडिल क्लास सपने देखता है, कड़ी मेहनत करता है और बचत करके कार खरीदता है। कहा कि 1 नवंबर की तलवार अभी भी इन कार मालिकों के सिर पर लटकी हुई है।

**विधानसभा का विशेष सत्र बुलाना चाहिए: आतिशी**

उन्होंने मांग की है कि दिल्ली सरकार को तुरंत विधानसभा का विशेष सत्र बुलाकर मिडिल क्लास के कार मालिकों की सुरक्षा के लिए एक कानून पारित करना चाहिए। आम आदमी पार्टी इस कानून का पूरा समर्थन करेगी।

आतिशी ने शुक्रवार को सीएम रेखा गुप्ता को लिखी चिट्ठी में कहा है कि मैं यह पत्र दिल्ली के लाखों निवासियों की आवाज़ बनकर आपको लिख रही हूं, जो आपकी सरकार की हालिया योजना से बेहद परेशान हैं।

**1 नवंबर की डेडलाइन तलवार की तरह लटक रही**

इस योजना के तहत 10 साल पुराने डीज़ल और 15 साल पुराने पेट्रोल वाहनों को राष्ट्रीय राजधानी में स्क्रैप किया जाना है। यह प्रस्ताव 1 जुलाई से लागू किया गया था, लेकिन जनता के विरोध के चलते तुरंत वापस ले लिया गया। अब 1 नवंबर की एक नई डेडलाइन के साथ फिर से लोगों के सिर पर तलवार की तरह लटक रही है।

## दिल्ली अभी भी देश का दूसरा सबसे प्रदूषित शहर, यह सिटी है सबसे ऊपर; रिपोर्ट में खुलासा

परिवहन विशेष न्यूज

नवीनतम रिपोर्ट के अनुसार दिल्ली अभी भी देश का दूसरा सबसे प्रदूषित शहर है जबकि बर्नीहाट सबसे ऊपर है। 239 शहरों में से 122 ने राष्ट्रीय वायु गुणवत्ता मानकों को पार किया। दिल्ली में प्रदूषण का स्तर राष्ट्रीय मानकों से दोगुना है। विशेषज्ञों के अनुसार वायु प्रदूषण से निपटने के लिए सभी संबंधित पहलुओं पर ध्यान देना आवश्यक है।

**नई दिल्ली।** दिल्ली अब भी देश का दूसरा सबसे प्रदूषित शहर है। जबकि असम-मेघालय सीमा पर स्थित बर्नीहाट सबसे प्रदूषित शहरों की सूची में अव्वल रहा है। ऊर्जा एवं स्वच्छ वायु अनुसंधान केन्द्र (सीआरईए) की ओर से जारी रिपोर्ट का यह निष्कर्ष है।

सीआरईए ने शुक्रवार को यह रिपोर्ट जारी की, जो साल 2025 की पहली छमाही के दौरान देशभर में हवा की गुणवत्ता के विश्लेषण के आधारित है। रिपोर्ट के मुताबिक, निगरानी वाले कुल 293 में से 239 शहरों में 80 प्रतिशत से ज्यादा दिनों तक पीएम 2.5 का डेटा उपलब्ध रहा। इन 239 में से 122 शहरों ने भारत के वार्षिक राष्ट्रीय परिवेशी वायु गुणवत्ता मानकों (एनएएक्यूएस) 40 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर को पार कर लिया। जबकि 117 शहर इस सीमा से नीचे रहे।

**इस साल की पहली छमाही में 122 शहर प्रदूषित रहे**

हालांकि, सभी 239 शहर विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सख्त वार्षिक मानक पांच माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर को पार कर गए। यानी वायु गुणवत्ता के भारतीय मानकों के मुताबिक, इस साल की पहली छमाही में 122 शहर प्रदूषित रहे। जबकि डब्ल्यूएचओ के मानकों के हिसाब से देखें तो सभी 239 शहर वायु-प्रदूषित शहरों की सूची में शामिल रहे।

रिपोर्ट के अनुसार, बर्नीहाट में औसत पीएम 2.5 सांद्रता 133 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर है। वहां साल की पहली छमाही के अधिकांश दिनों में वायु गुणवत्ता "बहुत खराब" श्रेणी में रही। इस दौरान "अच्छी" वायु गुणवत्ता वाला एक भी दिन दर्ज नहीं किया गया। वहीं, दिल्ली में पीएम 2.5 का स्तर 87 माइक्रोग्राम प्रति घन मीटर रहा। यह स्तर एनएएक्यूएस से दोगुना है।

**दिल्ली इस साल अपनी स्थिति नहीं सुधार सकेगी**

शहर ने 10 जनवरी, 2025 की शुरुआत में डब्ल्यूएचओ के वार्षिक पीएम 2.5 मानक को पार किया जबकि पांच जून 2025 तक एनएएक्यूएस का स्तर पर लांघ लिया। इसका मतलब है कि राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय, दोनों ही मानकों के उल्लंघन के बाद दिल्ली अब साल के बाकी बचे महीनों में भी वायु प्रदूषण के मामले में अपनी स्थिति को सुधार नहीं सकेगी।

बर्नीहाट और दिल्ली के अलावा देश के शीर्ष 10 सर्वाधिक प्रदूषित शहरों की सूची में हाजीपुर, गाजियाबाद, गुरुग्राम, सासाराम, पटना, तालचेर, राउरकेला और राजगीर शामिल हैं। इनमें चार शहर बिहार के, दो ओडिशा के और शेष दिल्ली, असम, हरियाणा और उत्तर प्रदेश के हैं।

**दिल्ली में सिर्फ गाड़ियों पर प्रतिबन्ध से काम नहीं चलेगा**

रिपोर्ट के मुताबिक, किसी शहर में हवा गुणवत्ता सुधारने के लिए जीवन-अवधि पूरी कर चुके वाहनों पर प्रतिबंध लगाना एक महत्वपूर्ण कदम है। लेकिन दिल्ली की तरह सिर्फ इसी एक कदम पर ही ध्यान केन्द्रित करने से काम नहीं चलने वाला। सालभर में वायु की गुणवत्ता खराब करने वाले दूसरे तमाम घटकों पर भी ध्यान देना जरूरी है।

पोर्टल फॉर रेगुलेशन ऑफ एयर-पॉल्यूशन इन नान-अटेनमेंट सिटीज (प्राण) और आइआइटी दिल्ली के स्रोत विभाजन अध्ययन पर ध्यान देना जरूरी है। इसके मुताबिक, वायु प्रदूषण में परिवहन यानी मोटरगाड़ियों का योगदान 17 से 28 प्रतिशत तक ही है। जबकि इसमें धूल (17 से 38 प्रतिशत), आवासीय गतिविधियों (8 से 10 प्रतिशत), खेतों के अपशिष्ट, पराली आदि को जलाने (4 से 7 प्रतिशत), औद्योगिक गतिविधियों तथा बिजली संयंत्रों (22 से 30 प्रतिशत) का भी योगदान होता है।

*किसी भी भारतीय शहर में वायु गुणवत्ता के संकट से निपटने के लिए सभी पहलुओं को देखने, समझने और उन पर कार्रवाई करने की जरूरत है। टुकड़ों-टुकड़ों में उठाए गए कदमों या अस्थायी मौसमी उपायों से काम नहीं चल सकता। - मनोज कुमार, विश्लेषक, सीआरईए*

## कांवड़ियों की आवाजाही को लेकर ट्रैफिक पुलिस ने किए व्यापक इंतजाम, एडवाइजरी जारी

परिवहन विशेष न्यूज

दिल्ली और आसपास के राज्यों में कांवड़ यात्रा शुरू होने से दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने व्यापक व्यवस्था की है। पुलिस द्वारा एडवाइजरी जारी कर बताया गया है कि किन मार्गों पर यातायात अधिक रहेगा और कहां डायवर्जन किया गया है। यात्रियों की सुविधा के लिए वीडियोग्राफी और फोटोग्राफी की जाएगी।

**नई दिल्ली।** दिल्ली समेत आसपास के राज्यों में कांवड़ियों की आवाजाही शुरू हो गई है। हाथों में जल लिए हरिद्वार तक कांवड़ियों की आवाजाही को देखते हुए, दिल्ली ट्रैफिक पुलिस ने भी कमर कस ली है। इसी को देखते हुए यात्रियों व श्रद्धालुओं के लिए व्यापक ट्रैफिक व्यवस्था की गई है। ट्रैफिक पुलिस के मुताबिक लाखों कांवड़ियों की आवाजाही हो सकती है।

ट्रैफिक पुलिस ने एडवाइजरी जारी कर बताया है कि कांवड़ यात्रा के दौरान किस किस मार्ग पर जाने से यात्री बचें और कहां-कहां पर ट्रैफिक को डायवर्ट किया गया है। ट्रैफिक पुलिस के मुताबिक आमतौर पर नजफगढ़, फिरनी रोड, रोहतक रोड, पंखा रोड, देव प्रकाश शास्त्री मार्ग, नांगलोई-नजफगढ़ रोड, आउटर रिंग रोड, रानी झांसी रोड पर बर्फ खाना चौक से फायर स्टेशन, बुलेवार्ड रोड और आजाद मार्केट चौक, गोकुलपुरी फ्लाईओवर, 66 फुटा रोड, मौजपुर चौक, बदरपुर टी प्वाइंट और मथुरा रोड पर ट्रैफिक अधिक होता है।

**धौला कुआं मेट्रो स्टेशन से लेकर रजोकरी बॉर्डर तक हैवी ट्रैफिक**

इसी तरह एनएच-8 पर धौला कुआं मेट्रो स्टेशन से लेकर रजोकरी बॉर्डर तक ट्रैफिक हैवी रहता है। वही यूपी पुलिस ने अप्सरा बार्डर और महाराजपुर बार्डर से गाजीपुर की तरफ जाने वाली गाड़ियों को डायवर्ट किया गया है। इस कारण एनएच-24 पर भी भीड़भाड़ रहेगी। इसलिए ट्रैफिक पुलिस ने गाड़ी चालकों को इस मार्ग पर अधिक समय लेकर और योजना बना कर यात्रा करने की सलाह दी है।

इन मार्गों को छोड़ दे तो दिल्ली में अन्य जगहों पर कावंड़ियों की आवाजाही कम ही रहती है। ट्रैफिक पुलिस ने बताया कि कावंड़ियों को यात्रियों और श्रद्धालुओं को असुविधा कम करने के लिए व्यापक व्यवस्था की गई है। यात्रा के दौरान

वीडियोग्राफी और फोटोग्राफी भी की जाएगी ताकि नजर रखा जा सके।

**इन मार्गों से गुजरेंगे कांवड़िए**

रोहतक रोड जखीरा से मादीपुर, मादीपुर से पीरागढ़ी चौक, वहां से नांगलोई चौक, नांगलोई चौक से टिकरी बार्डर तक

नजफगढ़ रोड-जखीरा से उत्तम नगर तक, नजफगढ़ फिरनी रोड से झरौदा बार्डर तक

आउटर रिंग रोड-मधुबन चौक से पीरागढ़ी, वहां से केशोपुर मंडी, फिर जनकपुरी तक

देव प्रकाश शास्त्री मार्ग-रतनपुरी चौक से लोहा मंडी तक

**इन मार्गों को किया गया डायवर्ट**

ट्रैफिक पुलिस ने बताया कि आने वाले दिनों में कावंड़ियों की संख्या बढ़ेगी। इसे देखते हुए यूपी पुलिस भारी गाड़ियां (एचटीवी) को मोहन नगर से एनएच-24 की तरफ मोड़ दिया जाएगा और ऐसे किसी भी ट्रैफिक को भोपुरा के रास्ते वजीराबाद रोड या अप्सरा बॉर्डर के रास्ते जीटी रोड नहीं जाने दिया जाएगा।

सिटी बसों को छोड़कर भारी गाड़ियों को जीटी रोड पर शाहदरा और वजीराबाद रोड पर जाने नहीं दिया जाएगा

जीटी करनाल रोड और आउटर रिंग रोड से आने वाले भारी गाड़ियों को जो ईस्ट दिल्ली, नार्थ ईस्ट दिल्ली, शाहदरा या यूपी की तरफ जा रहे है। उन्हें एनएच-9 की ओर मोड़ दिया जाएगा ऐसे वाहनों को वजीराबाद रोड, शाहदरा और विकास मार्ग की तरफ जाने वाले को जीटी रोड पर जाने की अनुमति नहीं होगी।

लोनी रोड से आने वाली सिटी बसों को छोड़कर भारी गाड़ियों को बाहरी रिंग रोड से बाहर निकलने के लिए वजीराबाद रोड पर डायवर्ट किया जाएगा।

सोनिया विहार, पीटीएस वजीराबाद पुश्ता, पुश्ता रोड पर भारी गाड़ियों को एनएच-24 पर लेने के बाद वजीराबाद रोड से बाहरी रिंग रोड की तरफ मोड़ दिया जाएगा।

# ये 12 नायाब रत्न दूर कर सकते हैं 12 प्रकार की बीमारियां

रत्नों को प्रकृति का हमें दिया गया अनमोल और बेजोड़ उपहार माना जाता है। ज्योतिष विद्या में रत्नों का विशेष महत्व बताया गया है। विभिन्न प्रकार के रत्नों को धारण करके जहां ग्रह दशा और दरिद्रता दूर की जा सकती है। वहीं इन्हीं रत्नों के माध्यम से स्वास्थ्य की समस्याओं से भी छुटकारा पाया जा सकता है। ऐसे ही 12 रत्नों के बारे में जिनको धारण करके आप स्वास्थ्य की 12 समस्याएं दूर कर सकते है।

**1- ओनेक्स स्टोन पन्ना का उपरत्न**

==========

यह पन्ना का उपरत्न है, जिसका ज्योतिष में विशेष महत्व बताया गया है। इसको धारण करने से आपके आस-पास की वायु शुद्ध होती है और सांस की तकलीफें दूर होती हैं। ओनेक्स घर की निगेटिव एनर्जी को भी समाप्त करता है।

**2- स्फटिक कहलाता है लव स्टोन**

==========

ज्योतिष में स्फटिक को लव स्टोन भी कहते हैं। यह तनाव और चिड़चिड़ापन दूर करता है। साथ ही दिमाग की उलझन को भी कम करता है। शुक्र ग्रह से संबंधित होने के कारण इसे प्रेम संबंधी मामलों के लिए भी शुभ माना गया है।

**3- जामुनिया नीलम का उपरत्न**

==========

यह सिरदर्द और थकान को दूर करके आपको राहत देता है। इसके साथ ही अच्छी नींद के सुंदर स्वप्न को भी बढ़ावा देता है। यह त्वचा के लिए भी अच्छा माना जाता है और साथ ही हड्डियों और जोड़ों को भी मजबूती प्रदान करता है।

**4- सुनहला गुरुवार को धारण करें**

==========

इसको गुरुवार के दिन धारण करना शुभ माना जाता है। यह रत्न एकाग्रता बढ़ाने के साथ ही याददाश्त को मजबूत करता है और साथ ही रचनात्मकता को भी बढ़ावा देता है।

**5- लाजवर्त माइग्रेन से दिलाता है मुक्ति**

==========

यह एक बहुत ही प्राचीन रत्न है। इसका प्रयोग माइग्रेन से राहत पाने के लिए किया जा सकता है। इसके अलावा यह प्रतिरक्षा तंत्र को भी मजबूत करता है।

**6- ओपल रत्न पहनने के फायदे**

==========

इसको धारण करने से व्यक्ति को एक नई ऊर्जा का एहसास होता है। साथ ही यह रचनात्मकता को भी बढ़ावा देता है। ओपल को पहनने से व्यक्ति को सिरदर्द की समस्या से मुक्ति मिलती है।

**7- पुखराज रत्न है अद्भुत**

==========

पुखराज को ज्योतिषियों का पसंदीदा रत्न माना जाता है। यह हॉर्मोन का संतुलन बनाए रखने के साथ ही व्यक्ति को जवां बनाए रखता है।

**8- बैरूंज रत्न पेट को देता है लाभ**

==========

इसे एक्वामरीन भी कहते हैं। इसको पहनने से व्यक्ति को पेट की समस्याओं से छुटकारा मिलता है। यह गैस बनने की समस्या को दूर करके व्यक्ति के पाचक को सही रखता है।

**9- जेड स्टोन के फायदे**

==========

यह व्यक्ति की एड्रीनल ग्रंथि के स्त्रावण को नियमित करता है। इसके साथ खून को भी शुद्ध करता है। इसके अलावा सिरदर्द की समस्या को भी दूर रखता है।

**10- गोमेद दूर करता है यह समस्याएं**

==========

ज्योतिष में राहु की दशा होने पर गोमेद पहनने की सलाह दी जाती है। इसके साथ ही यह रत्न पीठ के दर्द से राहत दिलाता है। यह शरीर से कैल्सियम की कमी को दूर करके शरीर में टिश्यू का फिर से निर्माण करता है।

**11- ब्लडस्टोन इस काम का**

==========

इसको धारण करने वाले जातकों के लिए रामबाण का काम करता है। इसको धारण करने से ब्लड प्रेशर की समस्या दूर रहती है और ब्लड सर्कुलेशन भी सही रहता है। यह सर्दी जुकाम की समस्या को भी दूर रखता है।

**12- एगेट अर्थात सुलेमानी के लाभ**

==========

यह आपके शरीर से दूषित पदार्थों को दूर करने में मदद करता है। साथ ही तनाव और अवसाद की स्थित में भी लाभ पहुंचाता है।

# 8 मुखी रुद्राक्ष पहनने के लाभ ? शनि ग्रह के दोष निवारण हेतु

सरकारी नौकरियां कामों और बीमारियों में ब्लड प्रेशर और इसका जल नियमित सेवन रोगों में विशेष लाभदायक है।

यह पहनने वाले को व्यवसाय और लॉटरी से संबंधित अवसरों और स्टॉक एक्सचेंज आदि क्षेत्र में मदद करता है

यह जीवन में अप्रत्याशित हो रही देरी को दूर करने में मदद करता है ।यह विफलताओं और बाधाओं से निपटने में मदद करता है।

यह मानसिकता को बदलने में मदद करता है और आपको प्रतिकूलताओं से निपटने में सक्रिय बनाता है ।

यह मूलाधार चक्र को विनियमित करने का काम करता है यह केतु के ग्रह प्रभाव को दूर करने में मदद करता है।

यह काल सर्प दोष के प्रतिकूल प्रभाव को नियंत्रित करता हैयह फेफड़े, लीवर और पेट संबंधी समस्याओं को ठीक करने में मदद करता है। यह पहनने वाले में ज्ञान और जागरूकता बढ़ाता है यह रुद्राक्षधारी को मजबूत बनाता है और उसे जीवन में चुनौतियों का सामना करने और उनसे निपटने में सक्षम बनाता है ।

यह पहनने वाले के जीवन में सफलता लाने में मदद करता हैयह पहनने वाले को ऊर्जावान बनाता है और जीवन से नीरसता को दूर करता है यह व्यक्ति में सकारात्मकता, संतुष्टि और प्रसन्नता का संचार करता है

यह पैर या हड्डी से संबंधित समस्याओं का इलाज करने में मदद करता हैयह पहनने वाले को इच्छा शक्ति और स्थिरता प्रदान करता है यह मानसिक सुस्ती को दूर करने में मदद करता है।

यह पहनने वाले को किसी भी तरह के नकारात्मक गतिविधि से बचाए रखता है।

यह धारक से वासना और लालच को दूर करता है।

## सामान्यत: हम जीवन को टुकड़ों में देखते हैं। हम क्षणों को, विकल्पों को, संबंधों को, मन:स्थितियों को अलग-अलग समझते हैं, जैसे वह सब किसी अलग कमरे में घटते हों। लेकिन जीवन इस तरह नहीं चलता।

जीवन गति में है, एक सतत बहाव में हैं। हर चीज़ एक-दूसरी से जुड़ी हुई है। और फिर भी, हम जीते ऐसे हैं जैसे छोटी-छोटी दरारों का कोई महत्व ही न हो। हम अधूरी बातों को छोड़ देते हैं, हम सोचते हैं, वह खुद-ब-खुद सुलझ जाएंगीं। हम अपनी ज़िंदगी की नींव को नजरअंदाज करते रहते हैं, और सतह/उपरी मुखौटे को चमकाने में लगे रहते हैं। एक बातचीत जिसे हम टालते हैं, एक भावना जिसे हम दबा देते हैं, एक मूल्य जिसे हम बस एक बार तोड़ते हैं, एक-एक करके हमारी यह ईंटें ढीली होती जाती हैं, और फिर हमें लगता है, कि सब कुछ डगमगाने-सा क्यों लगा है? हम ऐसी गलती तब करते हैं, जब मान लेते हैं कि 'छोटी बातें' वाकई छोटी होती हैं, उनका कोई वजूद नहीं है। ध्यान रहे कि हमारी ज़िंदगी न तो इतनी चौड़ी है, न ही इतनी लंबी, कि उसमें कुछ भी 'निरर्थक' हो सके। हर छोटे से छोटा कार्य, हर अनदेखा धागा, हर बेमेल शब्द, हमारे जीवन की हवा, हमारी दशा, हमारे माहौल को आकार दे रहा होता है। और जब भी कोई नुकसान हमारे सामने आता है, तो वह शायद ही कभी 'सिर्फ एक चीज़' के कारण होता हो। वह हर उस चीज़ का समामेलन/सम्मिलित रूप होता है जो चुपचाप भीतर बहती रहीं हैं, जुड़ती रहीं हैं। भले वह पक्षियों का चहचहाना हो, हवा का छूना हो, पेड़ो-पौधों का हिलना हो या हमारे भीतर मन का कम्पन हो, सब कुछ साथ साथ हिलता है, तो हर चीज़ का महत्व है। इसलिए पक्षियों को, पशुओं को, वृक्षों को, हवाओं को, यदि हम एक ही संसार का हिस्सा समझें तो हमें सम्पूर्णानंद की अनुभूति होने लगती है। फिर भाषा/रंग/जाति/प्रकृति/आकार, उसी एक परमात्म/अस्तित्व का हिस्सा लगने लगेगें। फिर हम मात्र मनुष्यों से ही नहीं, हम पशुओं/पक्षियों/वृक्षों के प्रति किये गये अपने व्यवहार के लिए भी क्षमा मांग सकतें हैं। यह इस सच्चाई की स्वीकारोक्ति है कि यह समस्त संसार अलग-अलग टुकड़ों से नहीं बना, बल्कि एक सतत तरंग से बना है।

# ज्योतिर्लिंग देवघर प्रवेश द्वार कांवरिया पथ को तीन मंत्रियों किया उद्घाटन

सुगम कांवरिया पथ , ए आई सिस्टम से लैस होगा मेला

**कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड- झारखंड**

**रांची।** झारखंड के प्रवेश द्वार कांवरिया पथ दुम्मा में गुरू पूर्णिमा के पावन अवसर पर राजकीय श्रावणी मेला का उद्घाटन मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री सुदिव्य कुमार, दीपिका पांडेय और संजय प्रसाद यादव ने संयुक्त रूप से किया। मुख्य अतिथि पर्यटन मंत्री सुदिव्य कुमार ने कहा कि देवतुल्य श्रद्धालु अच्छी स्मृति लेकर जाएं इसके लिए इस बेहतर करने की कोशिश सरकार और जिला प्रशासन ने की है।

एआइ आधारित सिस्टम बनाया गया है। एआइचैट बोट, क्यूआर कोड, बच्चों के लिए रैफिड से ट्रैकिंग और ट्रेसिंग की सुविधा बहाल की गयी है। पर्यटन मंत्री ने कहा कि हर साल बेहतर करने की सरकार की योजना है।

कांवरिया पथ खिजुरिया से मानसरोवर तट स्थित क्यू काम्प्लेक्स तक फूट ओवरब्रिज बनाने की योजना है। ताकि सर्कुलर रोड को पार करने में भक्तों को आ रही परेशानी को दूर किया जा सके।

जानकारी हो कि दुम्मा से खिजुरिया तक कांवरिया पथ में सुगम रास्ते हैं। इसके बाद सड़क मार्ग से भक्तों को मंदिर तक जाना होता है। इस बीच के रास्ते को सुगम बनाने की सरकार ने योजना बनायी है।

इसके बन जाने से झारखंड की सीमा में प्रवेश करने के बाद श्रद्धालुओं को मंदिर तक पहुंचने का एक डेडिकेटेड कांवरिया पथ हो जाएगा। इससे भक्तों के साथ साथ शहर की यातायात व्यवस्था और आमजन की परेशानी भी कम हो जाएगी।

ग्रामीण विकास मंत्री दीपिका पांडेय ने कहा कि सब मिलकर मेला को सफल बनाएंगे। बाबा की कृपा से बारिश हो रही है। इससे भक्तों के साथ साथ किसानों को भी फायदा होगा। श्रम नियोजन मंत्री संजय प्रसाद यादव ने कहा कि नगर विकास मंत्री और जिला प्रशासन ने बेहतर इंतजाम का प्रयास किया है।

कांवरिया सुखद अनुभव के साथ यहां से लौटेंगे यह भरोसा है। अतिथियों का स्वागत उपायुक्त नमन प्रियेश लकड़ा ने किया और कहा कि सुगम और सुरक्षित जलार्पण के लिए हर संभव प्रयास किया गया है।

एआइचैट बोर्ड और अन्य सुविधाएं रखी गयी है। इससे पहले मुख्य अतिथि एवं विशिष्ट अतिथि ने दुम्मा प्रवेश द्वार पर पूजन किया और फीता काटकर मेला का शुभारंभ किया। हर-हर महादेव के जयघोष से वातावरण गूंज उठा।

## पति की मौत की गम में 15 मिनट तक पानी की टंकी से लटकने के बाद कूद मरी युवती

**सुनील बाजपेई**

**कानपुर।** शुक्रवार को शास्त्री नगर के अंबेडकर नगर में रहने वाली महिला नैना देवी ( 35 ) 15 मिनट तक लटके रहने के बाद 70 फिट ऊंची पानी की टंकी से कूद कर मर गई । पुलिस वाले उसकी जान बचाने के बजाय वीडियो बनाने में लग रहे तभी महिला का हाथ छूट गया और वह नीचे आ गिरी जहां से अस्पताल ले जाने के बाद का उसे मृत घोषित कर दिया गया। यह घटना शास्त्री नगर इलाके के ऊंचा पार्क की है। यहां के अंबेडकर नगर में रहने वाली महिला नैना देवी ( 35 ) के पति शुभम की 2 महीने पहले बीमारी से मौत हो गई थी। पति की मौत के बाद से नैना टेंशन में रहती थी। महिला अपने सास-ससुर और परिवार के साथ रहती थी। उसकी 5 साल की एक बेटी है। पति की मौत के बाद से नैना अक्सर जान देने की बात कहती थी। मिली जानकारी के मुताबिक आज शुक्रवार सुबह वह शास्त्री नगर के ऊंचा पार्क पहुंची। वहां बनी पानी की टंकी पर चढ़ गई। महिला को ऊपर चढ़ा देख मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। सभी लोग महिला को रोकते रहे। लेकिन उसने किसी की बात नहीं मानी। पुलिस ने बताया कि लास को पोस्टमार्टम के लिए भेज कर अगली कार्रवाई की जा रही है।

# झारखंड के कोल्हान में चार दिनों में तीन हाथियों की मौत

## जब आईईडी ब्लास्ट में हाथी मरें, अफीम खेती जंगल में हो ऐसे फिर दोषी कौन ?

**परिवहन विशेष , राजधानी**

**दिल्ली**, झारखंड के कोल्हान प्रमंडल में बीते चार दिनों में तीन हाथियों की मौत यह घटना सबको चकित एवं मर्माहत कर दिया है । पश्चिमी सिंहभूम जिले के सारंडा जंगल में गुरुवार को दो हाथियों की मौत हुई, जबकि इससे पहले एक और हाथी ने दम तोड़ दिया था। समुचे कोल्हान में वन विभाग में कार्यरत अधिकारियों की पदस्थापना एवं आफिस संचालन जिम्मेदारी जिनको दी जाती है उस पर केन्द्रीय एजेन्सीज को ध्यान देने की जरूरत है जब हाथी कभी आईईडी तो कभी संदेहास्पद ढंग से मर रहे हो फिर उसी जंगल में सैकड़ों - सैकड़ों एकड़ अवैध अफीम फसल फल फूल रहा हो, अफीम अन्तर्राष्ट्रीय बाजार में जाता हो तो दोषी कौन ?

पश्चिमी सिंहभूम के सारंडा जंगल में नक्सलियों द्वारा बिछाए गए आईईडी विस्फोट में घायल एक मादा हाथी ने गुरुवार को दम तोड़ दिया ।यह हाथी लगभग 14 वर्ष उम्र की थी और पिछले 10-15 दिनों से घायल अवस्था में भटक रही थी। पशु चिकित्सक डॉ. संजय घोलटकर के अनुसार, उसके पिछले पैर में गंभीर चोट थी, जिससे अत्यधिक रक्तस्राव हुआ।

इस घटना से चार दिन पहले इसी क्षेत्र में एक नन्हे हाथी की मौत भी आइईडी विस्फोट के कारण हुई थी, जिससे कुल मिलाकर तीन हाथियों की मौत हुई है।

मृत मादा हाथी को जराइकेला वन विभाग कार्यालय लाया गया है, जहां शुक्रवार को उसका पोस्टमार्टम किया गया ।इसी दिन, चाईबासा के टोंटो प्रखंड मे 45 वर्ष के करीब एक दंतैल हाथी का शव मिला है। बताया जा रहा है कि हाथियों का एक झुंड रात में उत्पात मचाने के बाद सुबह इस मृत थी

प्रारंभिक जांच में हाथी के शरीर पर किसी बाहरी चोट के निशान नहीं मिले हैं। मौत के सही कारणों का पता पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही चलेगा ।इन घटनाओं से पहले, सरायकेला खरसावां जिले नीमडीह में भी एक हाथी की मौत हुई थी, जिसने कोल्हान क्षेत्र में हाथियों की सुरक्षा पर चिंता बढ़ा दी है।

इतना कुछ हो जाने के बाद विभाग की निष्क्रियता ही प्रथम दृष्टया में सामने आती है। तीनों सिंहभूम में हाथियों के जीवन का जिम्मा भगवान भरोसे चल रहा है । अगर जंगल में सबकुछ मंगल है तो सौकडों एकड़ जंगली एरिया में अफीम की अवैध खेती कौन कोन करवा रहा है जो समझने वाली बात है ।जंगल के अधिकारियों की भूमिका क्या है पश्चिमी सिंहभूम एवं सरायकेला जिले में । वैसे वे कौन शक्स है जो चाईबासा एवं सरायकेला जिले में महत्वपूर्ण पद पर आसीन हैं । उसकी तनख्वाह क्या है और संपत्ति कितनी है कि ? यह जांच का विषय है ।

विभाग में किन किन अधिकारी बार बार निकट के जिलों में पदस्थापना लेते हैं । मंत्रालय व विभाग का भरोसा इन इलाके में पदस्थापित किन कर्मचारियों एवं संदिग्ध चरित्र के लोगों के साथ है यह जांच का विषय है । कितने अधिकारी रिटायरमेंट के बाद भी इन इलाकों में अधिक से अधिक पदों पर पदस्थापित किये जाते यह देश के जांच व सुरक्षा एजेंसियों के लिए भी महत्वपूर्ण जिम्मेदारी बनता है ।जब उक्त इलाके से सटे ओडिशा के सुन्दरगढ़ जिला केवंलग थाने इलाके से विस्फोटक वाहन का अपहरण हो और झारखंड के इसी इलाके में बरामद किया जाता है । जहां हाथियों को आईईडी ब्लास्ट का शिकार बनना पड़े ।फिर सरायकेला खरसावां जिले के ईचागढ़ सब-डिवीजन में हाथी मेरे और जंगल में खेती की जाने वाली अवैध अफीम का डोडा लगाकर बरामद किया जाता हो तो सरायकेला खरसावां कार्यालय को वास्तव में कौन चलाता है !!

## व्यंग्य : "ग्लोबल ज्ञान का देसी ठेकेदार"

**मनोज ज्ञानी**

हम भारतीयों में एक खास किस्म की अंतरराष्ट्रीय आत्मा पायी जाती है। हम अमेरिका की स्वास्थ्य नीति, फ्रांस के किसान आंदोलन, इजराइल-गाजा संघर्ष, यूक्रेन-रूस युद्ध, और यहां तक कि अफ्रीका के जंगलों में मर रहे गैंडे तक पर इतनी गहराई से चर्चा कर लेते हैं कि CNN और BBC वाले भी जल-भुन जाते होंगे। असल बात ये है कि इन मुद्दों पर असली ज्ञान तो हम जैसे ग्लोबल ज्ञानी ही देते हैं वरना सीएनएन और बीबीसी की क्या बिसात जो कोई जानकारी पता लगा लें। हमारे इस अद्भुत देश में हर गली, हर नुक्कड़, हर चाय की दुकान पर कम से कम दो "विदेश नीति विशेषज्ञ" जरूर मिल जाते हैं। इनके ज्ञान की सीमा इतनी व्यापक होती है कि संयुक्त राष्ट्र (UN) के स्थायी सदस्य भी शर्मा जाएं। यह ज्ञान आमतौर पर 'टी स्टॉल थिंक टैंक' से निकलता है, जहां एक कप चाय और परचून की दुकान वाला रेडियो मिलकर पूरी अंतरराष्ट्रीय राजनीति की बुनियाद रख देते हैं।

इन्हें अमेरिका के इलेक्शन में धांधली की खबर होती है, ब्राज़ील के जंगलों में लगी आग की चिंता होती है, चीन की GDP की चाल पता होती है, और अफगानिस्तान में महिलाओं की हालत पर गहरा दुख भी।

हमारे देश में रहकर, विदेश के हर मुद्दे, हर समस्या पर ज्ञान देने वाले ग्लोबल ज्ञानी, सभी चौक-चौराहों पर पाए जाते हैं। सोशल मीडिया का युद्धक्षेत्र हो या, ऑफिस का कार्यक्षेत्र, हर जगह कुछ ग्लोबल ज्ञानी विराजमान रहते हैं। वे बताते हैं कि जर्मनी में शिक्षा मुफ्त है, नॉर्वे में जेलें होटल जैसी होती हैं, जापान में ट्रेनें सेकंड भर भी लेट नहीं होतीं, और स्विट्ज़रलैंड में बच्चे टैक्स की परिभाषा लेकर पैदा होते हैं। चाइना टेक्नॉलजी में अमेरिका से आगे है। ईरान- इज़रायल युद्ध में अब ईरान का नामोनिशान मिट जाएगा। यूक्रेन से रूस क्यों नहीं जीत या रहा है?

ऐसे ही एक ग्लोबल ज्ञानी हमारे पड़ोस में भी पाए जाते हैं। गोवर्धन पंडित। एकदम गोवर्धन पहाड़ जैसे ज्ञान के शिखर पर पहुंचे हुए। एकाएक रास्ते में टकरा गए। मैंने पूँछा, अरे पंडिज्जी कहाँ भागे जा रहे? वो बोले- क्या बताऊँ भाई, बच्चे के एडमिशन के लिए स्कूल-स्कूल चक्कर लगा रहा हूँ। सब लाखों की फीस मांग रहे। मैंने कहा- हाँ, महंगाई बहुत बढ़ गई है। वो तुरंत बोले- महंगाई- वहँगाई कुछ नहीं। सब लूट है। आपको पता है, भूटान में पूरी शिक्षा फ्री है। जिसको जितना भी पढ़ना हो, सरकार पूरा खर्च उठाती है।

मैंने पूँछा- आप तो धनी आदमी हैं। आपको क्या परेशानी, लाख दो लाख देने में ? वो बोले- अभी पिछले महीने पिताजी बीमार हुए थे, उनके इलाज में प्राइवेट हास्पिटल ने 3-4 लाख रुपये चूस लिए। बहुत महंगा है प्राइवेट इलाज कराना ।

मैंने सहमति में सिर हिलाते हुए कहा- हाँ वो तो है। तभी वो ज्ञान देने वाली मुद्रा में बोले- आपको पता है? भूटान में इलाज भी बिल्कुल मुफ्त है। कोई प्राइवेट मेडिकल स्टोर तक नहीं होता। सबको सिर्फ सरकारी हास्पिटल में इलाज मिलता है।

मैनें पूँछा- पंडिज्जी! जब आपको इतना पता है तो अपने देश में मुफ्त शिक्षा और मुफ्त स्वास्थ्य की मांग सरकार से क्यों ना की जाए? इसके लिए क्यों ना आंदोलन किया जाए?

वो तुरंत बात काटते हुए बोले- जानी भाई, अब आप पोलिटिकल बात कर रहे हो। हर जगह राजनीति नहीं करनी चाहिए।

मैंने पूँछा- इसमें राजनीति क्या है? मैंने आपके शहर के एम.एल.ए के बारे में थोड़े पूँछा है? वो बड़े तिरस्कार से बोले- अरे, ये सब राजनीति मुझे पसंद नहीं... मैं तो ग्लोबल सोच रखता हूं!

मैंने पूँछा- अच्छा, आपको पता है आज अपने मोहल्ले में पानी क्यों नहीं आया?" उनका जवाब मिला — "वो सब साजिश है... असल बात ये है कि अमरीका में पानी को लेकर तीसरा वर्ल्ड वॉर होने वाला है।"

मैंने बात बदलने की नीयत से कहा- वैसे इतनी महंगी पढ़ाई करने के बाद भी नौकरी की कोई गारंटी नहीं है।

बेरोजगारी बहुत बढ़ गई है। उन्होंने तुरंत ठोका- अमेरिका में तो बेरोज़गारी का रेट 3.१% हो गया है भाई, बड़ा खतरा है दुनिया को! और पता है? चीन जो अफ्रीका में इन्वेस्ट कर रहा है न, वो असल में कूटनीतिक जाल है!

# दिल्ली के आजाद मार्केट में 3 मंजिला बिल्डिंग ढही, एक व्यक्ति की मौत, मेट्रो साइट के पास हादसा

परिवहन विशेष न्यूज

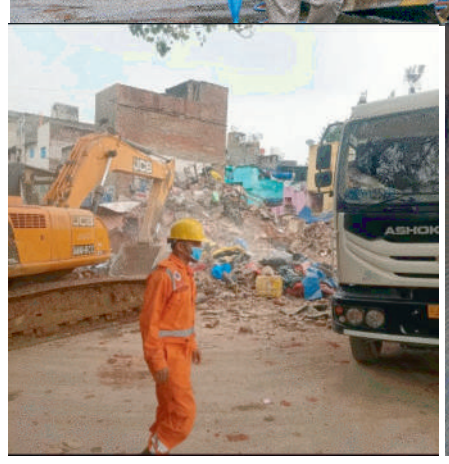

**नई दिल्ली।** दिल्ली के आजाद मार्केट स्थित पुल मिठाई के पास एक तीन मंजिला इमारत अचानक ढह गई, जिससे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। हादसे में एक व्यक्ति की मौत हो गई, जिसकी पहचान मनोज शर्मा के रूप में हुई है। वह उत्तर प्रदेश का निवासी था और मौके पर मौजूद एक दुकान में कर्मचारी के रूप में काम करता था।

**दुकानों और ट्रक को भी नुकसान**

गिरी हुई इमारत के ग्राउंड फ्लोर पर बैग और तिरपाल की दुकानें थीं, जबकि पहली मंजिल को गोदाम के तौर पर इस्तेमाल किया जा रहा था। वहीं, एक ट्रक जो दुकान के बाहर खड़ा था, मलबे में दबकर बुरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया। रात 1:55 बजे पुलिस कंट्रोल रूम को टोकरिवालान, पुल मिठाई, बाड़ा हिंदू राव इलाके में इमारत ढहने की सूचना मिली। इसके बाद तुरंत पुलिस, दमकल विभाग, एनडीआरएफ, एंबुलेंस और डीडीएमए की टीमें मौके पर पहुंचीं। दमकलकर्मियों ने मलबे से 46 वर्षीय मनोज शर्मा को बाहर निकाला और अस्पताल पहुंचाया, जहां डॉक्टरों ने उसे मृत घोषित कर दिया।

**कई सालों से कर रहा था काम**

पुलिस के अनुसार, मनोज शर्मा दुकान संख्या 1 में काम करता था, जो गुलशन महाजन नामक व्यक्ति की थी। वह पिछले कई सालों से उनके यहां नौकरी कर रहा था। हादसे के समय मनोज दुकान के अंदर ही मौजूद था। कोई और व्यक्ति घायल नहीं हुआ है।

फिलहाल पुलिस ने घटना को लेकर धारा 106(1)/290 बीएनएस के तहत मामला दर्ज कर लिया है और आगे की जांच जारी है। मौके पर मौजूद टीमें राहत-बचाव कार्यों में जुटी हुई हैं।

**मेट्रो निर्माण की जांच**

इस इमारत के पास ही दिल्ली मेट्रो का टनलिंग कार्य चल रहा था और प्रशासन ने पहले से ही इस क्षेत्र की कुछ इमारतों को असुरक्षित घोषित कर दिया था। रिपोर्ट्स के मुताबिक, 12 जून को कई इमारतों को खाली भी कराया गया था।

मृतक के परिजनों को 5 लाख रुपये मुआवजा देने की घोषणा की गई है। साथ ही, DMRC ने घटना की जांच कराने का आश्वासन दिया है ताकि दुर्घटना की वास्तविक वजह सामने आ सके।

# दिल्ली में बीजेपी को लाकर पछता रहे दिल्लीवाले- सौरभ भारद्वाज

मुख्य संवाददाता

**नईदिल्ली।** दिल्ली की जनता ने बड़ी उम्मीदों के साथ बीजेपी को सत्ता सौंपी थी, लेकिन पांच महीने में ही उसे अपने फैसले पर पछतावा हो रहा है। कुछ देर की बारिश में सड़कों से लेकर गलियों तक भारी जल भराव, साफ पानी की किल्लत और बिजली कटौती ने दिल्लीवालों को सोचने के लिए मजबूर कर दिया है कि उनका फैसला गलत था। अब तो सोसायटी के वाट्सएप ग्रुप्स और ड्राइंग रूम तक में बीजेपी सरकार की विफलता की चर्चा हो रही है। शुक्रवार को आम आदमी पार्टी के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने दिल्ली से लेकर गुरुग्राम तक हुए भारी जल भराव को लेकर यह बातें कही। उन्होंने कहा कि लोगों को उम्मीद थी कि 27 साल बाद मौका दे रहे हैं तो बीजेपी अच्छा काम करेगी, लेकिन वह पूरी तरह से नकारा निकली।

"आप" के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने सड़कों पर जलभराव के मुद्दे पर शुक्रवार को कहा कि आज दिल्ली के व्हाट्सएप ग्रुप्स, ड्राइंग रूम्स और साउथ दिल्ली के क्लब में मध्यम वर्ग के लोगों के बीच यही चर्चा चल रही है कि वह मान रहे हैं कि भाजपा को दिल्ली में लाना एक बड़ी गलती थी। लोग भूल गए कि वही भाजपा, जो पिछले 12-14 साल से हरियाणा में सरकार चला रही है और हर बार गुड़गांव म्युनिसिपल कॉर्पोरेशन में जीतती है, उसके बावजूद वहां करोड़ों के फ्लैट में रहने वालों की करोड़ों रुपये की गाड़ियां पानी में डूब रही हैं। यह हर साल होता है।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि यह सब जानते हुए भी दिल्ली के लोगों ने यह सोचकर भाजपा को मौका दिया कि दिल्ली की लीडरशिप कुछ कर देगी। लेकिन पहले ही मॉनसून में भाजपा के चारों इंजन की पोल खुल गई। अगर आज "आप" के पास एमसीडी होती, तो मुख्यमंत्री, मंत्री, एलजी और ये तमाम भाजपा के लोग सारा दोष "आप" पर डाल देते कि वह गड़बड़ कर रही है। लेकिन आज दिल्ली वालों को दिख रहा है कि चाहे एनडीएमसी, डीडीए, एमसीडी या पीडब्ल्यूडी की रोड हो, चारों इंजन इन्हीं के पास हैं। फिर भी हर रोड पर पानी भरा हुआ है, जो दिल्ली के लिए बहुत बड़ा दुर्भाग्य है।

# नुक्कड़ नाटक के माध्यम से प्लास्टिक प्रदूषण को लेकर जन जागरूकता अभियान

**नई दिल्ली।** 10 जुलाई 2025 को ओएनजीसी विदेश लिमिटेड (वसंत कुंज) के खूबसूरत कैंपस में राइज फाउंडेशन एनजीओ द्वारा आयोजित कार्यक्रम में ₹ज्ञान कला मंच₹ के कलाकारों नीता गुप्ता, बाबू भाई सिंधी, विवेक कुमार यादव, भावना सक्सेना, निशा गौतम, राहुल मसारी और आराध्या गड़िया को₹स्वच्छता पखवाड़ा₹ के अन्तर्गत नुक्कड़ नाटक के माध्यम से लोगों में ₹प्लास्टिक प्रदूषण₹ (प्लास्टिक पॉल्यूशन) के प्रति जागरूकता फैलाने का अवसर मिला। प्लास्टिक वेस्टऔर पॉलीथिन न सिर्फ इंसानों बल्कि जानवरों और समस्त पर्यावरण के लिए सिरदर्द बनता जा रहा है ।नाटक के माध्यम से लोगों को सिंगल यूज्ड प्लास्टिक के उपयोग का बहिष्कार करने का संदेश दिया गया। ओएनजीसी विदेश के रूपेश भास्कर (G M -H R), श्वेता अष्टेकर (मैनेजर HR), धर्मेंद्र कुमार (असिस्टेंट HR), वृंदा माले GM(E), R C Verma GGM(HR), ₹Rise Foundation₹ -NGO के Founder member मधुकर वार्ष्णेय और अनुराग गुप्ता (Founder of ₹Gyan Kala Manch₹ Theatre group) ने कार्यक्रम में स्वयं उपस्थित रहकर अन्य दर्शकों के साथ नुक्कड़ नाटक का आनंद लिया और कलाकारों को नाटक के उपरांत प्रमाण पत्र भी प्रदान किए गए।

# इस वर्ष रेखा गुप्ता सरकार ने नालों एवं सीवर की सफाई करवाई है और उसी कारण इस वर्ष जलभराव तेज़ी से साफ हो जाता है : वीरेन्द्र सचदेवा

मुख्य संवाददाता/ सुषमा रानी

**नई दिल्ली** : दिल्ली भाजपा के अध्यक्ष वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की दिल्ली में 2008 से 2024 के बीच बड़े नालों, सीवर लाइन एवं कॉलोनियों की आंतरिक ड्रेनेज की सफाई पर बिल्कुल ध्यान नही दिया गया।

2008 से 2010 के बीच कामनवेल्थ खेलों के समय से दिल्ली जलबोर्ड का काम ठप्प होता गया और 2013 से 2024 तक अरविंद केजरीवाल के शासन में तो दिल्ली जलबोर्ड हो या लोकनिर्माण विभाग दोनों की लापरवाही एवं भ्रष्टाचार के चलते 2010 से 2024 तक हर मानसून में हल्की से बरसात में दिल्ली जलमग्न हो जाती थी।

केजरीवाल सरकार के भ्रष्टाचार के चलते वर्ष 2024 में तो दिल्ली में नालों - सीवर की सफाई हुई ही नही और पूरा मानसून अनेक सड़कों एवं कॉलोनियों में दो से तीन दिन पानी खड़ा रहता था।

केजरीवाल सरकार के भ्रष्टाचार के चलते अंधिकृत बस्तियों की तो छोडिए दिल्ली की अच्छी प्लान कॉलोनियों में जलभराव के चलते 2024 में लगभग 50 से अधिक जानलेवा हादसे हुए।

वीरेन्द्र सचदेवा ने कहा है की इसके ठीक विपरीत इस वर्ष मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सरकार ने नालों एवं सीवर की सफाई करवाई है और उसी कारण इस वर्ष जलभराव तेज़ी से साफ हो जाता है और दिल्ली के मिंटो ब्रिज एवं आई.टी.ओ. आदि क्षेत्रों की स्थिती गत वर्ष से बहुत बेहतर है।

दिल्ली भाजपा अध्यक्ष ने कहा मुख्यमंत्री रेखा गुप्ता सरकार ने जलभराव से लड़ने का पूरा प्लान बना रखा है, इस वर्ष हमे गत 15 साल की दिल्ली जलबोर्ड की लूट का थोड़ा परिणाम भोगना पड़ है पर अगले वर्ष मानसून तक स्थिती बहुत बेहतर होगी।

# नेशनल मेडिकल फोरम और दिल्ली के सभी अस्पतालों की मांग जबरन थोपी जा रही एसटीपी प्रणाली को समाप्त किया जाए

मुख्य संवाददाता

**नई दिल्ली** नेशनल मेडिकल फोरम और दिल्ली हॉस्पिटल फोरम के अध्यक्ष, संजीवन अस्पताल के चेयरमैन डॉ. प्रेम अग्रवाल ने राजधानी के अस्पतालों पर जबरन थोपे जा रहे अव्यवस्थित सीवेज ट्रीटमेंट प्लांट एसटीपी सिस्टम को लागू करने के सरकारी दबाव पर कड़ा विरोध प्रकट किया है।

डॉक्टर अग्रवाल ने कहा यह प्रणाली पूरी तरह से गैर-ज़रूरी है, अगर इस प्रणाली को लागू किया जाता है तो अस्पताल प्रबंधन के अलावा डॉक्टरों और स्टाफ कर्मियों की सुरक्षा को भी गंभीर खतरा है।

उन्होंने बताया सेंट्रल पॉल्यूशन कंट्रोल बोर्ड द्वारा 2016 में लागू की गाइडलाइंस के अनुसार दिल्ली के निजी अस्पतालों में लागू केन्द्रीय एसटीपी सिस्टम सुरक्षित और पर्याप्त है, इससे ट्रीटमेंट के बाद अस्पतालों का जल रिसायकल होता है और यह सिस्टम पूरी तरह से सभी सुरक्षा नियमो पर भी खरा उतर सका है लेकिन ना जाने क्यों दिल्ली के सभी अस्पतालों को अपने-अपने यहां एसटीपी लगाने को मजबूर किया जा रहा है। यह प्रक्रिया कही भी सफल नहीं रही ,बल्कि इससे अस्पताल प्रशासन पर अतिरिक्त वित्तीय और तकनीकी बोझ पड़ने के साथ साथ आपातकालीन सेवाओं की गुणवत्ता भी प्रभावित हो सकती है।

फोरम के सभी सदस्यों के साथ अध्यक्ष डॉ. प्रेम अग्रवाल ने इस संबंध में उपराज्यपाल विनय सक्सेना महोदय से शीघ्र हस्तक्षेप करने के की मांग करते हुए कहा है प्रशासन उन अस्पतालों को एसटीपी लगवाने को बाध्य न करे जो पहले से ही केन्द्रीय सीवेज प्रणाली से जुड़े हुए है दिल्ली की सीवेज प्रणाली में सुधार करके अधिक मजबूत किया जाए जिससे दिल्ली के अस्पतालो पर बेवजह वित्तीय और तकनीकी दबाव न पड़े।

# अवैध झुग्गियों पर बुलडोजर चलाते समय पुलिसकर्मियों द्वारा मौके पर ही पत्रकारों के साथ मारपीट की गई

परिवहन विशेष न्यूज

**नई दिल्ली।** दिल्ली के विकासपुरी थाना अंतर्गत अवैध झुग्गियों पर बुलडोजर चलाने के दौरान इस खबर को कुछ पत्रकार साथी आज कर कर रहे थे तभी विकासपुरी थाने की कुछ पुलिसकर्मियों द्वारा मौके पर ही पत्रकारों के साथ मारपीट की गई और कैमरा मोबाइल फोन सभी कुछ छीन लिया गया और अपने हाथों से मोबाइल में रिकॉर्ड हुई मारपीट का वीडियो डिलीट कर दिया गया और जोर जबरदस्ती से पत्रकार उदय हिंदुस्तानी और पंजाब केसरी का पत्रकार संदेश को थाने लेकर चली गई इसके बाद वहां पर भी उनको मेंटली टॉर्चर किया गया और बेरहमी से मारा पीटा गया क्या अब कोई पत्रकार जनता की आवाज नहीं बन सकता ?क्या जमीनी सच्चाई दिखाना इतना गलत है की पुलिस आप पत्रकारों से ही गुंडागर्दी पर उतर आई है।

# अभिनेत्री कशिका कपूर और अभिनेत्री उल्का गुप्ता ने निकाला इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट के 50 लाख रुपये के पुरस्कारों का ड्रॉ

मुख्य संवाददाता

**दिल्ली।** ग्राहकों के साथ अटूट रिश्ते और संतुष्टि की विरासत के लिए जाने जाने वाले देश के अग्रणी इलेक्ट्रॉनिक्स रिटेलर इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट ने 9 जुलाई को 50 लाख रुपये के नकद पुरस्कार बांटे। इसके लिए राजौरी गार्डन स्थित इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट के विशाल स्टोर पर पुरस्कार के समर सीज़न स्पेशल ड्रॉ का आयोजन किया गया। इस गर्मी के मौसम में समर ड्रॉ ऑफर के तहत 50 लाख रुपये के पुरस्कार के लिए अभिनेत्री कशिका कपूर और अभिनेत्री उल्का गुप्ता ने लकी विजेताओं के कूपन निकाले। दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में ये अपनी तरह का अनूठा ऑफर है।

इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट की 100 फीसद ग्राहक संतुष्टि प्राप्त करने की गहरी रुचि और प्रयास के तहत इस तरह के आयोजन ने दिल्ली-एनसीआर के लोगों का दिल जीत लिया है।

50 लाख रुपये के नकद पुरस्कार के तहत 5 विजेताओं को 10-10 लाख रुपये नकद दिए जाएंगे। इस लक्की ड्रा में कूपन संख्या – 25097172, 25256966, 25217496, 25005373, और 25244259 ने 10-10 लाख रुपये जीते।

इस अवसर पर अभिनेत्री कशिका कपूर और उल्का गुप्ता ने 50 लाख रुपये के नकद पुरस्कार विजेताओं को शुभकामनाएं दीं और ग्राहकों को इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट में खरीदारी करते रहने और रोमांचक पुरस्कार जीतते रहने के लिए प्रोत्साहित किया।

उल्लेखनीय है कि भारत के अग्रणी इलेक्ट्रॉनिक्स रिटेलर - बजाज इलेक्ट्रॉनिक्स एंड इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट के तेलंगाना, आंध्र प्रदेश और दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में 200 से अधिक मेगा स्टोर हैं।

इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट स्टोर एलईडी टीवी, घरेलू और रसोई के उपकरणों, मोबाइल, लैपटॉप, गैजेट्स, एक्सेसरीज़ आदि की विस्तृत श्रृंखला के साथ आसान ईएमआई विकल्पों के साथ बेस्ट प्राइस पर खरीद का अद्भुत अनुभव देता है।

इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट के सीईओ करण बजाज ने कहा, ₹इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट ने दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में अपने लॉन्च के बहुत ही कम समय में यह सफलता हासिल की है।₹ उन्होंने आगे कहा, ₹बम्पर ड्रॉ एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा हम, इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट में अपने ग्राहकों के प्रति आभार व्यक्त करने का प्रयास करते हैं। हम कामना करते हैं कि ग्राहकों के साथ हमारा रिश्ता और भी गहरा हो।₹ हम 50 लाख रुपये के नकद पुरस्कार विजेताओं को हार्दिक बधाई देते हैं।

ज्ञातव्य है कि इलेक्ट्रॉनिक्स मार्ट में इलेक्ट्रॉनिक्स, घरेलू उपकरण, गैजेट्स और भी बहुत कुछ खरीदने के विकल्प हैं। असाधारण ऑफर, मनमोहक डील्स, आसान ईएमआई विकल्प इलेक्ट्रॉनिक मार्ट में ग्राहकों के अनुभव को और बेहतर बनाते हैं।

# भारतीय शिपिंग सेक्टर को मिला अब तक का सबसे बड़ा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश, साइप्रस की दो प्रमुख कंपनियों का 10,000 करोड़ का निवेश प्रस्ताव

मुख्य संवाददाता

**नई दिल्ली।** साइप्रस स्थित कंपनियाँ इंटरओरिएंट नेविगेशन कंपनी लिमिटेड और डैनशिप एंड पार्टनर्स लिमिटेड ने भारतीय शिपिंग क्षेत्र में 10,000 करोड़ रुपये के प्रत्यक्ष विदेशी निवेश की घोषणा की है। यह निवेश भारतीय शिपिंग सेक्टर में अब तक का सबसे बड़ा प्रत्यक्ष विदेशी निवेश माना जा रहा है।

डैनशिप एंड पार्टनर्स लिमिटेड का संचालन कैप्टन डैनियल गौतम चोपड़ा (भारतीय), अक्षय गोलेचा और जितेन नेगी द्वारा किया जा रहा है। इंटरओरिएंट नेविगेशन कंपनी लिमिटेड का नेतृत्व थेमिस पापाडोपोलस (साइप्रस नागरिक) कर रहे हैं।

इंटरओरिएंट नेविगेशन कंपनी की ओर से जारी आधिकारिक बयान में कहा गया कि यह निवेश वर्ष 2005 के बाद से सबसे बड़ा है, जब भारत सरकार ने शिपिंग सेक्टर को 100% एफडीआई के लिए खोल दिया था। यह निवेश प्रधानमंत्री के 'आत्मनिर्भर भारत' के विज़न के अनुरूप है और 'मैरीटाइम इंडिया विजन 2030' तथा 'सागरमाला' जैसी प्रमुख राष्ट्रीय पहलों को मजबूती प्रदान करेगा।

# पीएम मोदी, नीतीश कुमार समेत सभी दलों के सांसदों, विधायकों व मुख्यमंत्रियों को एक उम्र के बाद दूसरों को मौका देना चाहिए

मुख्य संवाददाता

**नईदिल्ली,** आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत द्वारा नेताओं को 75 साल की उम्र होने पर पद छोड़ने की सलाह देने के बाद आम आदमी पार्टी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी को उनके ही बनाए नियम की याद दिला दी है। ''आप'' के दिल्ली प्रदेश अध्यक्ष सौरभ भारद्वाज ने कहा कि अब तो आरएसएस भी इशारा कर रहा है कि मोदी जी 75 साल की उम्र पूरी होने के बाद पीएम का पद छोड़ दें। यह बात पीएम मोदी और नीतीश कुमार के साथ सभी दलों के सांसदों, विधायकों व मुख्यमंत्रियों पर भी लागू होती है कि वह एक उम्र के बाद दूसरों को मौका दें। देशवासियों को उम्मीद है कि मोदी जी अपने बनाए नियम के तहत 75 साल पूरे होते ही किसी योग्य व्यक्ति को देश का नेतृत्व सौंप देंगे।

उन्होंने आरएसएस प्रमुख मोहन भागवत के नेताओं को 75 साल की उम्र में रिटायर हो जाना चाहिए के बयान पर कहा कि आरएसएस भाजपा की मातृ संस्था है। पूरी दुनिया में यह माना जाता है कि किसी व्यक्ति की कार्य क्षमता और दक्षता एक उम्र तक होती है। सरकारी कर्मचारी 60 साल में रिटायर हो जाते हैं। हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट के जज 65 साल की उम्र में रिटायर होते हैं। भारत के पूर्व मुख्य न्यायाधीश चंद्रचूड़ जब रिटायर हुए, वे स्वस्थ थे। अभी वह यूनिवर्सिटी में पढ़ा रहे हैं। हालांकि, मुख्य काम के लिए कहा जाता है कि अब दूसरों को मौका दीजिए। यही प्रकृति का नियम है।

सौरभ भारद्वाज ने कहा कि यह बात सिर्फ प्रधानमंत्री मोदी के लिए नहीं, बल्कि नीतीश कुमार और सभी पार्टियों के सांसदों, विधायकों, मुख्यमंत्रियों के लिए भी लागू है। लेकिन प्रधानमंत्री का पद देश का शीर्ष पद है। इसकी परिपाटी का अनुसरण चाहे न चाहे पूरे देश के राजनीतिक नेतृत्व में होता है। इसलिए आरएसएस अपनी तरफ से इशारा कर सकता है, लेकिन डिक्टेट नहीं दे सकता। इस इशारे को मानना या न मानना भाजपा के हाथ में है। मुझे उम्मीद है कि भाजपा इस पर ध्यान देगी। प्रधानमंत्री ने खुद नियम बनाया था, उसका पालन कर वे किसी योग्य व्यक्ति को पार्टी और देश का नेतृत्व सौंपेंगे।

# इस वर्ष का 'लोकजतन सम्मान' शहीद पत्रकार मुकेश चंद्राकर को, 24 जुलाई को रायपुर में होगा आजीयोजन, वरिष्ठ पत्रकार उर्मिलेश देंगे मुख्य व्याख्यान

बादल सरोज

**रायपुर।** इस वर्ष का 'लोकजतन सम्मान' बस्तर के शहीद पत्रकार मुकेश चंद्राकर को उनकी निर्भीक, मैदानी तथा कॉर्पोरेट विरोधी जुझारू पत्रकारिता के लिए दिया जायेगा। इसकी घोषणा लोकजतन के संपादक बादल सरोज ने कल यहां की। इस सम्मान समारोह का आयोजन 24 जुलाई 2025 को रायपुर प्रेस क्लब में अपराह्न 3 बजे से किया जाएगा।

उल्लेखनीय है कि इस नौजवान पत्रकार की इस वर्ष 1 जनवरी को हत्या कर उसकी लाश को सेप्टिक टैंक में दफना दिया गया था। 'लोकजतन' ने इस सम्मान की घोषणा करते हुए आमतौर से देश और दुनिया तथा खासतौर से छत्तीसगढ़ में जन पक्षधर पत्रकारिता के जोखिम और पत्रकारों पर बढ़ रहे हमलों में सत्ता और कॉर्पोरेट पूंजी की मिलीभगत को रेखांकित किया है और कहा है कि उस समय जब बस्तर में माओवाद का हौवा दिखाकर बस्तर में लोकतंत्र स्थगित और संविधान के राज को खत्म कर दिया गया है, मुकेश की पत्रकारिता ने इस दुष्चक्र को तोड़ने और स्थानीय स्तर पर पनपे उन कॉरपोरेटों की, जिनके सत्ता वर्गों के साथ खुले संबंध हैं, की बर्बरता को उजागर करने का काम किया है। मुकेश को अपनी साहसिक पत्रकारिता की कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी है। वे पत्रकारिता के मोर्चे के शहीद हैं। 'लोकजतन' ने आशा व्यक्त की है कि दिवंगत मुकेश को दिया जा रहा यह सम्मान जन पक्षधर पत्रकारिता को आगे बढ़ाने का काम करेगी।

लोकजतन के संस्थापक-सम्पादक शैलेन्द्र शैली (24 जुलाई 1957 - 07 अगस्त 2001) के जन्मदिन पर यह सम्मान दिया जाता है तथा ऐसे पत्रकारों को सम्मानित किया जाता है, जो भारतीय पत्रकारिता के आज के सबसे कठिन समय में भी सच बोलने और दिखाने का दुःसाहस कर रहे हैं। अभी तक डॉ. राम विद्रोही (ग्वालियर), कमल शुक्ला (बस्तर-रायपुर), लज्जाशंकर हरदेनिया (भोपाल), अनुराग द्वारी (भोपाल), राकेश अचल (ग्वालियर), पलाश सुरजन (भोपाल) आदि प्रमुख पत्रकारों को इस सम्मान से अभिनंदित किया जा चुका है।

इसी दिन से और इस समारोह से शैलेन्द्र शैली व्याख्यानमाला की भी शुरुआत होती है जो 7 अगस्त तक चलती है। सम्मान समारोह में इस श्रृंखला का पहला व्याख्यान ₹लोकतांत्रिक भारत में पत्रकारिता की चुनौतियांर विषय पर वरिष्ठ पत्रकार उर्मिलेश (नई दिल्ली) देंगे। इस पूरे समारोह की अध्यक्षता वरिष्ठ पत्रकार दिवाकर मुक्तिबोध करेंगे। विशिष्ट अतिथि वरिष्ठ लेखक तथा पूर्व महाधिवक्ता कनक तिवारी होंगे।

'लोकजतन' के संस्थापक-सम्पादक शैलेन्द्र शैली कवि, लेखक, पत्रकार, चित्रकार, असाधारण वक्ता, संघर्षों के नायक, संगठनकर्ता और राजनीतिक कार्यकर्ता थे। वे अपने समय के प्रखर तथा लोकप्रिय छात्र नेता थे। वे आपातकाल में उस समय मीसा की पूरी अवधि - 19 महीने - जेल में रहे थे, जब वे पूरे 18 वर्ष के भी नहीं हुए थे। उनकी बीएससी भी जेल में पूरी हुयी थी। इसके बाद भी कई जेल यात्राएं उन्हें करनी पड़ीं। वे एसएफआई की केंद्रीय समिति के सबसे युवा सदस्य तथा कामरेड सीताराम येचुरी की अध्यक्षता के समय स्टूडेंट्स फेडरेशन ऑफ़ इंडिया (एसएफआई) के राष्ट्रीय पदाधिकारी रहे थे। वे सीपीआई (एम) के सबसे युवा राज्य सचिव तथा इसकी केंद्रीय समिति के सबसे युवा सदस्य भी रहे। 'लोकजतन' के वे संस्थापक सम्पादक थे और अविभाजित मध्यप्रदेश के मजदूर, किसान आंदोलन के अग्रणी नेता रहे। उन्होंने संयुक्त मध्यप्रदेश में छत्तीसगढ़ तथा बस्तर के अनेक आंदोलनों में प्रमुख भूमिका निबाही थी।

लोकजतन पिछले 26 वर्षों से बिना किसी व्यवधान और बिना किसी सरकारी या कार्पोरेटी विज्ञापन के लगातार प्रकाशित होने वाला मध्यप्रदेश-छत्तीसगढ़ का पाक्षिक है।

# "गुरु पूर्णिमा महोत्सव" का आयोजन बड़े धूम-धाम से संपन्न हुआ

"कामां के कन्हैया" व "लाठी वाले भैया" की जय-जयकार से सारा वातावरण गुंजायमान हो उठा,

**कामां।** प्रेमावतार, युगदृष्टा, श्री हरि कृपा पीठाधीश्वर एंव विश्व प्रसिद्ध संत स्वामी श्री हरि चैतन्य पुरी जी महाराज के दो सप्ताह के प्रवास में करीब सवा लाख भक्तजन महाराज श्री के दर्शनों व आशीर्वाद लेने पहुंचे। गुरु पूर्णिमा महोत्सव बड़ी श्रद्धा व उत्साह पूर्वक बड़े धूमधाम से मनाया गया। विराट धर्म सम्मेलन में देश के प्रसिद्ध भजन गायक भी पहुंचे, टेकचंद शर्मा नानक चंद शर्मा, गोविंद सैनी, कैलाश सोनी व अन्य भजन गायकों ने ऐसा समां बांधा कि हजारों उपस्थित भक्तजन झूम झूम कर नाच रहे थे। वेणु कला केंद्र के कलाकारों ने भी सुन्दर प्रस्तुतियाँ दी।उड़ीसी नृत्य भी हुआ । हरि बोल की धुन से सारा वातावरण गूंज उठा। भंडारे में भी करीब 25000 लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया। संपूर्ण कार्यक्रम कामां में चर्चा का विषय बन गया। मौसम ने भी सुहावना बनकर खुशी का इजहार किया।

महाराज श्री के दिव्य व ओजस्वी प्रवचनों से सारा वातावरण भक्तिमय हो उठा तथा सभी भक्तजन मंत्रमुग्ध व भाव विभोर हो गए।हरि बोल की धुन में झूम उठे। सारा वातावरण" श्री गुरु महाराज"कामां के कन्हैया"व "लाठी वाले भैया" की जय जयकार से गूंज उठा। महाराज श्री के प्रवचनों को सुनने स्थानीय, क्षेत्रीय, देश-विदेश के विभिन्न भागों से हजारों की संख्या में भक्तजन पहुंचे। महाराज श्री के भजनों को सुनकर सभी भक्तजन झूम झूम कर नाच उठे व प्रेमवश अश्रु धारा बह उठी। इस अवसर पर प्रातः 8:00 बजे अखंड मानस पाठ का पारायण एवं हवन यज्ञ भी किया गया।

इस अवसर पर मेडिकल कैम्प भी लगाया गया जिसमें विश्व प्रसिद्ध डाक्टरों ने लोगों की जाँच की।

उल्लेखनीय है कि उच्च शिक्षा प्राप्त, अनेक प्रमुख भाषाओं के ज्ञाता, देश में "मेरे हरि" के नाम से विख्यात, हज़ारों मील पैदल यात्रा कर चुके सुविख्यात महाराज श्री के सम्पर्क में लाखों लोग अपने बुरे व्यसन, शराब, मांसाहार, अंधविश्वास व बुरे विचारों को त्याग चुके हैं व त्याग रहे हैं।

उन्होंने कहा कि अपने देश की अमूल्य व महान संस्कृति को समझें व अपनाएं ।पाश्चात्य सभ्यता के अंधानुकरण को त्याग कर संस्कृति के अनुसार जीवन जीएँ, यदि ना जी सकें तो कम से कम विकृति परिपूर्ण जीवन जीने की कोशिश ना करें ! महाराज श्री ने कहा कि हमें प्यारे वतन व इसकी महान व अमूल्य संस्कृति पर गर्व है व सभी भारतवासियों को होना भी चाहिए । विश्व बंधुत्व, सर्वे भवन्तु सुखिनः व वसुधैव कुटुम्बकम का भाव रखती है हमारी भारतीय संस्कृति। जिसकी आन, बान, शान को बनाए रखने के लिए असंख्य भारत माँ के सपूतों ने अपनी क़ुर्बानियाँ हमेशा से दी है ,जिसका गौरव बढ़ाने व बरकरार रखने के लिए अपना सर्वस्व अर्पण कर दिया है ।हमें उन क़ुर्बानियों को व्यर्थ नहीं जाने देना है तथा स्वयं भी आत्मनिरीक्षण करके जानना है कि अपनी भारत माँ को जगद्गुरु के पद पर प्रतिष्ठापित करने ,इसकी आज़ादी को बरकरार रखने व शांति का साम्राज्य स्थापित करने में हमारा क्या योगदान है ? अधिकारों के लिए लोग आज जागरूक हुए हैं लेकिन हमारा कर्तव्य क्या है इसे भी पहुँचाने व पालन करे ।

महाराज श्री ने कहा कि विश्व शांति के अग्रदूत हमारे देश में आज अशांति दुर्भाग्यपूर्ण व चिंता का विषय है ,समय रहते जागरूक होकर नि स्वार्थ भाव से मिल जुलकर राष्ट्र व समाजहित को सर्वोपरि रखते हुए यदि समुचित प्रयास किए जाएं तो यहाँ भी शांति होगी ही तथा एक बार फिर संपूर्ण विश्व में शांति का संदेश यही से गूंज उठेगा ।

उन्होंने कहा कि आज सारे विश्व को शान्ति की आवश्यकता है ! शांति मिलती है परंतु दुर्भाग्यवश हम उसे स्थापित नहीं कर पाते। सुख और शांति विचारों में है संतो व गुरूओं की शरण में है ,यदि इंद्रियों पर नियंत्रण न हुआ तो भी हम शांति प्राप्त नहीं कर सकते।

## शराब की दुकानें बन रही शराब ठगाई केंद्र

**बदायूं, बिनावर:** शराब की दुकानें अब शराब ठेका नहीं शराब ठगाई केंद्र बनती जा रही हैं। ओवररेट पर शराब बेचने को लेकर बिनावर थाना क्षेत्र के कस्बा बिलहैत रोड पर स्थित ठेके का एक वीडियो सोशल मीडिया पर जमकर वायरल हो रहा है। वीडियो में एक ग्राहक और सेल्समैन के बीच तीखी बहस हो रही है और सबसे चौंकाने वाली बात यह कि सेल्समैन कैमरे पर खुलेआम स्वीकार कर रहा है कि वह हर क्वार्टर पर 10 रुपये ज्यादा वसूल रहा है। मामला बिनावर थाना क्षेत्र के कस्बा बिलहैत रोड पर स्थित शराब ठेके का है। यहां शराब दुकान न केवल समय से पहले बंद की जा रही है, बल्कि अंदर से ओवररेट पर बिक्री जारी है।वायरल वीडियो में जब ग्राहक ने आपत्ति जताई तो सेल्समैन ने बेशर्मी से कहा लेना है तो लो, नहीं तो मत लो। अब जो करना है कर। जब यह सब मोबाइल कैमरे में कैद हुआ और वीडियो वायरल हुआ, तो इलाके में शराब ठेकों की लूट को लेकर चर्चा तेज हो गई। अब तक इस वीडियो को लेकर न तो पुलिस ने कोई कार्रवाई की न ही आबकारी विभाग ने कोई सख्ती दिखाई है। विभाग सिर्फ जांच करेंगे कहकर अपना पल्ला झाड़ रहा है। सवाल उठता है कि जब वीडियो में खुद कबूलनामा हो फिर भी कार्रवाई क्यों नहीं, क्या शराब माफिया और सिस्टम की सांठगांठ के आगे कानून भी बोतल में बंद हो चुका है।

# चरणाश्रम में धूमधाम से सम्पन्न हुआ गुरु पूर्णिमा महोत्सव

डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

**वृन्दावन।**परिक्रमा मार्ग/वंशीवट क्षेत्र स्थित पंचायती महानिर्वाणी अखाड़ा चरणाश्रम में श्रीगुरु पूर्णिमा महोत्सव अत्यंत श्रद्धा एवं धूमधाम के साथ संपन्न हुआ ।जिसके अंतर्गत देश के विभिन्न प्रांतों से आए सैकड़ों भक्तों-श्रद्धालुओं ने महामंडलेश्वर डॉ. सत्यानंद सरस्वती महाराज (अधिकारी गुरुजी) का वैदिक मंत्रोच्चार के मध्य पूजन-अर्चन किया ।साथ ही उनका आशीर्वाद प्राप्त किया।

चरणाश्रम के अध्यक्ष महामंडलेश्वर डॉ. सत्यानंद सरस्वती महाराज (अधिकारी गुरुजी) ने समस्त भक्तों-श्रद्धालुओं को अपने आशीर्वचन देते हुए कहा कि मनुष्य को प्रभु की प्राप्ति के लिए सदगुरुदेव भगवान का आश्रय लेना चाहिए ।सदगुरुदेव का आश्रय पाए बिना प्रभु की भक्ति और कृपा पाना संभव नहीं है। उन्होंने कहा कि जिस प्रकार नदी को पार करने के लिए नाव का सहारा होता है, उसी प्रकार भवसागर से पार जाने के लिए केवल सदगुरुदेव भगवान का ही सहारा होता है ।सदगुरु ही हमारे जीवन के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर कर हमारे हृदय में ज्ञान का प्रकाश प्रज्ज्वलित करते हैं ।इसीलिए वेद और पुराणों में भी सदगुरु की महिमा का विस्तार से बखान किया गया है।

महोत्सव में पधारे प्रख्यात साहित्यकार डॉ. गोपाल चतुर्वेदी ने कहा कि महामंडलेश्वर स्वामी डॉ. सत्यानंद सरस्वती महाराज अधिकारी गुरुजी सेवा की प्रतिमूर्ति हैं ।वे नर सेवा को ही नारायण सेवा मानते हैं ।वे निर्धन, निराश्रितों, दीन-दुखियों एवं असहायों की सेवा पूर्ण निष्ठा, निस्वार्थ भाव और समर्पण के साथ कर रहे हैं। पूज्य महाराजश्री समूचे वृन्दावन में डॉक्टर बाबा के नाम से प्रख्यात हैं। इससे पूर्व श्रीयमुना महारानी का पंचामृत से अभिषेक किया गया ।साथ ही भजनानंदी संतों व माताओं को प्रसाद वितरण किया गया।

इस अवसर पर सुरेंद्र सिंह यादव (रेवाड़ी) राकेश भार्गव, सोनू यादव, मेजर महुश महंती, डी.आई.जी. रामकृष्ण पटनायक, डॉ. स्वागतिका देहरा, मुरली अग्रवाल, दीना पण्डित, संजू अग्रवाल, सुरेश पाण्डेय (दाऊजी), रविकांत गौतम, डॉ. राधाकांत शर्मा, भगवान दास चौधरी आदि के अलावा विभिन्न क्षेत्रों के तमाम गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे ।महोत्सव का समापन साधु, ब्रजवासी, वैष्णव सेवा एवं वृहद भंडारे के साथ हुआ।

# प्रजापति ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय सेवा केंद्र में गुरू पूर्णिमा पर्व धूम धाम से मनाया गया

एक पेड़ मां के नाम अभियान के तहत हुआ फलदार वृक्षों का वितरण

(डॉ. गोपाल चतुर्वेदी)

**मथुरा।**रिफाइनरी क्षेत्र स्थित प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय सेवा केंद्र में गुरु पूर्णिमा पर्व बहुत ही हर्षोल्लास और प्रकृति संरक्षण के संकल्प के साथ संपन्न हुआ।

सेवा केंद्र प्रभारी राजयोगिनी बी.के. कृष्णा दीदी नें गुरु पूर्णिमा का आध्यात्मिक अर्थ बताते हुए कहा कि कि मनुष्य एक दूसरे के लिए शिक्षक या गुरु बन सकते हैं किंतु सृष्टि के आदि मध्य अंत का सत्य ज्ञान देकर सभी आत्माओं को गति और सद्गति देने वाले गुरुओं के भी गुरु, परम-सद्गुरु केवल एक परमपिता परमात्मा ही कहलाते है।

उन्होंने बताया कि इस जगत में केवल तीन ही अविनाशी सत्ता है और वह हैं आत्मा, परमात्मा और प्रकृति ।सृष्टि के आदि से लेकर अंत तक प्रकृति मानव की पालना करती है। अतः हम सब को भी प्रकृति का पालन और संरक्षण करना चाहिए।

इसी क्रम में उन्होंने सभी भाई बहनों को फलदार वृक्ष वितरित किए और उनकी पालना का संकल्प लिया।

आयोजन में लघु नाटिका, गीत, कविता आदि की मनमोहक प्रस्तुतियां दीं गईं।

इस अवसर पर बी.के. पूजा, बी.के. मनोहर, कमल भाई, बॉबी भाई, आलोक भाई आदि की उपस्थिति विशेष रही ।संचालन बी.के. मनोज भाई नें किया।

# शासन प्रशासन और जनप्रतिनिधियों ने बना कर रख दिया है आम जनता का मजाक

नन्द किशोर चौहान (नन्दू भइया)

उत्तर प्रदेश का बड़ा सुन्दर जनपद बदायूं और उसी जनपद की एक विधान सभा सीट बदायूं का एक कस्बा बिनावर और उसी कस्बे में स्थित एक बिजलीघर जिसके भरोसे बिनावर कस्बे सहित आसपास के लगभग 90 से 100 गांव हैं और ये कस्बे का बिजलीघर पूरे साल तो न किसी को सुनाई देता है और न ही दिखाई देता है लेकिन हर साल जैसे ही बरसात का मौसम आता है ये ध्रुवतारे की तरह दूर से दिखाई देने लगता है क्योंकि जैसे ही बरसात का मौसम आता है और जहां चार बूंदें पड़ीं और बिजलीघर में भर जाता है पानी फिर होता है भयंकर रूप से रण्डी रोना और ये कोई एक दो साल की बात नहीं बल्कि हर साल की बात है लेकिन आज तक कभी भी किसी अधिकारी या जन प्रतिनिधि ने ये नहीं सोचा कि किसी तरह से इस समस्या से छुटकारा पा लिया जाए जैसे बिजली घर के पास में जो गड्ढे हैं जैसे जहां किसान यूनियन का धरना होता है या जिस जमीन में सरसों बोई जाती है उस में अंडरग्राउंड बोरिंग करा दिए जाएं जिससे चाहे कितना भी पानी बरसे सारा का सारा जमीन के अंदर चला जाएगा या फिर बिजली घर को किसी ऊंची जगह पर शिफ्ट कर दिया जाए लेकिन नहीं अगर ये सब हो गया तो आने वाले समय मे यह मुद्दा ही खत्म हो जाएगा और ये होना जरूरी भी है क्योंकि रोड लगातार ऊंची हो रही है और बिजली घर नीचे जा रहा है बिजली घर के कर्मचारी इतने बढ़िया हैं कभी भी बेचारे दिन में पानी निकालने का काम नहीं करते कल रात में दस बजे पंपसेट चला कर पानी निकाला जा रहा था मेरा इस मामले में केवल यही कहना है कि यदि समय रहते इस समस्या का समाधान नहीं खोजा गया तो कुछ लोग अपने मोटे मोटे पेट पर हाथ फिराते रह जाएंगे और जनता हर साल एक ही प्रकार के झांसे में नहीं आएगी मतलब काठ की हांडी बार बार नहीं चढ़ती।

# टेरर फंडिंग का खुलासा- एफएटीएफ ने 'कम्प्रेहैन्सिव अपडेट ऑन टेररिस्ट फाइनेंसिंग रिस्क्स' रिपोर्ट जारी की

आतंकवाद को जड़ से मिटाने उसके वित्तपोषण को रोकने का स्थाई समाधान ढूंढना वर्तमान समय की मांग-एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र

वैश्विक स्तरपर पूरी दुनियाँ आतंकवाद के दंश से पीड़ति है, दुनियाँ के करीब- करीब हर देश में किसी ने किसी रूप या भेष में आतंकवाद सर उठाए खड़ा है जो उसे देश की उन्नति प्रगति व विकास में बाधा उत्पन्न कर रहा है, मैं एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानी गोंदिया महाराष्ट्र यह मानता हूं कि हर देश की प्राथमिकता अपने देश में लॉ एंड ऑर्डर कायम रखकर अपने देश के नागरिकों का जीवन भय मुक्त बनानाहै, इसीलिए हर देश को आतंकवाद समाप्त करने में योगदान देना जरूरी है। भारत भी उन पीड़ित देशों में से एक है, लेकिन अब भारत ने आतंकवाद के खिलाफ एक बड़ा जनजागरण अभियान छेड़ दिया है, व घोषणा कर दी है कि आतंकवाद व उनके आकाओं में अब हम फर्क नहीं समझेंगे, वैश्विक स्तरपर आतंकवाद पूरी दुनियाँ के हर देश के लिए गंभीर समस्या बन चुका है, तो उसका पर्याय भ्रष्टाचार भी एक गंभीर समस्या है, क्योंकि यह दोनों एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, आतंकवाद को वित्त पोषण भी एक भ्रष्टाचार का ही रूप है, जिसके सहयोग से आतंकवाद उत्पन्न होता है और फलता फूलता है, यानें अस्तित्व में आता है। वैसे तो दशकों से आतंकवाद व भ्रष्टाचार का चोली दामन का साथ है, क्योंकि वित्त पोषण यानें भ्रष्टाचार नहीं होगा तो, आतंकवाद पनपता ही नहीं। वैसे तो आतंकवादियों द्वारा बड़ी-बड़ी घटनाएं धमाकों को अंजाम दिया गया है, जिसमें हजारों लाखों लोगों की जान चली गई है, जिसके अनेक उदाहरण है जिसका अभी सटीक उदाहरण भारत में 22 अप्रैल 2025 को दुखदपूर्ण हादसा फिर देखने को मिला जिसमें 26 निर्दोष लोगों की जान चली गई ।चूँकि एफएटीएफ ने 'कम्प्रेहैन्सिव अपडेट ऑन टेररिस्ट फाइनेंसिंग रिस्क्स' रिपोर्ट जारी की इसलिए आज हम मीडिया में उपलब्ध जानकारी के सहयोग से इस आर्टिकल का माध्यम से चर्चा करेंगे टेरर फंडिंग में सोशल मीडिया, क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म्स और ऑनलाइन मार्केटप्लेस के जरिए धन एकत्रित होने का एफएटीएफ रिपोर्ट में खुलासा है आतंकवाद को जड़ से मिटाने उसके वित्तपोषण को रोकने का स्थाई समाधान ढूंढना वर्तमान समय की मांग।

साथियों बात अगर हम अभी एक दिन पूर्व एफएटीएफ द्वारा जारी रिपोर्ट में नई आधुनिक डिजिटल पद्धतियों डिजिटल सोशल ऑनलाइन मार्केटिंग का प्रयोग आतंकी टेरर फंडिंग में होने की करें तो, यह रिपोर्ट दर्शाती है कि आतंकवादी संगठन अब भी अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली का दुरुपयोग करके अपने कृत्यों को अंजाम दे रहे हैं और हमलों की योजना बना रहे हैं जिसमें आतंकवाद के वित्त-पोषण को प्रभावित करने वाले मुख्य कारकः (1) अकेले सक्रिय आतंकवादी और न्यूनतम वित्त-पोषण की आवश्यकता वाले छोटे संगठन; (2) अफ्रीका और दक्षिण एशिया में असुरक्षित एवं छिद्रिल सीमाएं; (3) आतंकवाद को कुछ देशों द्वारा दिया जा रहा राज्य-स्तरीय समर्थन (4) मुक्त व्यापार क्षेत्र की कमजोर निगरानी व नियमों की कमी आदि। आतंकवाद के वित्त-पोषण के माध्यम पारंपरिक तरीके अपने जा रहे हैं, अल- शबाब और हमास जैसे समूहों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले नकद आधारित लेन-देन, हवाला एवं अन्य अनौपचारिक तरीके, जिनका पता लगाना मुश्किल हो जाता है। वर्तमान आधुनिक युग में नई पद्धतियां अपना जा रही है, जैसे डिजिटल

प्लेटफॉर्मः सोशल मीडिया, क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म्स और ऑनलाइन मार्केटप्लेस के जरिए धन एकत्रित करना; बिटकॉइन जैसी वर्चुअल करेंसी का उपयोग करना; ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से फंड ट्रांसफर करना आदि। आपराधिक गतिविधियांः जबरन वसूली, फिरौती के लिए अपहरण, मादक पदार्थों की तस्करी, और बोको हरम जैसे समूहों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों (जैसे- सोना, लकड़ी आदि) का अवैध व्यापार ।गैर-लाभकारी और कानूनी संस्थाओं का दुरुपयोगः फ्रंट कंपनियों और शेल कंपनियों के जरिए धन छिपाना; गैर-सरकारी संगठनों (एनजीओ) से फंड को डाइवर्ट कर आतंकी गतिविधियों में लगाना आदि। आतंकवाद के वित्त-पोषण को रोकने के लिए महत्वपूर्ण सिफारिशेंः जोखिम संकेतकों की पहचान करना जैसे- बार-बार उच्च जोखिम वाले देशों को धन अंतरण, वर्चुअल असेट्स और प्रीपेड कार्ड जैसे गुमनामी बढ़ाने वाले उपकरणों का उपयोग आदि की निगरानी करनी चाहिए। संगठित बहुपक्षीय प्रतिक्रियाः आतंकवाद के वित्त-पोषण की अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद एफएटीएफ प्रतिबंधों के तहत आतंकवादी संगठनों को बहुपक्षीय रूप से सूचीबद्ध करना चाहिए ।मानकों से बाहर के क्षेत्रों तक पहुंचः सोशल मीडिया और मैसेजिंग प्लेटफॉर्म्स से उत्पन्न खतरों को बेहतर ढंग से समझने तथा उनसे निपटने के लिए लक्षित सार्वजनिक - निजी साझेदारी विकसित करनी चाहिए, यह रिपोर्ट दर्शाती है कि आतंकवादी संगठन अब भी अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय प्रणाली का दुरुपयोग करके अपने कृत्यों को अंजाम दे रहे हैं और हमलों की योजना बना रहे हैं।आतंकवाद के वित्त- पोषण को प्रभावित करने वाले मुख्य कारकः अकेले सक्रिय आतंकवादी और न्यूनतम वित्त- पोषण की आवश्यकता वाले छोटे संगठन; अफ्रीका और दक्षिण एशिया में असुरक्षित एवं छिद्रिल सीमाएं; आतंकवाद को कुछ देशों द्वारा दिया जा रहा राज्य-स्तरीय समर्थन; मुक्त व्यापार क्षेत्र की कमजोर निगरानी व नियमों की कमी आदि ।आतंकवाद के वित्त-पोषण के माध्यम पारंपरिक तरीकेः अल- शबाब और हमास जैसे समूहों द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले नकद आधारित लेन-देन, हवाला एवं अन्य अनौपचारिक तरीके, जिनका पता लगाना मुश्किल हो जाता है ।नई पद्धतियांः डिजिटल प्लेटफॉर्मः सोशल मीडिया, क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म्स और ऑनलाइन मार्केटप्लेस के जरिए धन एकत्रित करना; बिटकॉइन जैसी वर्चुअल करेंसी का उपयोग करना; ऑनलाइन गेमिंग प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से फंड ट्रांसफर करना आदि ।आपराधिक गतिविधियांः जबरन वसूली, फिरौती के लिए अपहरण, मादक पदार्थों की तस्करी, और बोको हरम जैसे समूहों द्वारा प्राकृतिक संसाधनों (जैसे- सोना, लकड़ी आदि) का अवैध व्यापार ।गैर-लाभकारी और कानूनी संस्थाओं का दुरुपयोगः फ्रंट कंपनियों और शेल कंपनियों के जरिए धन छिपाना; गैर-सरकारी संगठनों से फंड को डाइवर्ट कर आतंकी गतिविधियों में लगाना आदि ।आतंकवाद के वित्त- पोषणको रोकने के लिए महत्वपूर्ण सिफारिशेंः जोखिम संकेतकों की पहचान करनाः जैसे- बार-बार उच्च जोखिम वाले देशों को धन अंतरण, वर्चुअल असेट्स और प्रीपेड कार्ड जैसे गुमनामी बढ़ाने वाले उपकरणों का उपयोग आदि की निगरानी करनी चाहिए ।संगठित बहुपक्षीय प्रतिक्रियाः आतंकवाद के वित्त-पोषण की अंतर्राष्ट्रीय प्रकृति से निपटने के लिए संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद प्रतिबंधों के तहत आतंकवादी संगठनों को बहुपक्षीय रूप से सूचीबद्ध करना चाहिए ।एफएटीएफ मानकों से बाहर के क्षेत्रों तक पहुंचः सोशल मीडिया और मैसेजिंग प्लेटफॉर्म्स से उत्पन्न खतरों को बेहतर ढंग से समझने तथा उनसे निपटने के लिए लक्षित सार्वजनिक-निजी साझेदारी विकसित करनी चाहिए।

साथियों बात अगर हम आतंकवाद को समाप्त करने की करें तो जब तक उसके फलने फूलने के रास्तों को ढूंढ कर उन्हें नष्ट नहीं करेंगे, तब तक यह समस्या यूं ही फलती फूलती रहेगी और मुंह फाड़े नुकसान पहुंचाती रहेगी इसलिए इसकी सबसे महत्वपूर्ण जड़ कोई है तो वह टेरर कैंप, डर्टी माइंड, ब्रेनवाश, बेरोजगारी, हेट स्पीच जैसी अनेकों जड़े हैं और इन जड़ों के पनपने का एक महत्वपूर्ण रास्ता है वित्तपोषण याने टेरर फंडिंग इसलिए यदि इसकी इस मूल जड़ को ही काटा जाए तो इसके सहभागी जड़ों पर अपने आप विपरीत प्रभाव पड़ जाएगा और समाप्ति की ओर कदम बढ़ जाएंगे इसलिए नो मनी फॉर टेरर पर वैश्विक एकता बनाकर कार्य योजना तैयार कर उसे सख्ती से क्रियान्वयन करने का की आवश्यकता को रेखांकित करना वर्तमान समय की मांग है।

अतः अगर हम उपरोक्त पूरे विवरण का अध्ययन कर इसका विश्लेषण करें तो हम पाएंगे कि टेरर फंडिंग का खुलासा- एफएटीएफ ने 'कम्प्रेहैन्सिव अपडेट ऑन टेररिस्ट फाइनेंसिंग रिस्क्स' रिपोर्ट जारी की, टेरर फंडिंग में सोशल मीडिया, क्राउडफंडिंग प्लेटफॉर्म्स और ऑनलाइन मार्केटप्लेस के जरिए धन एकत्रित होने काएफएटीएफ रिपोर्ट में खुलासा किया है आतंकवाद को जड़ से मिटाने उसके वित्तपोषण को रोकने का स्थाई समाधान ढूंढना वर्तमान समय की मांग है।

# टोयोटा ग्लांजा पहले से ज्यादा हुई सेफ, सभी वेरिएंट हुए 6 एयरबैग के साथ अपडेट

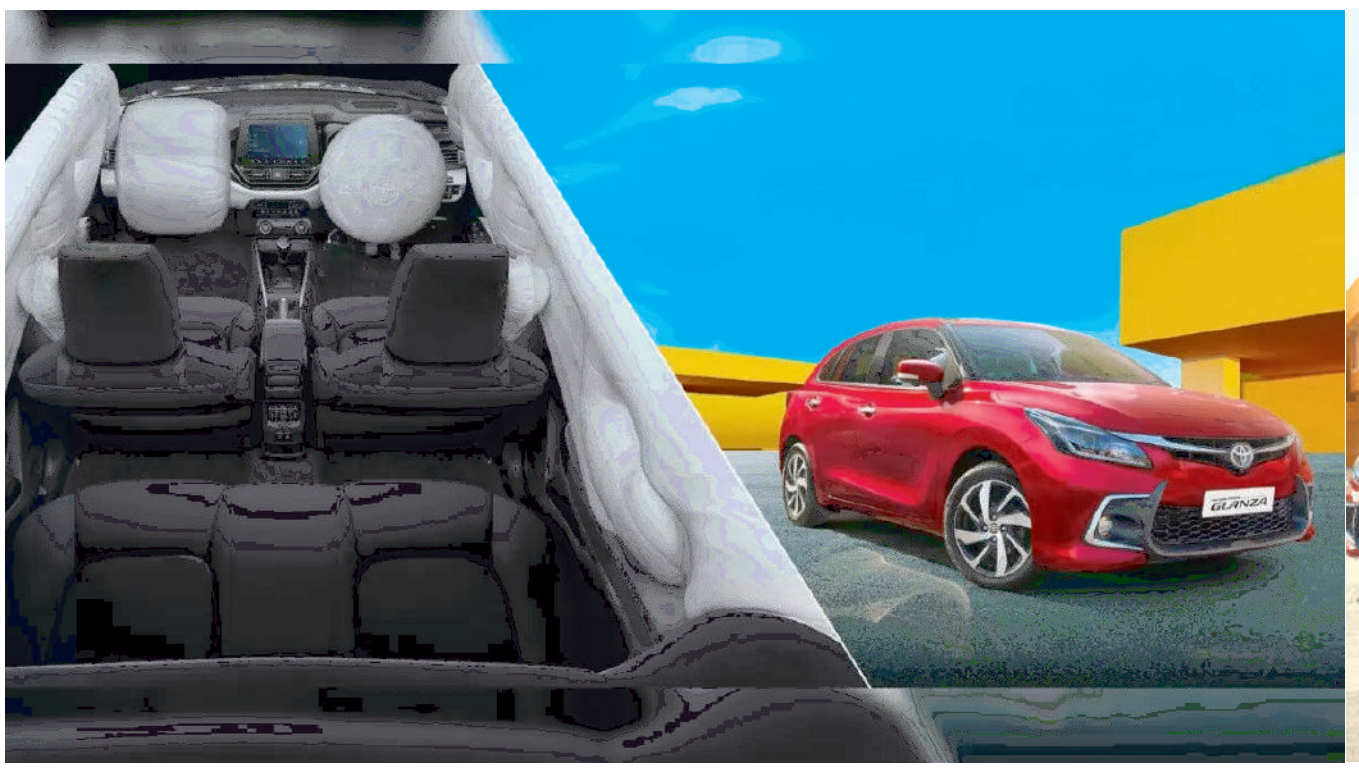

परिवहन विशेष न्यूज

टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने Toyota Glanza के सभी वेरिएंट को 6-एयरबैग के साथ अपडेट किया है। कंपनी ने ग्लान्ज़ा का नया Prestige Edition भी लॉन्च किया है। इस अपग्रेड के बाद इस प्रीमियम हैचबैक की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 6.90 लाख रुपये है। ग्लान्ज़ा में 1.2-लीटर के-सीरीज पेट्रोल इंजन है जो 88 एचपी की पावर और 113 एनएम का पीक टॉर्क जनरेट करता है।

**नई दिल्ली।** टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने घोषणा की है कि Glanza के सभी वेरिएंट को 6-एयरबैग के साथ अपडेट कर दिया गया है। इसका मतलब अब इसके सभी वेरिएंट में 6 एयरबैग मिलेंगे। इसके साथ ही कंपनी ने Glanza का नया प्रेस्टीज एडिशन भी लॉन्च किया है। इस अपग्रेड के बाद इस प्रीमियम हैचबैक की शुरुआती एक्स-शोरूम कीमत 6.90 लाख रुपये पहुंच गई है।

**Glanza Prestige Edition**

कंपनी ने इसे 6 एयरबैग के साथ लैस करने के साथ ही एक स्पेशल प्रेस्टीज एडिशन भी लॉन्च किया है, जिसमें एक एक्सेसरीज पैकेज है। इस पैकेज को 31 जुलाई, 2025 तक ही ऑफर किया जा रहा है। इसमें प्रीमियम डोर वाइजर, क्रोम और ब्लैक एक्सेंट के साथ बॉडी साइड मोल्डिंग, रियर लैंप गार्निश, आउट साइड रियर व्यू मिरर और फेंडर के लिए क्रोम ट्रिम्स, एक रियर स्किड प्लेट, इल्युमिनेटेड डोर सिल्स और एक लोअर ग्रिल गार्निश एक्ससरीज शामिल है।

**कलर ऑप्शन और फीचर्स**

Toyota Glanza को स्पोर्टिंग रेड, इंस्टा ब्लू, एंटाइसिंग सिल्वर, गेमिंग ग्रे और कैफे व्हाइट जैसे डुअल-टोन और सिंगल-टोन कलर के साथ ऑफर किया जाता है। इसमें 9-इंच का इंफोटेनमेंट सिस्टम, हेड-अप डिस्प्ले, 360-डिग्री कैमरा और 45 से अधिक कनेक्टेड क्षमताओं वाला टोयोटा आई-कनेक्ट मिलता है। ये सभी फीचर्स इसके चार वेरिएंट E, S, G और V में पेश किया जाता है।

**इंजन और माइलेज**

Toyota Glanza में 1.2-लीटर के-सीरीज पेट्रोल इंजन दिया जाता है, जिसमें सीएनजी पावरट्रेन का ऑप्शन भी मिलता है। इसका इंजन 88 hp की पावर और 113 Nm का पीक टॉर्क जनरेट करता है। इसे एमटी या एएमटी ट्रांसमिशन ऑप्शन के साथ पेश किया जाता है। कंपनी की तरफ से दावा किया जाता है। ऑटोमैटिक ट्रांसमिशन के साथ 22.94 किमी प्रति लीटर तक और सीएनजी वेरिएंट में 30.61 किमी/किलोग्राम तक का माइलेज देती है।

**Toyota Glanza की कीमत**

भारत में Toyota Glanza को 6.90 लाख रुपये से 10 लाख रुपये की एक्स-शोरूम कीमत में पेश किया जाता है। इस प्रीमियम हैचबैक का मुकाबला Tata Altroz, Maruti Baleno और Hyundai i20 जैसी कारों से होता है।

# महिंद्रा बीई 6 और एक्सईवी 9e अब 79kWh बैटरी के साथ, रेंज में हुआ बड़ा बदलाव!

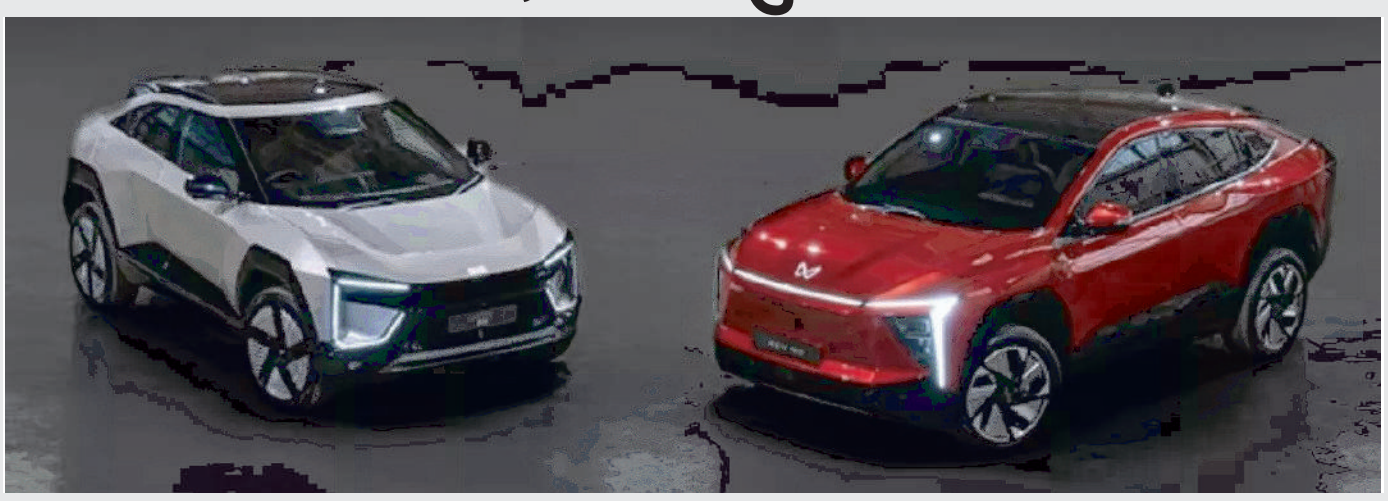

परिवहन विशेष न्यूज

महिंद्रा ऑटो ने अपनी इलेक्ट्रिक एसयूवी महिंद्रा BE 6 और XEV 9e को 79kWh बैटरी पैक के साथ अपडेट किया है जो अब पैक टू वेरिएंट में भी उपलब्ध है। इससे ये मॉडल पहले से अधिक किफायती हो गए हैं। BE 6 Pack Two 79kWh की एक्स-शोरूम कीमत 23.50 लाख रुपये और XEV 9e Pack Two 79kWh की एक्स-शोरूम कीमत 26.50 लाख रुपये है।

**नई दिल्ली।** महिंद्रा ऑटो ने इलेक्ट्रिक SUVs, Mahindra BE 6 और XEV 9e को 79kWh बैटरी पैक के साथ अपडेट किया है। पहले इस बैटरी पैक को केवल टॉप-स्पेक 'पैक थ्री' वेरिएंट्स में ही मिलती थी। अब इसे पैक टू वेरिएंट्स में भी दे दिया गया है, जिसकी वजह से यह अब पहले से ज्यादा किफायती हो गई है। इन दोनों के ही पैक टू वेरिएंट्स की इस बैटरी पैक की डिलीवरी जल्द शुरू करने वाली है। इसके साथ ही कंपनी ने ऑफर दिया है कि जिन ग्राहकों ने पहले 59kWh बैटरी वाले BE 6 और XEV 9e मॉडल बुक किए थे, वे चाहें तो नए 'पैक टू' 79kWh वेरिएंट में अपग्रेड कर सकते हैं। आइए जानते हैं कि BE 6 और XEV 9e के 'पैक टू' वेरिएंट में अब 79kWh की बड़ी बैटरी मिलने के बाद नई कीमत क्या है?

**कीमत और डिलीवरी की जानकारी**

यह बड़ा बैटरी पैक मिलने के बाद Mahindra BE 6 Pack Two 79kWh की एक्स-शोरूम कीमत 23.50 लाख रुपये और Mahindra XEV 9e Pack Two 79kWh की एक्स-शोरूम कीमत 26.50 लाख रुपये है। इन कीमतों में चार्जर और इंस्टॉलेशन का खर्च शामिल नहीं है। 7.2kW AC फास्ट चार्जर की कीमत 50,000 रुपये और 11.2kW AC फास्ट चार्जर की कीमत 75,000 रुपये है।

**रेंज और चार्जिंग कैपेसिटी**

बड़ी बैटरी के साथ इन इलेक्ट्रिक SUVs की रेंज भी शानदार हो गई है, जो लंबी दूरी की यात्राओं को और आसान बनाएगी। Mahindra BE 6 79kWh बैटरी पैक के साथ ARAI प्रमाणित रेंज 682 किमी है, जबकि 59kWh यूनिट के साथ यह 556 किमी है। वहीं, XEV 9e का 79kWh बैटरी के साथ 656 किमी की सिंगल-चार्ज रेंज प्रदान करता है और 59kWh यूनिट के साथ यह 542 किमी है।

दोनों ई-एसयूवी रियर-व्हील ड्राइव मोटर्स के साथ आती हैं। 79kWh बैटरी के साथ ये 286hp की पावर देती हैं, जबकि 59kWh बैटरी के साथ ये 231hp की पावर जेनरेट करती हैं। दोनों ही वेरिएंट 380Nm का टॉर्क जनरेट करती है।

**फीचर्स और टेक्नोलॉजी**

इन दोनों के ही पैक टू वेरिएंट्स कई बेहतरीन फीचर्स के साथ आते हैं। इनमें एलईडी हेडलाइट्स और टेललाइट्स, फिक्स्ड ग्लास रूफ, डुअल-ज़ोन एसी, वायरलेस एंड्रॉइड ऑटो/एप्पल कारप्ले, डॉल्बी एटमॉस के साथ 16-स्पीकर हरमन कार्डन साउंड सिस्टम, वायरलेस चार्जर और रियर एसी वेंट्स मिलते हैं।

Mahindra XEV 9e और BE 6 के पैक टू वेरिएंट में 2.3-इंच का टचस्क्रीन और डिजिटल ड्राइवर डिस्प्ले मिलता है। दोनों में 19-इंच के पहिए दिए गए हैं। XEV 9e में अलॉय व्हील्स, तो BE 6 में एयरो कवर वाले व्हील्स दिए गए हैं।

इनमें पैसेंजर की सेफ्टी के लिए लेवल 2 ADAS, 6 एयरबैग, EPB (इलेक्ट्रॉनिक पार्किंग ब्रेक), TPMS और सभी-व्हील डिस्क ब्रेक जैसे फीचर्स मिलते हैं।

# हिमाचल के शख्स ने 1 लाख की स्कूटी के लिए खरीदी 14 लाख का VIP नंबर, बताई पीछे की वजह

हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर के संजीव कुमार ने अपने शौक को पूरा करने के लिए एक स्कूटी के लिए 14 लाख रुपये का रजिस्ट्रेशन नंबर खरीदा। उन्होंने HP21C-0001 नंबर पाने के लिए ऑनलाइन नीलामी में भाग लिया और 14 लाख की बोली लगाकर जीत हासिल की। यह नंबर एक वीआईपी नंबर है जिसके लिए अक्सर लोग मोटी रकम खर्च करते हैं।

**नई दिल्ली।** आपने जरूर यह सुना होगा कि शौक बड़ी चीज है, इसे हिमाचल प्रदेश के एक शख्स ने इस बात को फिर से सच साबित कर दिया है। आपने अक्सर सुना होगा कि लोग अपनी कार के महंगी कार केलिए खास नंबर प्लेट खरीदते हैं, लेकिन हम यहां पर आपको एक स्कूटी के बारे में बता रहे हैं। हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर निवासी संजीव कुमार ने एक ऐसी स्कूटर खरीदा जिसकी कीमत तो शायद 1 लाख रुपये के आसपास होगी, लेकिन उस पर लगाया गया रजिस्ट्रेशन नंबर इतना खास है कि उसे पाने के लिए संजीव ने पूरे 14 लाख रुपये खर्च कर दिए। जी हां आपने सही पढ़ा, एक लाख रुपये की स्कूटर के लिए 14 लाख रुपये का नंबर प्लेट लिया है। इतने में तो एक लग्जरी कार आ जाएगी।

**इस नंबर में क्या खास है?**

संजीव कुमार मे अपने इस अनोखे शौक को पूरा करने के लिए ट्रांसपोर्ट विभाग द्वारा आयोजित ऑनलाइन नीलामी में हिस्सा लिया। इस नीलामी में उन्होंने HP21C-0001 नंबर हासिल करने के लिए 14 लाख रुपये की बोली लगाई और जीत गए। यह एक वीआईपी नंबर है, जिसे अक्सर लोग अपनी लग्जरी कारों या मोटरसाइकिल के लिए ऊंची कीमत पर खरीदते हैं।

**कैसी रही नीलामी की प्रक्रिया?**

ट्रांसपोर्ट विभाग की इस ऑनलाइन नीलामी में केवल दो लोगों ने हिस्सा लिया था, जिसमें से दूसरे बोली लगाने वाले सोलन जिले से थे, जिन्होंने 13.5 लाख रुपये की बोली लगाई थी, लेकिन संजीव कुमार ने 14 लाख रुपये की बोली लगाकर यह खास नंबर अपने नाम कर लिया।

**नीलामी की रकम किसे मिलेगी?**

इस नीलामी से मिली 14 लाख रुपये की पूरी रकम सीधे राज्य सरकार के खजाने में जाएगी। ट्रांसपोर्ट विभाग के अधिकारियों का कहना है कि यह अभी तक हिमाचल प्रदेश में दोपहिया वाहनों के नंबर प्लेट के लिए की गई सबसे बड़ी नीलामी है। इससे पहले किसी भी नंबर के लिए इतनी बड़ी रकम नहीं मिली थी।

# फास्टैग वार्षिक पास 15 अगस्त से होगा शुरू, जानें जरूरी सवालों के जवाब

नितिन गडकरी के पास FASTag वार्षिक पास है को 15 अगस्त को लॉन्च करने की घोषणा की है। यह पास निजी वाहनों के लिए है और टोल प्लाजा पर लगने वाले समय को बचाएगा। यह नेशनल हाईवे और एक्सप्रेसवे के चुनिंदा प्लाजा पर एक साल या 200 ट्रिप के लिए मान्य होगा। इसे राजमार्ग यात्रा मोबाइल एप्लिकेशन और NHAI की वेबसाइट से एक्टिवेट किया जा सकता है।

**नई दिल्ली।** सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री, नितिन गडकरी ने हाल ही में घोषणा की है कि फास्टैग सलाना पास (FASTag Annual Pass) को 15 अगस्त को लॉन्च किया जाएगा। इस नए पास को निजी वाहनों के लिए लेकर आया गया है। इससे उन लोगों को काफी ज्यादा फायदा होगा, जो अक्सर टोल प्लाजा से गुजरते हैं। इससे लोगों को सुविधा मिलेगी और टोल प्लाजा पर लगने वाला समय भी बचेगा। यह नेशनल हाईवे (NH) और नेशनल एक्सप्रेसवे (NE) के चुनिंदा फी प्लाजा पर एक साल या 200 ट्रिप के लिए मान्य होगा। इसमें प्रति-ट्रिप कोई शुल्क नहीं लगेगा। सरकार की तरफ से इसको लेकर सभी जानकारी को जारी किया जा चुका है, उसके बाद भी कई लोगों को इसे समझने में परेशानी का सामना करना पड़ रहा है। जिसे देखते हुए हम यहां पर आपको FASTag एनुअल पास से जुड़े कुछ सवालों के जवाब बता रहे हैं। आइए इन सवालों के जवाब को विस्तार में देखते हैं।

**FASTag Annual Pass से जुड़े जरूरी सवालों के जवाब**

सवालः FASTag एनुअल पास कहां से एक्टिव किया जा सकता है?

जवाबः एनुअल पास को केवल राजमार्ग यात्रा मोबाइल एप्लिकेशन और भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (NHAI) की वेबसाइट पर जाकर एक्टिव किया जा सकता है।

सवालः FASTag एनुअल पास को कैसे एक्टिव किया जा सकता है?

जवाबः एनुअल पास को वाहन और संबंधित FASTag की योग्यता की पुष्टि के बाद ही एक्टिवेट किया जाएगा। वेरिफिकेशन के बाद यूजर्स को वर्ष 2025-26 के लिए 3,000 रुपये का भुगतान राजमार्गयात्रा मोबाइल एप्लिकेशन या NHAI वेबसाइट के जरिए करना होगा। भुगतान करने के बाद यह पास रजिस्टर्ड FASTag पर दो घंटे के भीतर एक्टिवेट हो जाएगा।

सवालः मेरे पास पहले से ही FASTag है, तो क्या मुझे एनुअल पास के लिए नया खरीदना पड़ेगा?

जवाबः अगर आपके पास पहले से ही FASTag है, तो आपको नया एनुअल पास खरीदने की जरूरत नहीं है। इसे आपके मौजूदा FASTag पर ही एक्टिवेट किया जा सकता है। बस आपको यह देखना होगा कि आपका FASTag वाहन की विंडशील्ड पर सही से लगा हुआ हो। इसके साथ ही वैध वाहन पंजीकरण संख्या (VRN) से जुड़ा हो और ब्लैकलिस्टेड न हो।

सवालः FASTag एनुअल पास कितने समय के लिए मान्य रहेगा?

जवाबः इसके एक्टिवेशन की तारीख से एक साल या 200 ट्रिप, इसमें से पहले हो जाए तक के लिए मान्य रहेगा। जब एक बार एनुअल पास 200 ट्रिप या एक साल पूरा कर लेता है, तो यह अपने आप एक नियमित FASTag में बदल जाएगा। इसके बाद यूजर को इसे फिर से एक्टिव करना पड़ेगा।

सवालः क्या FASTag एनुअल पास को किसी दूसरे वाहन को ट्रांसफर किया जा सकता है?

जवाबः इस पास को किसी दूसरे वाहन को ट्रांसफर नहीं किया जा सकता है। यह केवल उसी वाहन के लिए मान्य होगा, जिस पर FASTag लगा है और पंजीकृत है। अगर कोई यूजर इसे किसी दूसरे वाहन पर इस्तेमाल करता है, तो फिर इसे निष्क्रिय (Inactive) कर दिया जाएगा।

सवालः अगर मेरा FASTag चेसिस नंबर का इस्तेमाल करके रजिस्टर है, तो क्या मुझे एनुअल पास मिल सकता है?

जवाबः जिन फास्टैग को केवल चेसिस नंबर के साथ रजिस्टर किया गया है, उनके लिए एनुअल पास जारी नहीं किया जा सकता है। एनुअल पास को एक्टिवेट करने के लिए यूजर्स को VRN अपडेट करना पड़ेगा।

सवालः FASTag एनुअल पास के तहत एक सिंगल ट्रिप क्या है?

जवाबः अगर आप पॉइंट-आधारित फी प्लाजा से गुजरते हैं, तो हर बार पार करने पर एक ट्रिप गिना जाएगा। अगर आप राउंड ट्रिप (आना और जाना) को दो ट्रिप गिना जाएगा।

सवालः क्या FASTag एनुअल पास जरूरी है? अगर कोई इस पास के बिना सफर करता है, तो क्या होगा?

जवाबः एनुअल पास अनिवार्य नहीं है। मौजूदा FASTag सिस्टम पहले की तरह ही काम करती रहेगी। अगर कोई वाहन चालक एनुअल पास नहीं लेता है, तो वह नियमित लेनदेन के लिए अपने FASTag का इस्तेमाल जारी रख सकता है।

# भारत की जनसंख्या क्षमता का दोहन

विजय गर्ग

विश्व जनसंख्या दिवस पर, भारत एक चौराहे पर खड़ा है और उसे अपनी जनसंख्या वृद्धि को संतुलित करना चाहिए

हम इंसान अब आठ अरब और गिनती कर रहे हैं। यह सही है - दुनिया की आबादी ऊपर की ओर प्रक्षेपवक्र पर है, और बढ़ती दर पर, यह इस सदी के मोड़ से पहले 10 बिलियन से आगे निकल जाएगा। यह एक कठिन स्थिति हो सकती है क्योंकि यह पृथ्वी के सीमित संसाधनों पर भारी दबाव डालता है। हालांकि, पर्यावरण जैसे कई अन्य मुद्दे, पूर्वता लेते हैं, और जनसंख्या को वह ध्यान नहीं मिलता है जो वह हकदार है। लेकिन जनसंख्या बम टिक रहा है, और जितनी जल्दी इसका एहसास होगा, उतना ही बेहतर होगा। हर साल 11 जुलाई को, विश्व जनसंख्या दिवस जनसंख्या से संबंधित मुद्दों को दबाने के वैश्विक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है - अतिवृद्धि और प्रजनन स्वास्थ्य से लेकर लैंगिक समानता और सतत विकास तक। 1989 में संयुक्त राष्ट्र द्वारा शुरू किया गया, विश्व जनसंख्या दिवस जनसंख्या और सामाजिक और आर्थिक व्यवस्था और पर्यावरण पर इसके प्रभाव के बीच महत्वपूर्ण परस्पर क्रिया की एक याद दिलाता है।

कुछ देश पहले से ही तेजी से जनसंख्या वृद्धि के तनाव का सामना कर रहे हैं, जबकि अन्य उम्र बढ़ने की आबादी और सिकुड़ते कार्यबल के साथ संघर्ष कर रहे हैं। उनमें से, भारत एक अद्वितीय और जटिल स्थिति में है। भारत की आबादी 1.4 अरब से आगे निकल गई है. यह अपार जनसांख्यिकीय उपस्थिति एक संभावित ताकत और एक बढ़ती चुनौती दोनों है। एक ओर, एक बड़ी युवा आबादी - 30 वर्ष से कम आयु के 50 प्रतिशत से अधिक - एक विशाल कार्यबल प्रदान करती है। दूसरी ओर, देश को रोजगार अंतराल और प्रजनन स्वास्थ्य असमानताओं को संबोधित करना चाहिए। हालांकि हाल के दशकों में भारत की प्रजनन दरों में भारी गिरावट आई है, लेकिन स्थिति अभी भी असहनीय है। राष्ट्रीय कुल प्रजनन दर नवीनतम राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के रूप में 1970 के दशक में प्रति महिला पांच से अधिक बच्चों से घटकर 2.0 के आसपास रह गई है। यह आंकड़ा अब 2.1 के प्रतिस्थापन-स्तर की प्रजनन क्षमता के करीब है, जिसे लंबी अवधि में एक स्थिर आबादी बनाए रखने के लिए आवश्यक है।

हालांकि, तेज क्षेत्रीय अंतर हैं। केरल, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश जैसे दक्षिणी राज्य पहले ही प्रतिस्थापन दर से नीचे चले गए हैं, जबकि बिहार, उत्तर प्रदेश और मध्य प्रदेश जैसे उत्तरी और मध्य राज्य गरीबी, अशिक्षा के गहरे मुद्दों को दर्शाते हुए उच्च प्रजनन दर दर्ज करना जारी रखते हैं।, और स्वास्थ्य सेवा तक सीमित पहुंच। एक और चिंता कुल प्रजनन दर और कुल वांटेड फर्टिलिटी रेट (TWFR) के बीच की खाई में निहित है, जो उन बच्चों की संख्या को दर्शाता है जो महिलाओं की इच्छा है। यह अनपेक्षित गर्भधारण की एक महत्वपूर्ण घटना को इंगित करता है और परिवार नियोजन, गर्भनिरोधक विकल्पों और प्रजनन अधिकारों तक पहुंच में लगातार कमियों को उजागर करता है। भारत की चुनौती यह सुनिश्चित करने में भी है कि उसकी बढ़ती आबादी को उत्पादक जुड़ाव मिले। देश हर साल कामकाजी आबादी में 10 मिलियन से अधिक लोगों को जोड़ता है। हालांकि, रोजगार सृजन ने इस उछाल के साथ गति नहीं रखी है, जिसके परिणामस्वरूप बढ़ती बेरोजगारी हुई है। जनसांख्यिकीय लाभांश एक दायित्व बन जाता है यदि कौशल विकास और रोजगार सृजन को पर्याप्त रूप से प्राथमिकता नहीं दी जाती है। शिक्षा, विशेष रूप से लड़कियों की, जनसंख्या वृद्धि के प्रबंधन में शायद सबसे परिवर्तनकारी उपकरण है। विश्व जनसंख्या दिवस एक अनुस्मारक के रूप में कार्य करता है कि जनसंख्या का प्रबंधन केवल संख्याओं को नियंत्रित करने के बारे में नहीं है - यह विकल्पों को सक्षम करने, अधिकारों की रक्षा करने और यह सुनिश्चित करने के बारे में है कि प्रत्येक व्यक्ति, विशेष रूप से महिलाओं और लड़कियों के पास संसाधनों और अवसरों तक पहुंच है जिन्हें उन्हें पनपने की आवश्यकता है।

# रक्त में माइक्रोप्लास्टिक की मौजूदगी से प्लास्टिक प्रदूषण से उत्पन्न स्वास्थ्य आपातकाल पर प्रकाश पड़ता है

विजय गर्ग

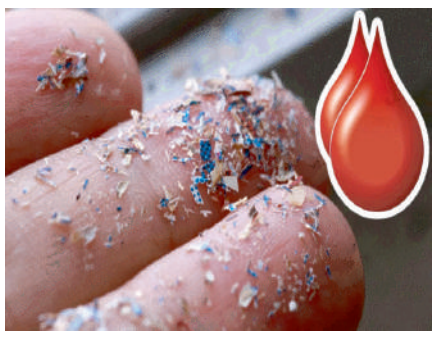

पृथ्वी के पारिस्थितिक तंत्र में प्लास्टिक प्रदूषण तेजी से बढ़ रहा है और मानवता और वन्यजीवों के लिए इसका खतरा भी है। संयुक्त राष्ट्र (यूएन) की एक रिपोर्ट में कहा गया है कि जब तक हम इससे नहीं निपटेंगे, तब तक स्वास्थ्य और पर्यावरण के लिए परिणाम गंभीर होंगे। लेकिन मानव रक्त में माइक्रोप्लास्टिक की खोज का मतलब है कि तत्काल कार्रवाई की आवश्यकता है।

शोधकर्ताओं ने छोटे प्लास्टिक कणों को पाया, जो आकार में एक मिलीमीटर के एक-हजारवें से कम थे, लगभग 80 प्रतिशत 22 लोगों में उन्होंने परीक्षण किया। यह छोटा प्लास्टिक शरीर के माध्यम से यात्रा कर सकता है और हमारे महत्वपूर्ण अंगों में चिपक सकता है। ये छोटे टुकड़े कोशिकाओं और ऊतक को नुकसान पहुंचा सकते हैं, जिससे मधुमेह या कैंसर जैसी बीमारियां हो सकती हैं।

रक्त के आधे नमूनों में पेय की बोतलों, खाद्य पैकेजिंग और कपड़ों में पाए जाने वाले पीईटी प्लास्टिक थे। एक तिहाई में पैकेजिंग में पाया जाने वाला पॉलीस्टीरिन और प्लास्टिक वाहक बैग में इस्तेमाल होने वाला एक चौथाई पॉलीथीन होता है। प्लास्टिक का स्तर और प्रकार लोगों के बीच भिन्न होते हैं और अधिक अध्ययन की अब आवश्यकता होती है।

प्लास्टिक प्रदूषण को रोकने के लिए एक सामाजिक उद्यम कॉमन सीज़, अध्ययन का सह-संस्थापक है। सीईओ जो रॉयले ने कहा, ₹मैं हैरान था लेकिन हैरान नहीं था। हम पहले से ही जानते थे कि माइक्रोप्लास्टिक मानव अपरा और अंगों में पाए गए हैं। शरीर को इन कणों को तोड़ना कठिन लगता है, वे एक भड़काऊ प्रतिक्रिया का कारण बनते हैं और पुरानी बीमारी से जुड़े होते हैं

विज्ञान का अनुमान है कि प्लास्टिक को विघटित होने में 400 से अधिक वर्ष लगते हैं और ऐसा कभी नहीं हो सकता है। हमारे समुद्रों में माइक्रोप्लास्टिक के आंकड़ों से पता चलता है कि अगर 2020 में प्लास्टिक का उत्पादन बंद हो गया था, तो भी कणों की संख्या 2050 तक वजन में लगभग 1.5 मिलियन मीट्रिक टन तक पहुंच जाएगी। संयुक्त राष्ट्र का कहना है कि महासागरों, झीलों और नदियों में 2030 तक प्लास्टिक प्रदूषण की वर्तमान मात्रा दोगुनी से अधिक हो सकती है।

**सेवानिवृत्त प्राचार्य शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाविद्, वैज्ञानिक सड़क कौर चंद एमएचआर मलोट पंजाब**

# प्रौद्योगिकी कक्षाओं में एनईपी 2020 दृष्टि को वास्तविकता में बदलने में मदद कर रही है

विजय गर्ग

जब भारत ने राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 का अनावरण किया, तो उसने आज के शिक्षार्थियों की जरूरतों के लिए शिक्षा को फिर से शुरू करने की दिशा में एक साहसिक कदम उठाया। लचीलेपन, रचनात्मकता, महत्वपूर्ण सोच और बहुभाषावाद पर जोर देने के साथ, नीति का उद्देश्य अधिक समावेशी और भविष्य के लिए तैयार शिक्षा प्रणाली बनाना है।

हालांकि, नीतियां अकेले कक्षा प्रथाओं को नहीं बदलती हैं। यही वह जगह है जहां शैक्षिक प्रौद्योगिकी (एडटेक) ने कदम रखा, दृष्टि और वास्तविकता के बीच एक शक्तिशाली पुल के रूप में कार्य किया। भारत के स्कूलों में, प्रौद्योगिकी वास्तविक परिवर्तन को सक्षम कर रही है, एनईपी के विचारों को सार्थक, औसत दर्जे का और समावेशी तरीकों से जीवन में आने में मदद कर रही है।

रोटे लर्निंग से परे एनईपी 2020 संस्मरण से अनुभवात्मक, हाथों से सीखने के लिए एक बदलाव के लिए कहता है जो जिज्ञासा और रचनात्मकता को बढ़ावा देता है। यह विशेष रूप से सामाजिक-आर्थिक रूप से वंचित समूहों के लिए डिजिटल संसाधनों तक समान पहुंच की आवश्यकता पर भी प्रकाश डालता है

प्रौद्योगिकी आभासी प्रयोगशालाओं, कोडिंग प्लेटफार्मों और गेमिफाइड उपकरणों के माध्यम से इस परिवर्तन को सक्षम बनाता है। यहां तक कि भौतिक विज्ञान प्रयोगशालाओं के बिना स्कूल भी अब ऑनलाइन प्रयोग कर सकते हैं। डिजाइन सॉफ्टवेयर और इंटरैक्टिव सिमुलेशन जैसे उपकरण गणित और विज्ञान को अधिक आकर्षक बना रहे हैं।

शिक्षा सप्ताह द्वारा 2023 के एक सर्वेक्षण में पाया गया कि वास्तविक दुनिया की समस्याओं और हाथों पर समाधान सहित परियोजना आधारित सीखने, शिक्षार्थियों के महत्वपूर्ण सोच कौशल को 40% और सहयोग कौशल को 30% तक बढ़ाता है। इसलिए, ग्रामीण क्षेत्रों में अब सीबीएसई और आईसीएसई स्कूलों में तकनीकी रूप से उन्नत नवाचारों के साथ, शिक्षा अधिक लोकतांत्रिक और रोमांचक होने के लिए तैयार है।

ड्रॉपआउट दर कम करें एनईपी 2020 के प्रगतिशील पहलुओं में से एक मातृभाषा या क्षेत्रीय भाषा निर्देश पर इसका जोर है, विशेष रूप से प्रारंभिक शिक्षा में। यह दृष्टिकोण युवा शिक्षार्थियों को अधिक सहज महसूस करने और उनके पाठों से जुड़ने में मदद करता है।

इस लक्ष्य को आगे बढ़ाने के लिए प्रौद्योगिकी केंद्रीय है। कई शिक्षा कंपनियां और गैर-लाभकारी संगठन बहुभाषी शैक्षिक ऐप, वीडियो और गेम विकसित कर रहे हैं जो राज्य पाठ्यक्रम के साथ संरेखित हैं। ये उपकरण ड्रॉपआउट दरों को कम करने और सगाई बढ़ाने में मदद कर रहे हैं,

खासकर अंडरसर्विस क्षेत्रों में।

समग्र आकलन पारंपरिक परीक्षाएं अक्सर समझ पर स्मृति को पुरस्कृत करती हैं, हालांकि, एनईपी 2020 योग्यता-आधारित आकलन के लिए एक बदलाव की सिफारिश करता है, जहां छात्रों का मूल्यांकन वास्तविक जीवन की स्थितियों में ज्ञान लागू करने की उनकी क्षमता पर किया जाता है।

प्रौद्योगिकी और एआई इस संक्रमण में सबसे आगे हैं। प्लेटफ़ॉर्म अब अनुकूली क्विज़, व्यक्तिगत दृष्टिकोण, डेटा-संचालित अंतर्दृष्टि, त्वरित प्रतिक्रिया और प्रगति डैशबोर्ड प्रदान करते हैं जो छात्रों और शिक्षकों दोनों की मदद करते हैं। सीबीएसई ने लर्निंग का विश्लेषण करने के लिए संरचित मूल्यांकन जैसे कार्यक्रम शुरू किए हैं, जो मूलभूत साक्षरता, संख्यात्मकता और विश्लेषणात्मक कौशल का आकलन करते हैं। इस तरह के आकलन शिक्षकों को सीखने के अंतराल की पहचान करने और निर्देश को निजीकृत करने में मदद करते हैं, जिससे सीखने का अधिक सहायक वातावरण बनता है।

शिक्षकों को सशक्त बनाना एनईपी 2020 स्वीकार करता है कि शिक्षक स्थायी शैक्षिक परिवर्तन के लिए महत्वपूर्ण हैं। उनका समर्थन करने के लिए, पेशेवर विकास, डिजिटल पाठ योजना और सहकर्मी सीखने के लिए कई डिजिटल उपकरण उपलब्ध हैं। राष्ट्रीय एकीकृत शिक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रम (आईटीईपी) जैसी पहल शिक्षकों के डिजिटल और शैक्षणिक कौशल को बढ़ाने के लिए ऑनलाइन मॉड्यूल प्रदान करती है। ऐसे प्लेटफ़ॉर्म शिक्षकों को सहयोग करने, संसाधनों को साझा करने और प्रमाणपत्र अर्जित करने की अनुमति देते हैं, जिससे उन्हें एनईपी संशोधन में बदलाव का नेतृत्व करने का अधिकार मिलता है।

इक्विटी और एक्सेस जबकि प्रौद्योगिकी और एआई-संचालित समाधान परिवर्तनकारी क्षमता प्रदान करते हैं, वे डिजिटल विभाजन को गहरा करने का जोखिम भी बढ़ाते हैं। एनईपी 2020 इसे मान्यता देता है और सुलभ बुनियादी ढांचे और कम तकनीक समाधान की वकालत करता है। पीएम ईविद्या पहल ने टीवी, रेडियो और ऑनलाइन प्लेटफार्मों के माध्यम से शैक्षिक पहुंच का विस्तार किया है, यह सुनिश्चित करते हुए कि इंटरनेट एक्सेस के बिना छात्रों को पीछे नहीं छोड़ा गया है। कई एडटेक कंपनियां हाशिए के शिक्षार्थियों तक पहुंचने के लिए ऑफ़लाइन सुविधाओं, हल्के ऐप और डिवाइस दान कार्यक्रमों को भी डिजाइन कर रही हैं।

बहुभाषी सीखने से लेकर अनुभवात्मक शिक्षाशास्त्र तक, समग्र आकलन से लेकर शिक्षक सशक्तिकरण तक, प्रौद्योगिकी केवल एक उपकरण से अधिक साबित हो रही है; यह प्रणालीगत परिवर्तन के लिए एक उत्प्रेरक है। 2023 में 5.13 बिलियन डॉलर की कीमत वाले भारत के एडटेक सेक्टर को 2030 तक 17.34 बिलियन डॉलर तक पहुंचने का अनुमान है। लेकिन संख्याओं से परे, एडटेक की सच्ची सफलता को मापा जाएगा कि कितने बच्चों को यह बेहतर सीखने, बड़े सपने देखने और आगे तक पहुंचने में मदद करता है।

जैसा कि एनईपी 2020 भारत की शैक्षिक यात्रा का मार्गदर्शन करना जारी रखता है, नीति और प्रौद्योगिकी का संलयन सहानुभूति, इक्विटी और उत्कृष्टता में आधारित कक्षाओं को आकार देने के लिए महत्वपूर्ण होगा जो वास्तव में आगे की दुनिया के लिए छात्रों को तैयार करते हैं।

**सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद एमएचआर**

# किनारे से परे: सौंदर्य शहरी मौत जाल

विजय गर्ग

जैसे ही भारत का शहरी परिदृश्य नई ऊंचाइयों तक पहुंचता है - शाब्दिक रूप से - इसके शहर अपार्टमेंट टावरों से भर रहे हैं जो पुणे से नोएडा तक आधुनिक क्षितिज को परिभाषित करते हैं। फिर भी यह तेजी से ऊर्ध्वाधर विकास एक दिल दहला देने वाली लागत के साथ आया है, खासकर सबसे कम उम्र के और सबसे कमजोर निवासियों के लिए। बालकोनी, जिसे एक बार खुलेपन, शांत और अवकाश के स्थान के रूप में देखा जाता है, अब खतरे-स्थानों के छिपे हुए क्षेत्रों के रूप में उभर रहे हैं, जहां छोटे ओवरसाइट और संरचनात्मक समझौते जल्दी से घातक हो सकते हैं।

इस संकट के दिल में एक गलत विश्वास निहित है: कि बालकनियों पर रखी वस्तुएं इतनी लंबी सुरक्षित हैं जब तक कि वे भारी हैं या एक कगार पर चुपके से बैठते हैं। ज्यादातर लोग मानते हैं कि खेल में गुरुत्वाकर्षण ही एकमात्र बल है। लेकिन निर्मित वातावरण कहीं अधिक जटिल वास्तविकता के अधीन है। हवा के झोंके, भूकंपीय कंपन, थर्मल विस्तार और यहां तक कि लोड में मामूली बदलाव भी पार्श्व आंदोलनों को पेश कर सकते हैं। जब ये आंदोलन खराब वेल्डेड जोड़ों, जंग लगे रेलिंग या उम्र बढ़ने वाले पैरापेट्स से मिलते हैं, तो आपदा अपरिहार्य हो जाती है।

**रोके जाने योग्य त्रासदियों**

अप्रैल 2025 में, पुणे में एक बच्चा गिरने वाले फूल की चपेट में आ गया था। मौत कोई बेतरतीब दुर्घटना नहीं थी। यह एक असुरक्षित वस्तु का परिणाम था जिसे एक उच्च पैरापेट पर रखा गया था और नियामक निरीक्षण की अनुपस्थिति थी। गुरुत्वाकर्षण ने अंतिम झटका दिया होगा, लेकिन मानव उपेक्षा ने इसे सक्षम कर दिया। त्रासदी के मद्देनजर, नोएडा, गुरुग्राम और गाजियाबाद में नगरपालिका अधिकारियों ने आपात सलाह जारी की, जिसमें बालकनी और अनिवार्य निरीक्षण से भारी वस्तुओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया। लेकिन कई अन्य

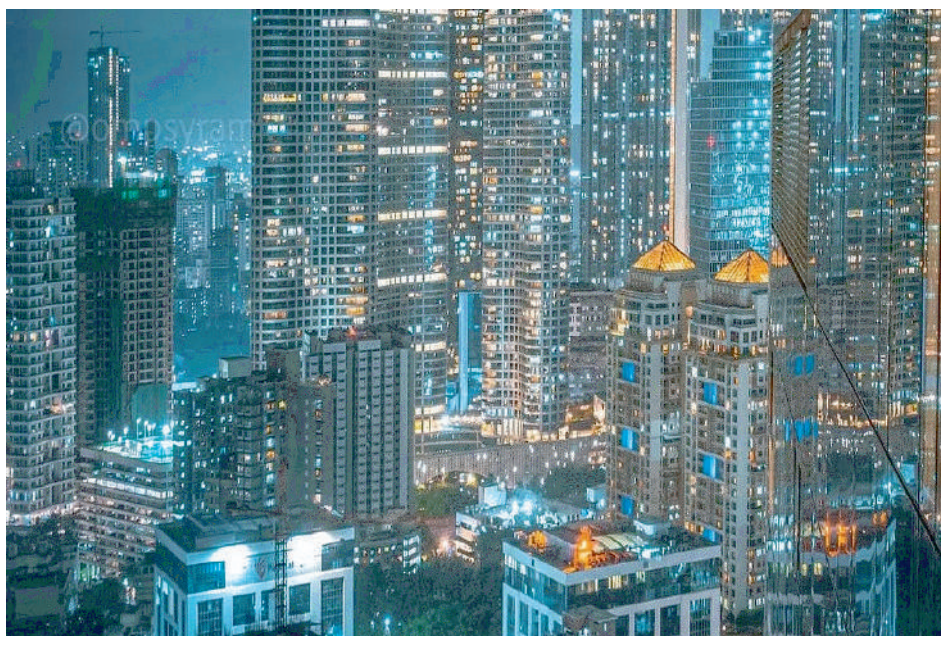

शहरों में, ये निर्देश कर्षण प्राप्त करने में विफल रहे। राज्य लाइनों में प्रवर्तन की असंगति अनगिनत जीवन को खतरे में डालती रहती है। एक महीने बाद, गाजियाबाद में, एक पांच साल के लड़के और उसके चाचा को कुचल दिया गया जब एक पुरानी बालकनी ने रास्ता दिया।

**सौंदर्यशास्त्र और छिपे हुए खतरे**

औसत बालकनी शांत और सुरक्षित-लटके पौधे, लोहे की रेलिंग, कलात्मक ग्रिल दिखाई देती है। फिर भी इस सौंदर्य आकर्षण के पीछे छिपे हुए जोखिम हैं। लोहे की जंग, वेल्ड कमजोर, और संरचनाएं बिगड़ती हैं - विशेष रूप से तेजी से निर्मित इमारतों में या समझौता सामग्री की गुणवत्ता के साथ। इनमें से अधिकांश खामियां तब तक अदृश्य रहती हैं जब तक कि बहुत देर न हो जाए।

बच्चे विशेष रूप से जोखिम में हैं। एम्स और पबमेड सेंट्रल के शोध पर प्रकाश डाला गया है जो 1 से 5 वर्ष की आयु के बच्चों के लिए सबसे घातक प्रकार के आघात के बीच बालकनियों रैंक से आता है। इस समूह में 60 प्रतिशत से अधिक आघात की चोटें ऊंचाई से गिरने से जुड़ी हुई हैं। बच्चे रेलिंग पर झुक जाते हैं, लेजेज चढ़ते हैं, या पैरापेट्स को प्ले जोन मानते हैं। एक ढीली रेलिंग, एक असुरक्षित प्लांटर, या एक रिकेटी शेल्फ सेकंड में एक घातक खतरा बन सकता है। प्रतिक्रियाशील उपाय - त्रासदियों के बाद ही अधिनियमित - सक्रिय, राष्ट्रव्यापी सुरक्षा मानकों को प्रतिस्थापित नहीं कर सकते। जबकि लखनऊ और नोएडा जैसे शहरों ने असुरक्षित बालकनी प्रथाओं के लिए जुर्माना और प्रवर्तन लागू किया है, ऐसी नीतियों को सभी शहरी केंद्रों में संस्थागत बनाने की आवश्यकता है। बिल्डिंग कोड आज संरचनात्मक नींव और लोड-असर गणना पर भारी केंद्रित हैं। प्लांटर इंस्टॉलेशन, रेलिंग सुदृढीकरण, या वेल्डिंग कार्य की अखंडता जैसे पोस्ट-हैंडओवर संशोधनों पर कोई नियामक स्पष्टता नहीं है। मुद्दा तकनीकी से अधिक है - यह सांस्कृतिक है। लोगों को भरोसा है कि उनकी बालकनी सुरक्षित हैं। उनका मानना है कि जो बनाया गया था, वह अपक्षय या पहनने की परवाह किए बिना चलेगा। इस मानसिकता को तत्काल विकसित करने की आवश्यकता है।

**संरचनात्मक सुरक्षा की संस्कृति**

आगे की त्रासदियों को रोकने के लिए, भारत को नीति और धारणा दोनों में बदलाव की आवश्यकता है। आवधिक, अनिवार्य निरीक्षण बालकनी, रेलिंग और पैरापेट स्थिरता पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए - उच्च वृद्धि वाली इमारतों में लिफ्ट की जांच की तरह। ये निरीक्षण नियमित होने चाहिए, शिकायतों या मीडिया के ध्यान पर निर्भर नहीं होना चाहिए। संशोधित बिल्डिंग कोड को रेलिंग ऊंचाई, रेलिंग रिक्ति और वजन सीमा के लिए स्पष्ट विनिर्देशों को परिभाषित करना चाहिए। बिल्डर्स को न केवल निर्माण के दौरान बल्कि आवधिक ऑडिट के माध्यम से हैंडओवर के बाद वेल्ड और सामग्री की गुणवत्ता के लिए उत्तरदायी बनाया जाना चाहिए। इन नियमों को चरणबद्ध अनुपालन के माध्यम से नए निर्माण और पुरानी इमारतों दोनों पर लागू होना चाहिए।

संकरी बालकनी की अगुवाई में भारी, असुरक्षित वस्तुओं को रखने पर भी सख्त रोक लगाने की जरूरत है। प्लांटर्स, एसी यूनिट और सैटेलाइट डिश जैसी वस्तुओं को या तो स्थायी रूप से स्थिर फ्रेम के लिए लंगर डाला जाना चाहिए या घर के अंदर स्थानांतरित किया जाना चाहिए। उच्च वृद्धि वाली इमारतों में पैरापेट्स के सजावटी या भंडारण उपयोग पर पूरी तरह से प्रतिबंध लगाया जाना चाहिए। वास्तविक परिवर्तन के लिए जन जागरूकता की आवश्यकता होती है।

निवासी कल्याण संघों (आरडब्ल्यूए) को बालकनी सुरक्षा पर आंतरिक अभियानों का नेतृत्व करना चाहिए। उच्च वृद्धि वाले घरों को चाइल्डप्रूफिंग के बारे में कार्यशालाएं, पोस्टर और पेरेंटिंग गाइड सामुदायिक सतर्कता को बढ़ावा दे सकते हैं। डेवलपर्स को पोस्ट-हैंडओवर संरचनात्मक ऑडिट प्रदान करना चाहिए और पारदर्शी रूप से रखरखाव प्रोटोकॉल का खुलासा करना आवश्यक है। नगर निकायों को नागरिकों को गुमनाम रूप से असुरक्षित बालकनियों, टूटी हुई रेलिंग या अतिभारित पट्टियों की रिपोर्ट करने के लिए सशक्त बनाना चाहिए। संरचनात्मक ढहने और बालकनी से संबंधित चोटों पर नज़र रखने वाला एक केंद्रीकृत डेटाबेस पैटर्न की पहचान करने, शहरी नीति को सूचित करने और भविष्य की त्रासदियों को रोकने में मदद कर सकता है। हर बार जब कोई बच्चा गिरता है, या बालकनी गिर जाती है, तो यह एक ऐसी प्रणाली की एक क्रूर अनुस्मारक है जो कार्य करने में विफल रही। ये मौतें केवल दुर्घटनाएं नहीं हैं - वे नजरअंदाज की गई चेतावनी, अनुपस्थित नीतियों और खतरनाक मान्यताओं का परिणाम हैं। जैसे-जैसे भारत के शहर बढ़ते जा रहे हैं, हर मंजिल, हर रेलिंग और हर कगार को सुरक्षित बनाने की जिम्मेदारी तेजी से बढ़ती जा रही है।

***सेवानिवृत्त प्रिंसिपल, शैक्षिक स्तंभकार, प्रख्यात शिक्षाविद्, गली कौर चंद***

# बच्चों को अभी भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के युग में शिक्षकों की आवश्यकता है

विजय गर्ग

एक ऐसे युग में जहां आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) जीवन के हर क्षेत्र में क्रांति ला रहा है - स्वास्थ्य सेवा से लेकर परिवहन से लेकर शिक्षा तक - यह मानना लुभावना है कि मशीनें सभी क्षमताओं में मनुष्यों की जगह ले सकती हैं। इन दिनों एक सामान्य परहेज से पता चलता है कि एआई की तेजी से उन्नति को देखते हुए बच्चों को अब शिक्षकों की जरूरत नहीं है। हालांकि, यह विश्वास न केवल समय से पहले है, बल्कि गहराई से त्रुटिपूर्ण भी है। सच में, यह एक विरोधाभास है: हमारी तकनीक जितनी अधिक परिष्कृत होगी, शिक्षक की भूमिका उतनी ही महत्वपूर्ण होगी। इस बात से कोई इनकार नहीं है कि एआई उपकरण व्यक्तिगत सामग्री वितरित कर सकते हैं, तत्काल समाधान उत्पन्न कर सकते हैं, और छात्रों को अपनी गति से सीखने में मदद कर सकते हैं।

सीखने के आवेदन घड़ी के आसपास उपलब्ध हैं, डिजिटल ट्यूटर कभी नहीं थकते हैं, और मशीनें नहीं भूलती हैं - लेकिन हमें याद रखना चाहिए: शिक्षा केवल जानकारी के बारे में नहीं है; यह परिवर्तन के बारे में अधिक है। जवाब देने में एआई शानदार हो सकता है, लेकिन यह पूछने के लिए रुकता नहीं है, ₹क्या आप आज ठीक हैं यह एक बहादुर मोर्चे के पीछे कांपती आवाज़ या एक बच्चे की दूर की टकटकी पर ध्यान नहीं देता है, जिसका दिमाग अकेले ले जाने के लिए बहुत भारी है। यह शब्दों की तुलना में जोर से बोलने वाली चुप्पी या आंखों तक पहुंचने वाली मुस्कान को नहीं उठाएगा। एक मशीन डेटा को संसाधित कर सकती है, लेकिन यह दर्द, भ्रम या खुशी महसूस नहीं कर सकती है। यह गणना कर सकता है, लेकिन यह परवाह नहीं कर सकता। बुद्धि कृत्रिम हो सकती है, लेकिन सहानुभूति - वह गर्म, मानव स्पर्श - एक ऐसी चीज है जो केवल और केवल, एक शिक्षक ही पेशकश कर सकता है। कक्षा हमेशा चार से अधिक दीवारें और एक ब्लैकबोर्ड रही है। यह एक अभयारण्य, एक प्रशिक्षण मैदान है, और अक्सर एक दूसरा घर है। शिक्षक कई भूमिकाएँ निभाता है - शिक्षक, संरक्षक, परामर्शदाता, विश्वासपात्र और रोल मॉडल। जैसा कि अल्बर्ट आइंस्टीन ने एक बार टिप्पणी की थी, ₹रचनात्मक अभिव्यक्ति और ज्ञान में आनंद जगाना शिक्षक की सर्वोच्च कला है वह कला स्वचालित नहीं हो सकती। बच्चे भावनात्मक और सामाजिक प्राणी हैं। उन्हें कई बार पुष्टि, प्रोत्साहन, मार्गदर्शन और सुधार की आवश्यकता होती है - जिनमें से कोई भी मशीन वास्तविक गर्मी प्रदान नहीं कर सकती है।

जैसा कि अरस्तू ने बुद्धिमानी से कहा, ₹दिल को शिक्षित किए बिना मन को शिक्षित करना कोई शिक्षा नहीं है एआई ट्यूटर कर सकता है; यह पोषण नहीं कर सकता। यह परीक्षण कर सकता है; यह प्रेरित नहीं कर सकता। और यह सीखने और शिक्षित होने में अंतर है। इसके अलावा, ऐसे समय में जब बच्चे डिजिटल अधिभार, भावनात्मक तनाव और नैतिक अस्पष्टता को बढ़ाने के लिए उजागर होते हैं, शिक्षक नैतिक एंकर के रूप में काम करते हैं।

वे मूल्यों को सिखाते हैं, लचीलापन बनाते हैं, और मॉडल सहानुभूति रखते हैं - ऐसे गुण जो मशीनों द्वारा न तो प्रोग्राम किए जाते हैं और न ही संसाधित किए जाते हैं। एक बच्चे के समग्र विकास के लिए एआई पर पूरी तरह से भरोसा करना जीवन में उद्देश्य खोजने के लिए गूगल मानचित्र का उपयोग करने जैसा है - सुविधाजनक, लेकिन दिशाहीन। बेशक, एआई द्वारा कक्षा में लाए जाने वाले लाभों को अनदेखा करना मूर्खता होगी। यह विभेदित निर्देश का समर्थन कर सकता है, प्रशासनिक कार्यों को संभाल सकता है, और पुल सीखने के अंतराल में मदद कर सकता है। लेकिन एक कुदाल को कुदाल कहते हैं - एआई एक उपकरण है, शिक्षक नहीं। यह सहायक है, वास्तुकार नहीं। सही हाथों में, यह एक एनबलर बन जाता है, जिससे शिक्षक सार्थक बातचीत पर अधिक ध्यान केंद्रित कर सकते हैं और यांत्रिक कार्यों पर कम कर सकते हैं।

जैसा कि पुरानी कहावत है, ₹यह गरीब काम करने वाला है जो अपने उपकरणों को दोषी ठहराता है,₹ और आज का कुशल शिक्षक एआई का बुद्धिमानी से उपयोग करना सीख रहा है, न कि इससे डरें। इसके मूल में, शिक्षण सामग्री देने के बारे में नहीं है; यह जिज्ञासा पैदा करने, आत्मविश्वास पैदा करने और चरित्र को आकार देने के बारे में है।

कोई भी बच्चा कभी यह कहने के लिए बड़ा नहीं हुआ, "एक एल्गोरिथ्म ने मेरी ज़िंदगी बदल दी।" लेकिन कई सफल लोग एक शिक्षक के पास अपनी यात्रा का पता लगाते हैं जो उन पर विश्वास करता था जब किसी और ने नहीं किया था। शिक्षण का सही सार कनेक्शन में निहित है - कुछ कोई चैटबॉट अनुकरण नहीं कर सकता है। यह शिक्षक है जो उस दीपक को रोशनी देता है और इसे आत्म-संदेह, व्याकुलता और विफलता के तूफानों से जलता रहता है। याद रखें, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस शिक्षा देने में सहायता कर सकता है, लेकिन यह शिक्षक है जो मानवता का उद्धार करता है। खतरा यह नहीं है कि एआई हमसे अधिक बुद्धिमान हो जाएगा; खतरा यह है कि हम भूल सकते हैं कि हमें पहली जगह में मानव क्या बनाता है। आइए हम चाक को पूरी तरह से एक मशीन को न सौंपें। वास्तव में, आइए एक शिक्षक की अपूरणीय उपस्थिति - हर सार्थक कक्षा के दिल की धड़कन और हर युवा शिक्षार्थी की यात्रा में कम्पास का सम्मान करते रहें।

# नोटबंदी से वोटबंदी तक

आलेख : राजेन्द्र शर्मा

बिहार में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) को चुनौती देने वाली याचिकाओं को सुप्रीम कोर्ट ने परीक्षण के लिए स्वीकार कर लिया है। सुप्रीम कोर्ट ने इस विषय के तत्काल जरूरी होने को पहचानते हुए, इस पर विचार के लिए तीन दिन बाद, बृहस्पतिवार 10 जुलाई की तारीख तय की है। इस संबंध में संबंधित पक्षों के लिए नोटिस जारी कर दिए गए हैं। बिहार में विधानसभाई चुनाव से पहले मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण की इस प्रक्रिया के खिलाफ सुप्रीम कोर्ट में छः याचिकाएं पहुंची थीं। इनमें, विशेष रूप से चुनाव सुधारों से संबंधित पहलुओं पर काम करने वाले गैर-सरकारी संगठन एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) तथा जनाधिकार संगठन पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज (पीयूसीएल) के अलावा तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा और राष्ट्रीय जनता दल (आरजेडी) सांसद मनोज कुमार झा की याचिकाएं शामिल हैं। सभी याचिकाओं का मुख्य मुद्दा एक ही है, विधानसभाई चुनाव से पहले इतने कम समय में की जा रही मतदाता सूचियों में भारी फेर-बदल की यह पूरी कसरत, खासतौर पर करोड़ों की संख्या में वंचितों तथा कमजोर व हाशिए के तबके के लोगों से मताधिकार छीनने का ही काम करेगी। इसलिए, इस प्रक्रिया पर ही रोक लगाने की प्रार्थना की गयी है।

कहने की जरूरत नहीं है कि अब सभी की निगाहें सुप्रीम कोर्ट पर टिकी हुई हैं। लेकिन, 25 जून को मतदाता सूची पुनरीक्षण की इस प्रक्रिया के शुरू होने से अब तक इस मामले भारतीय चुनाव आयोग या ईसीआई का जो आचरण रहा है, मोदी राज के ग्यारह साल में मजबूती से कायम कर दी गयी शासकीय संस्कृति को ही प्रतिबिंबित करता है। इस शासकीय संस्कृति के तीन खास तत्व हैं। पहला, नाटकीय तरीके से बड़े लगने वाले और आम जनता के लिए कड़े साबित होने जा रहे, कथित रूप से 'साहसिक' फैसले लेना। इन कदमों की साहसिकता का एक ही सबूत होता है, जनता की तकलीफों की और इन तकलीफों को स्वर देने वाले राजनीतिक विपक्ष के विरोध की परवाह ही नहीं करते हुए, आगे बढ़ते जाना। दूसरा, जनता की मुश्किलों के रूप में इन निर्णयों के दुष्परिणामों के सामने आने पर, लीपा-पोती करने से लेकर, पांव पीछे खींचने तक की कोशिशें करना। और तीसरा, यह सब करते हुए भी इसका शासकीय अहंकार दिखाना कि शासन का फैसला पूरी तरह से सही था और उसमें कोई बदलाव नहीं किया जा रहा है! नोटबंदी के मामले में ये तीनों विशेषताएं खुलकर सामने आयी थीं। शहरबंदी या लॉकडाउन में भी ये तीनों ही विशेषताएं देखने को मिली थीं। और अब इस मतदाता सूची पुनरीक्षण में, जिसे उचित ही बिहार के महागठबंध के झंडे तले संगठि०त विपक्ष ने 'वोटबंदी' का नाम दिया है, इस छोटी सी अवधि में ही इन तीनों विशेषताओं के दर्शन हो चुके हैं। नोट करने वाली बात यह है कि चुनाव आयोग, एक स्वतंत्र वैधानिक संस्था है, इसके बावजूद हम उसे खास मोदीराज की राजनीतिक संस्कृति में रंगा हुआ देख रहे हैं।

जहां तक कथित रूप से 'साहसिक' निर्णय का सवाल है, चुनाव से ऐन पहले और वह भी कुल तीन महीने से भी कम समय में, आठ करोड़ के लगभग मतदाताओं की सूचियां एक तरह से नये सिरे से बनाना, अगर इतना खतरनाक नहीं होता, तो बेशक साहसिक तो माना ही जा सकता था। अब यह सभी जान चुके हैं कि बिहार में मतदाता सूचियों में इस तरह का गहन पुनरीक्षण, 2003 में हुआ था। उसके 22 साल बाद, इस गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया को नये सिरे से दोहराए जाने की, एक 'बड़ा काम' कर के दिखाने की ललक के सिवा और क्या आवश्यकता थी, इसका चुनाव आयोग की ओर से कोई संतोषजनक जवाब नहीं आया है।

बेशक, इस निर्णय से पहले चुनाव प्रक्रिया के मुख्य हितधारकों के रूप में राजनीतिक पार्टियों के साथ किसी तरह के परामर्श में तो नहीं, बहरहाल आलोचना के तीखे होते स्वरों के सामने चुनाव आयोग ने इस कसरत को जरूरी साबित करने की कोशिश की है। लेकिन, चुनाव आयोग द्वारा दी गयी दलीलें इतनी लचर हैं कि खुद चुनाव आयोग के अधिकारीगण जहां-तहां मैदानी स्तर पर इस फैसले की जरूरत बताते हुए, अक्सर 'पहले नागरिकता तय करने' की दलील में खिसक जाते हैं, जो कि जाहिर है कि चुनाव आयोग का काम नहीं है और जिससे चुनाव आयोग अगर सुप्रीम कोर्ट के सामने अपने फैसले का बचाव करते हुए, अपना दामन ही नहीं छुड़ा ले, तो ही आश्चर्य की बात होगी। एक और प्रमुख कारण, जिसका जिक्र चुनाव आयोग के मुंह से निकल गया है, हालांकि इसे भी आयोग द्वारा अब ढांपने की कोशिश की जाएगी, बिहार से रोजी-रोटी कमाने के लिए दूसरे राज्यों में जाने वाले मेहनतकशों की संख्या करोड़ों में होना है।

इन मेहनतकशों का मकान ही बिहार में नहीं होता है, बिहार से, उसकी नियति से उनका जीवंत रिश्ता रहता है, जबकि दूसरे राज्यों के जीवन से, जहां वे रोजी-रोटी के लिए रहते हैं, वे वैसा आवयविक रिश्ता नहीं बना पाते हैं। सामान्य रूप से अपने गृह राज्य में नहीं रहने के आधार पर, उन्हें बिहार के मतदाता की हैसियत से बेदखल करने की आयोग की नीयत, कानून के सामने एक मिनट भी नहीं टिक पाएगी। चुनाव आयोग को यह तय करने का तो अधिकार है कि ये प्रवासी, अगर बिहार में मतदाता हैं तो दूसरे राज्यों में भी मतदाता नहीं बनें, लेकिन उसे यह तय करने का अधिकार नहीं है कि किसी प्रवासी को, अपने गृह राज्य में मतदान करना चाहिए या अपने काम की जगह पर।

अपने इस 'बड़े' निर्णय के बचाव के लिए चुनाव आयोग, एक सरासर अर्द्धसत्य का सहारा लेता है। वह राजनीतिक हितधारकों के साथ किन्हीं 'चार हजार परामर्शों' की बार-बार दुहाई देता रहा है। और इसके साथ ही यह दलील दोहराता आया है कि सभी राजनीतिक पार्टियों ने मतदाता सूचियों में सुधार की जरूरत पर जोर दिया था। लेकिन, चुनाव आयोग इन दलीलों के जरिए इस सच्चाई को छुपाने की कोशिश करता है कि न तो किसी भी राजनीतिक पार्टी ने मतदाता सूची के इस तरह के सघन पुनरीक्षण की मांग की थी और न ही आयोग ने किसी भी राजनीतिक पार्टी से इस तरह के पुनरीक्षण को लेकर कोई परामर्श किया था। इसके विपरीत, इस फैसले का राजनीतिक पार्टियों के सिर पर अचानक बम की तरह फोड़ दिया जाना ही, आयोग की नजरों में इस फैसले को बड़ा या साहसिक बनाता था।

नोटबंदी जैसी दूसरी विशेषता तब दिखाई दी, जब चुनाव आयोग ने गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया वाकई शुरू की। अब वे जमीनी सच्चाइयां उसके सामने थीं, जिन्हें सिर्फ प्रचार के सहारे हवा में नहीं उड़ाया जा सकता था। सबसे बड़ी समस्या, जैसा कि सभी टिप्पणीकार शुरू से ही रेखांकित कर रहे थे, जन्म प्रमाणपत्र समेत उन दस्तावेजों के जुटाए जाने की थी, जो मतदाता के रूप में नामांकन के फार्म के साथ, तीन श्रेणियों में मतदाताओं को अलग-अलग हद तक, जमा कराने हैं और 26 जुलाई तक जमा कराने हैं। यह साफ होने में जरा भी देर नहीं लगी कि करोड़ों मतदाताओं के लिए, जिनमें गरीब भूमिहीन तथा गरीब किसान, मजदूर, प्रवासी मजदूर, कम पढ़े, निचली मानी जाने वाली जातियों के लोगों और महिलाओं की संख्या खासतौर पर बड़ी होगी, आवश्यक सर्टिफिकेट जमा करना ही नहीं, तस्वीर से युक्त फार्म भरकर जमा कराना भी, कठिन परीक्षा होगी।

पहले पग पर इस कठिनाई के सामने पहले चुनाव आयोग की ओर से नया स्पष्टीकरण दिया गया कि 2003 की मतदाता सूची में जिनका नाम है, उनके लिए तस्वीर के साथ फार्म के साथ, सिर्फ मतदाता सूची के संबंधित अंश की फोटो कापी देना ही काफी होगा। फिर और स्पष्टीकरण आया कि 2003 की मतदाता सूची में जिनके नाम नहीं हैं, उनके माता-पिता का नाम अगर उक्त मतदाता सूची में है, तो उनके जन्म प्रमाणपत्र की जगह, मतदाता सूची के संबंधित अंश की फोटो कापी लगाना काफी होगा। इसके बाद भी, जब मुश्किलें कम नहीं हुईं तो चुनाव आयोग की ओर से कह दिया गया कि पहले सिर्फ फार्म भरकर जमा कराया जाए, भले ही उसमें तस्वीर भी नहीं हो। बाकी दस्तावेजों को बाद में देखी जाएगी।

लेकिन, जब राजनीतिक पार्टियों ने इसे चुनाव आयोग की ओर से कठिनाइयों को देखते हुए, नियमों में बदलाव करने की कोशिश बताया गया, जो बेशक उनके हिसाब से स्वागत योग्य और जरूरी थी, तो चुनाव आयोग का ईगो आगे आ गया और उसने तीसरी विशेषता का प्रदर्शन शुरू कर दिया। चुनाव आयोग ने दावा करना शुरू कर दिया कि उसने नियमों में कोई बदलाव नहीं किये हैं। सारे नियम ज्यों के त्यों हैं। कुछ भी नहीं बदला है। दस्तावेज बाद में लगाए जा सकते हैं, कच्ची सूची बनने के बाद, कच्ची सूची की समीक्षा के दौर तक। इस तरह, एक ओर चुनाव आयोग जो पहले दस दिन में एक करोड़ से थोड़े से ज्यादा फार्म ही जमा कर पाया है, बाकी प्रमाणों की शर्त स्थगित करने के जरिए, एक महीने की तय अवधि में प्रकट विफलता से बचने की कोशिश कर रहा है और दूसरी ओर, यह दावा किया जा रहा है कि आयोग ने नियमों में कोई छूट नहीं दी है, बस अब दस्तावेज बाद में लिए जा सकेंगे। यानी दस्तावेजों की उपलब्धता की जो करोड़ों मतदाताओं की समस्या है, उसे सिर्फ कुछ हफ्तों के लिए टाला भर गया है।

इस तरह, जहां पहले ही गहन पुनरीक्षण की प्रक्रिया को लेकर इतने सारे भ्रम तथा कन्फ्युजन हैं, उसके संबंध में भ्रमों की धुंध और गहरी की जा रही है। इस धुंध की आड़ में, मतदाता सूची के पुनरीक्षण के नाम पर, नागरिकता के प्रमाण मांग कर एक हद तक एनआरसी थोपी जा रही होगी और करोड़ों भारतीयों का मताधिकार छीना जा रहा होगा और दूसरी ओर, चुनाव आयोग यह कहकर खुद को इसके लिए जिम्मेदारी से भी बचा रहेगा, उसने तो सिर्फ गहन पुनरीक्षण का, मतदाता सूचियों की साफ-सफाई का काम किया है। अब तो सर्वोच्च न्यायालय ही चुनाव आयोग को जनतंत्र पर यह बड़ा आघात करने से रोक सकता है। याद रहे कि यह खेल शुरू भले बिहार से किया गया है, आने वाले दिनों में पूरे देश को इस छद्म एनआरसी से गुजरना पड़ेगा, बशर्ते सुप्रीम कोर्ट इस सिलसिले पर रोक नहीं लगा दे।

## रुढ़िवादी समाजिक दुष्टीकोष से आज भी बेटीयों की यही कहानी है।

गुरुग्राम में एक पिता ने अपनी प्रतिभाशाली जवान बेटी की गोली मारकर हत्या कर दी। जब यहां खबर सुनकर मन बहुत आहत हुआं । क्या हो गया हमारे समाजिक स्तर को कहा जा रहा है। इतना डरावना चेहरा एक पिता का जिसने अपनी उभरती हुई बिटिया जो टेनिस खिलाड़ी थी, और बहुत होनहार थी जो अपने पैरों पर खड़ी होने के लिए संघर्षरत रहीं। वहीं बेटी के लिए एक पिता अमानवीय और नाकारात्मक पक्ष के चलते हुए, समाज के दबाव में आकर अपनी फूल सी बेटी को गोली मर देता हैं । तो रिश्तों का खण्डित होना और वह दृश्य बहुत भयभीत करने वाला है। कन्या जो बहूंमूल्य होती है दो परिवारों के लिए जिसे पल भर में खत्म कर दिया गया। यहां कैसी सोच है एक पिता चाहें कितने भी मानसिक रूप से बीमार हो इतना कायरना कृत वह भी मनुष्य द्वारा समक्ष से परे है ? आज आधुनिक युग में भी रुढ़िवादी दुष्टीकोष परम्परा के नाम पर विघटन बहुत ग़लत है। एक पिता जों लगातर एक के बाद एक गोली चला रहा थें ओर उन्होंने पांच गोली मारी अपनी ख़ुद की बच्ची को । उस पिता का कलेजा मुंह को नहीं आया होगा । यह कुल मिलाकर मानवीय मूल्यों का पतन कहें या फिर भटकता हुआ हमारा रुढ़िवादी दुष्टीकोष जो आज भी बेटा व बेटी पर अलग-अलग अपनी बात रखते है ? जो बेटी अपने पैरों पर खड़ी होकर असमान में उड़ कर पंख फैलाकर ऊंची उड़ान भर रही हो तो समाज क्यों चिंतित हैं। इसी ताने-बाने से परेशान पिता जो विकृत मनोवृत्ति के हो गए और उन्होंने एक प्रतिभाशाली बेटी का सर्वनाश कर दिया । मनुष्य की सोच क्यों इतनी छोटी हो गई है , इस नये जमाने में भी नाकारात्मक पनप रहीं हैं , जो कुठाओ ओर समस्याओं का सरल हल इस प्रकार की घटना को आज़म देकर ढूंढने में लगे हुए है , वहां बहुत गलत है। आज हमें असफलता के कारण का मंथन करना जरूरी है । जिससे सकारात्मक सोच बनीं रहे और ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति न हो। अगर कुछ ग़लत है तो बातचीत व आपकी विचार-विमर्श से हर एक समस्या का हल निकाल जा सकता है। प्रतिभाओं को तराशने वाले हाथ ही अगर उन्हें खण्डित करेंगे तो फिर मानवीय मूल्यों से हम सभी का विश्वास उठ जाएगा। आज ऐसी छोटी सोच को पनपने से रोकना चाहिए, यहां घटना समाजिक कलंक है जब अपनी बेटी को उसके पिता ही मौत के घाट उतार रहे हो। रुढ़िवादी समाजिक दुष्टीकोष आज भी बेटीयों की यही कहानी है।

# सादगी की सियासत: मनोहर लाल की राजनीति और परछाइयाँ

मनोहर लाल खट्टर हरियाणा की राजनीति में सादगी, ईमानदारी और पारदर्शिता के प्रतीक बनकर उभरे हैं। जहाँ अधिकतर नेता सत्ता से वैभव कमाते हैं, वहीं खट्टर जी ने जनता का भरोसा कमाया। उनके शासन में लाखों नौकरियाँ बिना सिफारिश और रिश्वत के दी गईं। निजी संपत्ति की बजाय उन्होंने मेहनती युवाओं की दुआएँ कमाईं। स्वयंसेवक से मुख्यमंत्री तक का सफर तय करते हुए वे दिखावे नहीं, सेवा में विश्वास रखते हैं। उनके पास महल नहीं है, पर जनता के दिलों में स्थान ज़रूर है — यही है सच्चे जनसेवक की पहचान।

प्रियंका सौरभ

जब भी हरियाणा की राजनीति पर नज़र डालते हैं, एक बात तुरंत सामने आती है — सत्ता में आते ही नेताओं की कोठियों की संख्या बढ़ जाती है, गाड़ियों के काफिले लम्बे हो जाते हैं, और रिश्तेदारों के व्यापार अचानक बढ़ने लगते हैं। मगर इन सब के बीच एक नाम ऐसा भी है जो न कोठी वाला है, न खानदान का ठेकेदार — मनोहर लाल खट्टर।

**तो सवाल यही है — क्या कमाया मनोहर लाल ने राजनीति में?**

उत्तर साफ है — उन्होंने कमाया विश्वास। उन्होंने कमाई उन लाखों मेहनती, पढ़ने-लिखने वाले गरीब बच्चों की दुआएँ, जो कभी सोच भी नहीं सकते थे कि बिना सिफारिश, बिना रिश्वत, सिर्फ मेहनत के दम पर उन्हें भी सरकारी नौकरी मिल सकती है।

जहाँ अधिकतर नेता राजनीति को वैभव और व्यक्तिगत लाभ का ज़रिया मानते हैं, वहीं मनोहर लाल खट्टर सादगी और पारदर्शिता का प्रतीक बनकर सामने आए। वे मुख्यमंत्री हैं लेकिन उनका खुद का कोई निजी मकान नहीं है। न पंचकूला, न गुरुग्राम, न चंडीगढ़ में कोई कोठी या फार्महाउस। आज भी वे दो कमरों के सरकारी क्वार्टर में रहते हैं।

उन्होंने न केवल अपने निजी जीवन को सादा और संयमित रखा, बल्कि सरकार चलाते समय भी जनता के पैसे को जनता के काम में लगाया। जहाँ अन्य नेता अपनी संतानों और नातेदारों को सत्ता में भागीदार बनाते रहे, वहीं खट्टर ने व्यवस्था को मजबूत करने और भरोसे को लौटाने की कोशिश की — वह भी बिना किसी शोर-शराबे के।

मनोहर लाल खट्टर का जन्म पाँच मई उन्नीस सौ चौवन को निंदाना गाँव, ज़िला रोहतक (अब झज्जर), हरियाणा में हुआ। उनका परिवार देश के विभाजन के समय पाकिस्तान से भारत आया था। प्रारंभिक शिक्षा रोहतक में प्राप्त की और फिर दिल्ली विश्वविद्यालय से स्नातक की पढ़ाई की। पढ़ाई के बाद उन्होंने पूरी तरह से स्वयंसेवक संगठन को समर्पित कर दिया और लंबे समय तक पूर्णकालिक प्रचारक रहे।

वे लगभग चालीस वर्षों तक स्वयंसेवक संगठन से जुड़े रहे और संगठनात्मक अनुभव के साथ वर्ष उन्नीस सौ चौरानवे में भारतीय जनसंघ से सक्रिय राजनीति में आए। दो हजार चौदह में जनसंघ की ऐतिहासिक जीत के बाद उन्हें हरियाणा का मुख्यमंत्री बनाया गया — यह नियुक्ति जाति, जातिगत संतुलन या जोड़तोड़ से नहीं, बल्कि विचार, व्यवहार और संगठन की निष्ठा के आधार पर हुई।

हरियाणा में एक समय ऐसा भी था जब नौकरी पाना मतलब किसी विधायक या मंत्री की पहचान ढूंढना होता था। पैसे लेकर नौकरियाँ बेची जाती थीं, परीक्षाएँ लीक होना आम बात थी। मनोहर लाल खट्टर के शासन में यह व्यवस्था बदली। चयन बोर्ड और लोक सेवा आयोग की प्रक्रियाएँ पारदर्शी बनीं, आवेदन और चयन की प्रक्रियाएँ ऑनलाइन हुईं, परिणामों में निष्पक्षता आई।

अब एक साधारण परिवार का बच्चा भी कह सकता है — अगर पढ़ाई की है, तो नौकरी मेरी है।

उनके कार्यकाल में लाखों नौकरियाँ बिना सिफारिश, बिना रिश्वत के दी गईं। इसका परिणाम यह हुआ कि गाँव-गाँव में युवाओं का आत्मविश्वास लौटा। अब युवा किसी नेता की सिफारिश नहीं ढूंढते, बल्कि अपने पुस्तकालय में और अधिक समय बिताने लगे हैं।

यह कहना गलत नहीं होगा कि उन्होंने लाखों युवाओं को सिर उठाकर जीने का हक़ दिया है — बिना किसी समझौते के।

बेशक, मनोहर लाल खट्टर पर भी आलोचनाएँ हुईं — कभी किसान आंदोलन को लेकर, कभी पुलिस व्यवस्था या कर्मचारियों की माँगों को लेकर। लेकिन उन्होंने कभी भाषा की मर्यादा नहीं तोड़ी, न ही किसी आंदोलनकारी को दुश्मन की तरह देखा। उन्होंने संवाद और संयम की नीति अपनाई। यह उनके व्यक्तित्व की सबसे बड़ी विशेषता है — काम को प्रचार नहीं बनाना, और आलोचना को अवसर की तरह लेना।

उनके शासनकाल में कई नवाचार हुए — परिवार पहचान पत्र की योजना, सरल पोर्टल, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ का प्रभावी संचालन, डिजिटल सेवा केंद्रों की स्थापना, पारदर्शी शिकायत निवारण प्रणाली — ये सब व्यवस्थागत सुधार हैं, जिनका सीधा लाभ आम आदमी तक पहुँचा है।

आज जब राजनीति में जाति, धर्म और बाहरी प्रदर्शन प्राथमिक हो गया है, मनोहर लाल खट्टर उन चंद नेताओं में हैं जो विचार, व्यवहार और परिणाम से अपनी पहचान बनाए हुए हैं।

उनका जीवन यह सिखाता है कि सत्ता का असली सौंदर्य दिखावे में नहीं, सेवा में है। वे युवाओं के लिए इस मायने में आदर्श हैं कि ईमानदारी केवल आदर्श नहीं, एक जीवन पद्धति हो सकती है।

उनके कार्यकाल में न कोई बड़ा भ्रष्टाचार हुआ, न उनके नाम कोई आय से अधिक संपत्ति की चर्चा हुई। न उनके परिवार ने सत्ता का लाभ उठाया, न कोई मित्र-मंडली मलाईदार पदों पर बैठाई गई।

तो राजनीति में क्या कमाया उन्होंने?

उन्होंने कमाया एक ऐसा नाम, जिस पर हरियाणा का आम नागरिक आँख मूँदकर भरोसा कर सके। उन्होंने कमाया जनता का मन — बिना लोभ, बिना भय, केवल अपने आचरण से।

हरियाणा की राजनीति में मनोहर लाल खट्टर किसी अवरोध की तरह नहीं, एक विकल्प की तरह उभरे हैं। उन्होंने यह साबित किया कि राजनीतिक ईमानदारी कोई कल्पना नहीं, बल्कि एक जीवंत सच्चाई भी हो सकती है।

हो सकता है उनके पास अपनी कोठी न हो,

मगर उन्होंने लाखों युवाओं को मेहनत से नौकरी पाने का सपना दिया।

हो सकता है उनके पास गाड़ियों का काफिला न हो,

मगर उन्होंने आम आदमी को पारदर्शिता, सुरक्षा और सेवा का भरोसा दिया।

सत्ता को साधन नहीं, साधना मानने वाले मनोहर लाल जैसे नेता राजनीति में बहुत कम आते हैं।

और जब आते हैं, तो महलों में नहीं,

जनता के दिलों में घर बना लेते हैं।

## "इस शहर को ये क्या हो गया है?"

डॉ सत्यवान सौरभ

इस शहर को ये क्या हो गया है,
पानी नहीं, दर्द बहने लगा है।

जो कहा था विकास का सपना,
अब तो वो भीगने लगा है।

सड़कों पे नावें चल रही हैं,
नाला ही रास्ता बन गया है।

नेता कहें — ₹सब ठीक है यारो₹,
और छत से छप्पर गिर गया है।

टेंडर में सौ काम दिखाए,
असली में एक भी ना हुआ है।

बच्चा किताब छोड़ के कहता —
"आज तैरना ही पढ़ना हुआ है।"

वो जो बना था "स्मार्ट शहर",
आज कीचड़ में लिपटा हुआ है।

घोषणाओं की फेहरिस्त लंबी,
पर हर नाली जाम मिला है।

फाइलों में पुल बन गए हैं,
ज़मीं पे हर रोज़ गड्ढा खुला है।

RTI पूछे तो चुप्पी छा जाए,
सवाल करने वाला गुनहगार हुआ है।

बस्ती डूबी है पांच दिन से,
और मंत्री का ट्वीट भीगा हुआ है।

"सब नियंत्रण में है" — यही वाक्य,
हर साल पानी में घुल गया है।

जो भी सच्चाई बोले यहाँ पर,
वो या तो पागल, या साज़िशबाज़ हुआ है।

इस शहर को अब खुद से डर है,
बारिश नहीं, भ्रष्टाचार बरसा हुआ है।

## बारिश में भीगता शहर

प्रियंका सौरभ

बारिश आई, और शहर की सड़कों ने सांस ली,
धूल में सनी दीवारों पर बूंदों की थाप सी लगी।
छतों से टपकती बूँदें जैसे पुरानी यादें हों,
हर गली, हर मोड़, कुछ कहने को तैयार सी लगी।

कहीं नालियों से बहते प्लास्टिक के सपने,
कहीं छातों के नीचे भी भीगते अपने।
चाय की दुकान पर जमा हुई भीगी उम्मीदें,
और ऑफिस जाती भीड़ की फिसलती चिंता की रेखाएँ।

मोबाइल में कैद होते बादलों के वीडियो,
तो कहीं पंखे के नीचे रखी बाल्टी की विवशता।
किसी के लिए "रिमझिम रोमांस",
तो किसी के लिए टूटी छत, और सोने की मजबूरी।

सड़कों पर लगे जलजमाव का विरोध मौन,
नेताओं के वादों पर हँसती बारिश की बाँसुरी।
ट्रैफिक की लहरों में तैरती स्कूटी,
और खोखों में भीगते गरीबों की भूख अनकही।

पानी ने धो दिए कुछ झूठे चेहरे भी,
जो हर मौसम में मासूमियत ओढ़े रहते थे।
मगर कुछ चेहरे और गहरे हो गए,
कीचड़ में भी सच्चाई के फूल खिलते रहे।

बारिश, तू सिर्फ पानी नहीं,
तू आईना है इस शहर की असलियत का।
जो छतरी के नीचे मुस्कराता दिखता है,
वो भीतर से अकसर भीगता है अकेले ही।

# सफलता की ओर पहला कदम: एक छात्र की यात्रा और सुनियोजित प्रयासों का जादू

आकाश अग्रवाल

आज के समय में, हम सभी सफलता को अपनी मेहनत और समर्पण से पाते हैं। लेकिन, जब एक छात्र अपने लक्ष्य की ओर बढ़ने की कोशिश करता है, तो अक्सर वह खुद को उलझन में पाता है। हर दिन एक नई समस्या, एक नई चुनौती, और वही पुरानी निराशा। क्या अगर हम आपको बताएँ कि सफलता का रास्ता सिर्फ कड़ी मेहनत नहीं बल्कि सुनियोजित प्रयासों और मानसिक शांति से भी है?

यह कहानी एक ऐसे छात्र की है जो हमेशा यह महसूस करता था कि वह अपनी पूरी क्षमता का उपयोग नहीं कर पा रहा। वह कड़ी मेहनत करता, लेकिन हर बार उसे लगता था कि वह कहीं न कहीं चूक रहा है। परीक्षा की तारीख पास आ रही थी, और तनाव बढ़ता जा रहा था। यह छात्र, जिसे हम 'अमित' कहेंगे, हर दिन अपने पढ़ाई के शेड्यूल को लेकर चिंतित रहता था।

वह अपनी दिनचर्या में लगातार बदलाव करता रहा, लेकिन फिर भी कोई न कोई चीज़ उसे अटकती दिखती थी। एक दिन, उसने एक प्रेरक उद्धरण पढ़ा जिसे उसने कभी सुना नहीं था:

"₹Success is the sum of small efforts, repeated day in and day out." – Robert Collier

यह उद्धरण अमित के दिल में गूंजने लगा। उसे एहसास हुआ कि सफलता सिर्फ एक बार के बड़े प्रयास से नहीं, बल्कि छोटे-छोटे, सुनियोजित प्रयासों से मिलती है। और यही उस परिवर्तन की शुरुआत थी।

**1. सुनियोजित क्रमबद्ध प्रयास:**

अमित ने सबसे पहले अपनी दिनचर्या को पुनः संगठित किया। उसने तय किया कि वह हर दिन सुबह के समय में पढ़ाई करेगा, न कि दिन के अंत में जब थकान और मानसिक अवसाद हावी हो जाता था। उसने पहले उन विषयों को चुना जिनमें उसे ज्यादा मुश्किलें आ रही थीं।

"Plan your work and work your plan." – Napoleon Hill

सुनियोजित तरीके से काम करने से अमित को यह एहसास हुआ कि उसे हर दिन अपने प्रयासों को प्राथमिकता के हिसाब से व्यवस्थित करना था। यह एक साधारण लेकिन असरदार तरीका था, और धीरे-धीरे उसने महसूस किया कि उसकी समस्या अब कम होने लगी थी।

**2. 21 का जादुई नियम:**

अमित ने एक और महत्वपूर्ण नियम अपनाया, जिसे उसने किताबों और पॉडकास्ट में सुना था - ₹21 का जादुई नियम₹। इसका मतलब था कि अगर आप किसी भी नए कार्य को 21 दिन तक नियमित रूप से करते हैं, तो वह आपकी आदत बन जाती है।

अमित ने इस नियम का पालन करते हुए हर रोज़ अपने अध्ययन समय को सही तरीके से तय किया और उसे 21 दिन तक बिना कोई बहाना बनाए पालन किया। तीसरे हफ्ते के बाद, उसे महसूस हुआ कि अब उसकी पढ़ाई का तरीका पूरी तरह से बदल चुका था। अब उसे तनाव नहीं हो रहा था, और वह अपनी पढ़ाई में अधिक मनोयोगी हो गया था।

**3. वर्तमान का बेहतर नियोजन:**

अमित को अब समझ में आने लगा था कि जितना महत्वपूर्ण अपने भविष्य के लिए तैयारी करना है, उतना ही महत्वपूर्ण वर्तमान को सही तरीके से जीना है। उसने अपनी हर छोटी-छोटी गतिविधि को योजनाबद्ध तरीके से किया। अब वह न सिर्फ पढ़ाई बल्कि अपने शरीर और मानसिक स्थिति के लिए भी ध्यान रखने लगा।

"Don't watch the clock; do what it does. Keep going." – Sam Levenson

अमित ने अपने दिन की शुरुआत प्रार्थना से की, जिसमें उसने अपने मन को शांत करने की कोशिश की। यह उसे मानसिक शांति और अनुशासन दोनों देता था। यह प्रार्थना एक नियमित अभ्यास बन गया, जो उसकी सफलता की कुंजी बन गई।

**4. प्रार्थना का सुनियोजित अभ्यास:**

अमित के जीवन में प्रार्थना का एक विशेष स्थान था। वह जानता था कि बिना मानसिक शांति के कोई भी लक्ष्य प्राप्त नहीं किया जा सकता। हर दिन सुबह उठकर उसने प्रार्थना का एक छोटा सा समय निकाला, जिसमें वह अपनी सफलता के लिए आभार व्यक्त करता था और अपने मन को शांत करने की कोशिश करता था।

"Prayer is not asking. It is a longing of the soul." – Mahatma Gandhi

इसने न सिर्फ उसे मानसिक शांति दी, बल्कि उसे एक नई दिशा भी दी। अब वह पढ़ाई के दौरान हर परेशानी को समझने और हल करने में सक्षम था।

**5. आभार का दैनिक अभ्यास:**

अमित ने आभार व्यक्त करने की आदत भी डाली। वह दिन के अंत में सोचता कि दिनभर में क्या अच्छा हुआ, किससे मदद मिली, और कौन-कौन सी बातें उसे खुशी दे गईं। इस आभार के दैनिक अभ्यास ने उसकी सोच को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया और उसे अपनी समस्याओं से बाहर निकलने की प्रेरणा दी।

"Gratitude is not only the greatest of virtues but the parent of all the others." – Marcus Tullius Cicero

कुछ ही महीनों में, अमित की स्थिति में भारी बदलाव आया। अब वह न केवल पढ़ाई में अच्छा कर रहा था, बल्कि उसकी मानसिक स्थिति भी बेहतर हो चुकी थी। उसने यह महसूस किया कि सफलता सिर्फ कठोर मेहनत और समर्पण से नहीं, बल्कि सुनियोजित प्रयासों, मानसिक शांति, आभार और एक स्थिर दिनचर्या से मिलती है।

इस कहानी से यह सिखने को मिलता है कि सफलता के लिए केवल मेहनत ही नहीं, बल्कि सुनियोजित प्रयास, सही मानसिकता, और दैनिक अभ्यास की आवश्यकता होती है। अगर आप भी एक छात्र हैं और अपनी सफलता की दिशा में सही कदम उठाना चाहते हैं, तो यह वही तरीका हो सकता है, जो आपको अपने लक्ष्यों तक पहुँचने में मदद करेगा।

"Success is the result of preparation, hard work, and learning from failure." – Colin Powell

तो, अब समय है अपने सुनियोजित प्रयासों की शुरुआत करने का। क्या आप तैयार हैं?

# जब छात्र हत्यारे बन जाएं: चेतावनी का वक्त

"संवाद का अभाव, संस्कारों की हार, स्कूलों में हिंसा समाज की चुप्पी का फल"

**हिसार में शिक्षक जसवीर पातू की हत्या केवल एक आपराधिक घटना नहीं, बल्कि हमारे समाज की संवादहीनता, विफल शिक्षा व्यवस्था और गिरते नैतिक मूल्यों का कठोर प्रमाण है। आज का किशोर मोबाइल की आभासी दुनिया में जी रहा है, जबकि घर और विद्यालय दोनों में उपेक्षित है। मानसिक तनाव, संवाद की कमी और नैतिक शिक्षा के अभाव ने उसे असंवेदनशील बना दिया है। यह घटना एक चेतावनी है कि यदि अब भी हम माता-पिता, शिक्षक और समाज मिलकर समाधान नहीं खोजे, तो शिक्षा का भविष्य गहरे संकट में है।**

*— प्रियंका सौरभ*

हिसार में शिक्षक जसवीर पातू की निर्मम हत्या ने पूरे समाज को झकझोर कर रख दिया है। यह घटना कोई साधारण आपराधिक कृत्य नहीं है, बल्कि यह हमारे गिरते नैतिक मूल्यों, संवादहीन परिवार व्यवस्था, और संवेदनहीन शिक्षा प्रणाली का कठोर दर्पण है। जब एक छात्र ही अपने शिक्षक का हत्यारा बन जाए, तो यह केवल व्यक्ति विशेष का नहीं, बल्कि पूरे समाज का पतन है।

आज विद्यालय शिक्षा का मंदिर नहीं, बल्कि हिंसा, डर और असुरक्षा का केंद्र बनते जा रहे हैं। शिक्षक, जो कभी मर्यादा, संयम और अनुशासन के प्रतीक माने जाते थे, अब अपने ही छात्रों से भयभीत रहने लगे हैं। क्या यही है आधुनिक शिक्षा की सफलता? क्या इसी दिन के लिए हमने विद्यालयों में स्मार्ट कक्षाएं और डिजिटल पठन-पाठन का विस्तार किया था?

इस घटना ने कई सवाल खड़े कर दिए हैं। सबसे बड़ा सवाल यही है कि हमारे बच्चे इतने क्रूर कैसे हो गए? उनके भीतर सहनशीलता, करुणा और विवेक की जगह गुस्सा, हिंसा और प्रतिशोध ने क्यों ले ली है? इसका उत्तर हमें विद्यालयों या सरकार से नहीं, बल्कि अपने घरों और आत्मचिंतन में खोजना होगा।

आज का बच्चा मोबाइल की स्क्रीन में दुनिया ढूंढ रहा है। माता-पिता उसके पास होते हुए भी उसकी दुनिया से दूर हैं। भोजन करते समय, यात्रा करते समय या घर पर बैठते समय भी वह किसी वीडियो, खेल या आभासी मित्र के साथ जुड़ा होता है। उसका वास्तविक जीवन धीरे-धीरे समाप्त हो रहा है और वह एक कृत्रिम आक्रोशपूर्ण दुनिया में जी रहा है।

विद्यालयों में नैतिक शिक्षा अब केवल पुस्तकों तक सीमित रह गई है। 'सत्य', 'अहिंसा', 'क्षमा' जैसे शब्द अब पाठ्यपुस्तकों की शोभा बनकर रह गए हैं। न शिक्षक के पास समय है, न पालकों के पास धैर्य, और न समाज के पास कोई दिशा। बच्चों के भीतर जो आक्रोश पनप रहा है, वह इसी उपेक्षा और संवादहीनता की उपज है। मन के भीतर जब दर्द, कुंठा और अस्वीकार का जहर भरता है, तो वह या तो आत्मघात की ओर ले जाता है या फिर हत्या की ओर। और जब यह जहर एक किशोर के भीतर भर जाए, तो परिणाम वही होता है जो हमने जसवीर पातू की हत्या के रूप में देखा।

मनोरोग विशेषज्ञों का स्पष्ट मत है कि किशोरों में बढ़ती हिंसा का कारण संवाद की कमी है। वे अपनी बात कहने, ग़लतियों को साझा करने, और मदद मांगने में संकोच करते हैं। माता-पिता अक्सर बच्चों को डांटते हैं या नकारते हैं, जिससे बच्चा आंतरिक रूप से विद्रोही बनता चला जाता है। विद्यालय में भी उसे एक अंक, एक परीक्षा, एक प्रदर्शन से ही मापा जाता है। उसके मनोभावों, उसकी मानसिक स्थिति और उसके व्यवहार पर कोई ध्यान नहीं देता।

क्या हम यह भूल गए हैं कि शिक्षा का उद्देश्य केवल डिग्री दिलवाना नहीं, बल्कि चरित्र निर्माण भी है? और चरित्र निर्माण तब तक संभव नहीं जब तक शिक्षक और विद्यार्थी के बीच विश्वास न हो, माता-पिता और बच्चों के बीच संवाद न हो, और समाज के भीतर मूल्य आधारित सोच का विस्तार न हो।

प्रशासन की भूमिका पर भी प्रश्नचिन्ह लगते हैं। जब तक कोई घटना नहीं होती, तब तक सब कुछ सामान्य माना जाता है। लेकिन जब कोई शिक्षक मारा जाता है, तब ज्ञापन दिए जाते हैं, धरने होते हैं, और कुछ समय बाद फिर सब भुला दिया जाता है। यही चक्र लगातार दोहराया जा रहा है।

शिक्षक अब अपने सम्मान और सुरक्षा के लिए प्रशासन से गुहार कर रहे हैं। विद्यालय संचालक बोर्ड अधिकारियों से सख्त कार्रवाई की मांग कर रहे हैं। लेकिन क्या केवल कार्रवाई से यह समस्या सुलझ जाएगी? हमें मूल में जाकर देखना होगा कि बच्चों के मन में यह हिंसा कैसे जन्म लेती है।

हमारे विद्यालयों में मानसिक परामर्शदाता होना चाहिए, प्रत्येक छात्र की मानसिक स्थिति पर ध्यान देना चाहिए, परिवारों को बच्चों के साथ संवाद का प्रशिक्षण देना चाहिए। विद्यालयों में केवल परीक्षा की तैयारी ही नहीं, जीवन के लिए तैयार करने की भी आवश्यकता है।

आज आवश्यकता है एक "संवाद पुनरुद्धार अभियान" की, जो घर-घर तक पहुंचे। हमें माता-पिता, शिक्षक और छात्र — इन तीनों के बीच विश्वास और सहअस्तित्व की भावना को पुन: जागृत करना होगा। अगर हम बच्चों से सुनना नहीं चाहेंगे, तो वे हिंसा से बोलना सीख जाएंगे।

शिक्षक अब अपने अधिकारों और अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। यह स्थिति शर्मनाक है। एक समाज जो अपने गुरु को सम्मान नहीं दे सकता, वह कभी समृद्ध नहीं हो सकता। अगर हमने अब भी नहीं समझा कि यह शिक्षक की नहीं, बल्कि पूरी पीढ़ी की हत्या है, तो वह दिन दूर नहीं जब हर विद्यालय एक युद्धभूमि बन जाएगा।

हमें यह समझना होगा कि बच्चे गलत नहीं होते, वे केवल अनसुने होते हैं। अगर वे प्यार, समझ और सही दिशा पाएँ तो वही बच्चा दुनिया बदल सकता है। परंतु अगर वह उपेक्षा, अस्वीकार और हिंसा का शिकार बने तो वही बच्चा एक शिक्षक का हत्यारा भी बन सकता है।

सरकार को चाहिए कि वह विद्यालयों में नियमित रूप से मानसिक स्वास्थ्य परीक्षण, संवाद सत्र, और अभिभावक-शिक्षक सम्मेलनों का आयोजन करवाए। माता-पिता को चाहिए कि वे अपने बच्चों को केवल आज्ञा न दें, बल्कि उनकी बातें भी सुनें। और समाज को चाहिए कि वह शिक्षा को केवल नौकरी पाने का माध्यम न माने, बल्कि एक संवेदनशील, जिम्मेदार नागरिक बनाने की प्रक्रिया के रूप में देखे।

यह घटना हमें नींद से जगाने आई है। यह कोई समाचार पत्र की एक ख़बर नहीं, बल्कि पूरे राष्ट्र के लिए एक चेतावनी है। अगर हम अब भी नहीं चेते, तो आने वाले वर्षों में हमारे विद्यालयों में पुस्तकों से अधिक हथियार मिलेंगे, और शिक्षकों से अधिक सुरक्षा कर्मी।

आज भी समय है कि हम इस चेतावनी को गंभीरता से लें। हम संवाद को पुनर्जीवित करें, शिक्षा को पुनरर्थित करें, और अपने बच्चों को हिंसा से नहीं, समझ से जीतना सिखाएं। तभी हम एक सुरक्षित, संवेदनशील और सशक्त भारत की कल्पना कर सकेंगे।

# सपनों का सादा राजकुमार, जिसने दिलों में घर नहीं, घरों में दिल बसा दिए

राजेंद्र कुमार, जिनकी मुस्कान में सादगी का सागर लहराता था और आंखों में प्रेम व करुणा की अथाह गहराई झलकती थी, हिंदी सिनेमा के उन चमकते सितारों में से थे, जिन्होंने न केवल परदे पर जादू बिखेरा, बल्कि लाखों दिलों में अपनी अमर छाप छोड़ी। 'जुबली कुमार' के नाम से मशहूर इस अभिनेता ने उस युग को जीवंत किया, जब सिनेमा केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि भावनाओं का सजीव संसार था। उनकी पुण्यतिथि (१२ जुलाई) पर उनकी सिनेमाई यात्रा को याद करना, उन सपनों, संघर्षों और प्रेम को श्रद्धांजलि देना है, जिन्हें उन्होंने अपनी फिल्मों में रंगों और भावों से साकार किया। उनके किरदार हर आम इंसान की कहानी को गूंजते थे—एक बेटा, एक भाई, एक प्रेमी, जो अपने सपनों और कर्तव्यों के बीच जीवन का संगीत रचता था।

२० जुलाई १९२९ को अविभाजित भारत के सियालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में जन्मे राजेंद्र कुमार तनेजा का बचपन विभाजन की त्रासदी की आग में तपा। 1947 में भारत-पाकिस्तान बंटवारे के बाद उनका परिवार मुंबई आया, जहां उन्होंने शरणार्थी जीवन की कठिनाइयों के बीच नई राह तलाशी। उनके लिए सिनेमा ग्लैमर की चकाचौंध नहीं, बल्कि एक ऐसा मंच था, जहां मेहनत और प्रतिभा से सपनों को पंख लगाए जा सकते थे। उनकी सिनेमाई यात्रा सहायक निर्देशक के रूप में शुरू हुई, जहां मशहूर निर्देशक ए.आर. करदार के सान्निध्य में उन्होंने सिनेमा की रचनात्मक और तकनीकी बारीकियां आत्मसात कीं। यहीं से अभिनय की दुनिया ने उन्हें अपनी ओर खींचा। 1955 में फिल्म 'वचन' से बतौर नायक उनकी पहली चमक दिखी, मगर 1957 में 'मदर इंडिया' ने उन्हें रातोंरात आकाश का तारा बना दिया। नरगिस के बेटे की भूमिका में उनके संवेदनशील और जीवंत अभिनय ने दर्शकों के दिलों को झकझोर दिया। यह फिल्म ऑस्कर के लिए नामांकित होने वाली पहली भारतीय फिल्म थी, जिसने राजेंद्र कुमार को सिनेमा जगत का चमकता सितारा बना दिया।

1960 का दशक राजेंद्र कुमार का स्वर्णिम युग था, जब उनकी फिल्मों ने न केवल सफलता के नए शिखर छुए, बल्कि हिंदी सिनेमा को भावनाओं का एक ऐसा आकाश दिया, जो आज भी दर्शकों के दिलों में गूंजता है। 'धूल का फूल' (1959), 'गहरा दाग' (1963), 'मेरे मेहबूब' (1963), 'संगम' (1964), 'आरजू' (1965), 'सूरज' (1966), 'आये दिन बहार के' (1966), 'हमराज' (1967) और 'तलाश' (1969) जैसी फिल्मों ने उन्हें 'जुबली कुमार' का ताज पहनाया। उनकी लगातार छह-सात फिल्मों ने सिल्वर जुबली (२५ सप्ताह तक सिनेमाघरों में निरंतर प्रदर्शन) का ऐतिहासिक रिकॉर्ड बनाया, जो उस दौर में एक अभूतपूर्व उपलब्धि थी। 'धूल का फूल' में उन्होंने सामाजिक कलंक और मानवीय संवेदनाओं को ऐसी गहराई से उकेरा कि दर्शक भावनाओं के सागर में डूब गए, वहीं 'संगम' में प्रेम त्रिकोण की जटिल भावनाओं को उन्होंने इतनी संजीदगी से जीवंत किया कि हर दृश्य आत्मा को छू गया। 'संगम' में राज कपूर और वैजयंतीमाला के साथ उनकी तिकड़ी ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, और यह फिल्म न केवल भारत में, बल्कि विदेशों में भी गूंजी, जिसे 1965 में फिल्मफेयर पुरस्कार के लिए नामांकन मिला।

राजेंद्र कुमार की अभिनय शैली का जादू उनकी सादगी और स्वाभाविकता में छिपा था। वे नाटकीयता के परे, अपने किरदारों में ऐसी सच्चाई और जीवंतता लाते थे कि दर्शक उनकी हर भावना से गहरे जुड़ जाते थे। उनकी आंखें मानो कहानियां कहती थीं—प्रेम की मासूम चमक, दुख की गहन छाया और करुणा का अथाह समंदर उनमें साफ झलकता था।

वैजयंतीमाला, साधना, माला सिन्हा और सायरा बानो जैसी अभिनेत्रियों के साथ उनकी रोमांटिक जोड़ी ने परदे पर जादू बिखेरा। उनके गीत, जैसे 'बहारों फूल बरसाओ, मेरा महबूब आया है' ('सूरज'), 'मेरे मेहबूब तुझे मेरी मोहब्बत की कसम' ('मेरे मेहबूब'), 'ये मेला दिलों का' ('हमराज') और 'दुनिया करें सवाल' ('संगम') आज भी उतने ही मधुर और कालजयी हैं। मोहम्मद रफी और लता मंगेशकर जैसे महान गायकों की आवाज में ये गीत राजेंद्र कुमार की स्क्रीन उपस्थिति के साथ मिलकर एक ऐसी सिम्फनी रचते थे, जो दिलों को बांध लेती थी। उनकी फिल्मों का संगीत हिंदी सिनेमा के स्वर्ण युग का एक अमर रत्न बन गया, जो समय की सीमाओं को पार कर आज भी गूंजता है।

1970 के दशक में राजेंद्र कुमार ने अभिनय की चमक के साथ-साथ फिल्म निर्माण के क्षेत्र में भी अपनी प्रतिभा का परचम लहराया। उन्होंने अपनी प्रोडक्शन कंपनी 'ज्योति स्टूडियो' स्थापित की और 1981 में अपने बेटे कुमार गौरव को 'लव स्टोरी' के जरिए सिनेमाई दुनिया में पेश किया। यह फिल्म उस दौर की सबसे बड़ी हिट्स में से एक बनी, जिसने युवा प्रेम और जोश की नई परिभाषा गढ़ी। इसके गीत, जैसे 'ये वादियां, ये फिजाएं', आज भी दिलों में ताजगी और रोमांच जगाते हैं। इसके बाद 1986 में उन्होंने 'नाम' का निर्माण किया, जिसने संजय दत्त के करियर को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया। निर्माता के रूप में उनकी दूरदृष्टि, रचनात्मकता और जोखिम उठाने की हिम्मत ने उन्हें सिनेमा के बहुआयामी रत्न के रूप में स्थापित किया। उनकी फिल्में न केवल व्यावसायिक रूप से कामयाब रहीं, बल्कि अपनी गहन कहानियों और कालजयी संगीत के लिए भी अमर हो गईं।

राजेंद्र कुमार का व्यक्तित्व उनकी फिल्मों की तरह ही सरल, सौम्य और आत्मीय था। सिनेमा जगत में उन्हें 'गुड मैन' के नाम से जाना जाता था, जो उनकी उदारता और मानवीयता का प्रतीक था। 1969 में भारत सरकार ने उनके सिनेमाई योगदान के लिए उन्हें 'पद्म श्री' से नवाजा। भले ही उन्हें पुरस्कारों की लंबी फेहरिस्त न मिली, लेकिन दर्शकों का असीम प्यार और सम्मान उनके लिए सबसे बड़ा रत्न था। १२ जुलाई 1999 को मुंबई में उनका निधन हुआ, और उनकी अंतिम यात्रा में सैकड़ों प्रशंसकों और सिनेमा जगत के दिग्गजों की उपस्थिति उनकी अपार लोकप्रियता और सम्मान का जीवंत प्रमाण थी। उनके निधन ने हिंदी सिनेमा के एक स्वर्णिम युग का अंत किया, मगर उनकी फिल्में, उनके गीत और उनका अभिनय आज भी लाखों दिलों में जीवंत हैं, समय की सीमाओं को पार करते हुए।

राजेंद्र कुमार का योगदान केवल उनकी फिल्मों की संख्या या व्यावसायिक सफलता तक सीमित नहीं, बल्कि उन्होंने हिंदी सिनेमा में मध्यमवर्गीय नायक की छवि को एक नया, अमर आयाम दिया। उनकी फिल्में भारतीय समाज के सपनों, प्रेम और संघर्ष की जीवंत गाथाएं थीं, जो हर दिल को छूती थीं। उनके संवाद, जैसे 'संगम' का "हर इंसान के दो चेहरे होते हैं," आज भी लोगों की जुबान पर गूंजते हैं, मानो समय के साथ उनकी गहराई और प्रासंगिकता बढ़ती ही गई हो। उनकी सादगी, भावनात्मक गहराई और मानवीय संवेदनशीलता ने उन्हें न केवल परदे का सितारा, बल्कि दर्शकों के दिलों का सच्चा नायक बनाया।

आज, उनकी पुण्यतिथि पर उन्हें याद करना, उस सिनेमाई जादू को फिर से जीवंत करना है, जो उन्होंने अपनी फिल्मों के माध्यम से रचा। उनकी मुस्कान में बसी सादगी, उनकी आंखों में झलकती करुणा और उनकी फिल्मों का अमर जादू आज भी सिनेमा प्रेमियों के दिलों में एक अनमोल राग की तरह बस्ता है। उनकी जीवन गाथा हमें सिखाती है कि मेहनत, लगन और सच्चाई के बल पर कोई भी अपने सपनों को हकीकत का रंग दे सकता है। 'जुबली कुमार' की यह विरासत समय की सारी सीमाओं को लांघ चुकी है, क्योंकि उनकी फिल्में और उनका व्यक्तित्व कभी पुराने नहीं होंगे—वे अनंत काल तक प्रेरणा और प्रेम का प्रतीक बने रहेंगे।

**प्रो. आरके जैन "अरिजीत", बड़वानी (मप्र)**

# बुनियादी शिक्षा के विकास से बेहतर नागरिक और आत्मनिर्भरता संभव !(परख राष्ट्रीय सर्वेक्षण रिपोर्ट-2024)

हाल ही में शिक्षा मंत्रालय द्वारा 'परख' राष्ट्रीय सर्वेक्षण, २०२४ की रिपोर्ट जारी की गई है, जो बुनियादी शिक्षा में सुधार की जरूरतों को रेखांकित करती है। वास्तव में आज जरूरत इस बात की है कि प्राथमिक शिक्षा में सुधार किया जाए। कहना ग़लत नहीं होगा कि प्राथमिक शिक्षा ही वास्तव में देश व समाज का भविष्य तय करती है, क्यों कि यहीं से शिक्षा की असली नींव शुरू होती है और यदि प्राथमिक शिक्षा की नींव मजबूत है तो देश और समाज का भविष्य भी उज्ज्वल है। हमारे देश के पहले शिक्षा मंत्री मौलाना अबुल कलाम आजाद यह बात कहा करते थे कि भारत के भाग्य और भविष्य का निर्माण देश के स्कूलों में ही तय होगा। अगर स्कूलों में शिक्षा व्यवस्था आगे बढ़ेगी, तो भारत भी आगे बढ़ेगा। यह बुनियादी शिक्षा ही होती है जो बच्चों के शारीरिक, मानसिक, नैतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विकास को बढ़ावा देती है, लेकिन प्राथमिक शिक्षा अब भी कोरोना महामारी के असर से बाहर नहीं निकल पायी है। परख सर्वे २०२४ बताता है कि 9वीं क्लास में पढ़ने वाले ६३ प्रतिशत बच्चे बड़ी संख्याओं का गुणा भाग नहीं कर पाते हैं। यह बात भारत के २१ लाख से ज्यादा स्कूली बच्चों पर हाल ही में किए गए सर्वे में सामने आई है। पाठकों को बताता चलूं कि राष्ट्रीय सर्वेक्षण (परख) के तहत पिछले साल दिसंबर में २१,15,0२२ विद्यार्थियों का सर्वे किया गया था। इस सर्वेक्षण में ३६ राज्य और केंद्र शासित प्रदेशों के 781 जिलों के 74,२२9 सरकारी और निजी स्कूलों को शामिल किया गया था। यह सर्वे तीसरी, छठी और नौवीं के विद्यार्थियों को लेकर किया गया था।केन्द्रीय शिक्षा मंत्रालय के सर्वे द्वारा यह पता चला है कि २०२४ में देश की बेसिक शिक्षा का स्तर कोरोना के बाद से नीचे आ गया है। रिपोर्ट में सामने आया है कि कक्षा ६ वीं तक के केवल 53 प्रतिशत बच्चो को ही 10 का पहाड़ा आता है। वही दूसरी ओर कक्षा ३ तक के केवल 55 % बच्चो को ही 1 से लेकर 100 तक की गिनती आती है। इतना ही नहीं, कक्षा ३ के करीब 45 % बच्चे 1 से 100 तक गिनती को बढ़ते या घटते क्रम में भी नहीं लगा पाये। दूसरी ओर करीब 4२ % बच्चे संख्याओ के बीच जोड़-घटाना नहीं कर पाए। रिपोर्ट बताती है कि कक्षा ६ के 47 % बच्चे ऐसे हैं, जिन्हें 4 बेसिक सामान्य गणित ऑपरेशन जोड़, घटाना, गुणा, भाग ठीक से हल करना नहीं आता और न ही इन्हें 10 तक की संख्याओ के ठीक से पहाड़े याद है और न ही उन संख्याओ के बीच गुना करना जानते है। कक्षा ६ में पर्यावरण और सोसाइटी में बच्चों का परफॉर्मेंस 49% है तथा भाषा में औसत परफॉर्मेंस 57% है, जबकि गणित में सबसे कम 46% है। शिक्षा मंत्रालय के अधिकारियों के अनुसार 50 फीसदी से कम छात्रों के सही जवाब देने से उनके सीखने की क्षमता में अंतर का साफ पता चलता है। वहीँ कक्षा ३ में केंद्रीय सरकारी स्कूलों का सबसे कम परफॉर्मेंस गणित विषय में ही है। कक्षा ६ में भी गणित सबसे खराब परफॉर्मेंस वाला विषय रहा है। पाठकों को बताता चलूं कि सरकारी और सहायता प्राप्त स्कूलों के नतीजे भी एक जैसे ही रहे, लेकिन गणित में प्रदर्शन सबसे खराब रहा। हालांकि भाषा के मामले में सभी स्कूलों का बेहतरीन प्रदर्शन रहा। सर्वे में ग्रामीण और शहरी स्कूलों के परिणामों पर भी गौर किया गया है। इसमें ग्रामीण इलाकों के कक्षा तीन के विद्यार्थियों ने गणित और भाषा में बेहतर प्रदर्शन किया है, जबकि शहरी क्षेत्रों के छठी और नौवीं के विद्यार्थियों ने ग्रामीण इलाकों के विद्यार्थियों को सभी विषयों में पछाड़ दिया। वास्तव में यह सब दर्शाता है कि प्राथमिक शिक्षा में बच्चों का प्रदर्शन बहुत ही खराब है। दूसरे शब्दों में कहें तो ये आंकड़े इस बात की ओर संकेत करते हैं कि स्कूलों की शैक्षणिक गुणवत्ता में असमानता अभी भी एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। वास्तव में कोविड आने से छात्रों की सीखने की क्षमताओं पर व्यापक असर पड़ा, क्यों कि जो लर्निंग (अधिगम) छात्र आफलाइन कक्षाओं में कर पाते थे, कोविड के समय आनलाइन कक्षाओं से छात्रों को वह अधिगम नहीं हो पाया। दूसरे शब्दों में कहें तो महामारी के कारण स्कूल बंद होने और हाइब्रिड/वर्चुअल लर्निंग पर स्विच करने से कई माध्यमों से छात्रों की उपलब्धि पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा, जिसमें कौशल संचय में गिरावट और सहकर्मी प्रभाव और सहकर्मी-समूह गठन में व्यवधान शामिल हैं। अंत में यही कहूंगा कि परख-२०२४ की रिपोर्ट बुनियादी शिक्षा में सुधार किए जाने की बात करती है। बुनियादी शिक्षा को प्रभावी बनाने के लिए, मातृभाषा में शिक्षा दिया जाना आवश्यक है, क्यों कि मातृभाषा ही वह भाषा है जिसमें विद्यार्थियों को अधिगम में सहजता, सरलता महसूस होती है और वे चीजें आसानी से ग्रहण कर पाते हैं। शिक्षा को कार्य-केंद्रित बनाने की भी जरूरत है। टास्क सेंटर्ड लर्निंग से छात्र व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त कर आत्मनिर्भर बन सकते हैं। इसके अतिरिक्त, शिक्षा में लोकतांत्रिक नागरिकता, राष्ट्रीय एकीकरण, और सर्वोदय समाज के विकास के मूल्यों को शामिल करना भी बहुत महत्वपूर्ण है। शिक्षक प्रशिक्षण, मूल्यांकन प्रक्रिया, सामुदायिक भागीदारी, डिजिटल शिक्षा, आधारभूत और जीवन कौशल तथा शिक्षण सामग्री आदि पर भी पर्याप्त ध्यान दिए जाने की आवश्यकता है। इतना ही नहीं, शिक्षा तक पहुंच सुनिश्चित करने के लिए लचीला बुनियादी ढांचा विकसित करने की आवश्यकता है। हमें यह याद रखना चाहिए कि यदि हमारी बुनियादी शिक्षा प्रभावी व अच्छी है तो छात्रों को ज्ञान और कौशल तो प्राप्त होगा ही, साथ ही साथ छात्र देश के बेहतर नागरिक और आत्मनिर्भर व्यक्ति भी बन सकेंगे। कहना ग़लत नहीं होगा कि बुनियादी शिक्षा बालकों के समग्र विकास पर आधारित होनी चाहिए। बुनियादी शिक्षा वह आधारशिला है, जिस पर व्यक्ति और किसी भी राष्ट्र का भविष्य टिका होता है। अत: हमें यह चाहिए कि हम बुनियादी शिक्षा को सुदृढ़ करने की दिशा में आवश्यक और जरूरी कदम उठाएं।

**सुनील कुमार महला, फ्रीलांस राइटर, कालमिस्ट व युवा साहित्यकार, उत्तराखंड।**

# मराठी बोलना गर्व की बात, लेकिन हिन्दी से घृणा क्यों ?

**अजय जैन 'विकल्प'**

अपनी स्थापना से ही भारत विविधताओं का देश बना हुआ है और भाषा इसकी सबसे खूबसूरत विशेषताओं में से एक है। इसलिए यहाँ अनेकता के बावजूद एकता है, चाहे फिर कोई भी मुद्दा हो, यानी कभी अपने को श्रेष्ठ बताकर किसी अन्य को बुरा नहीं कहा गया, किन्तु इस देश के राज्य महाराष्ट्र की राजधानी मुम्बई में फिलहाल यही बुरा देखा जा रहा है, जो अनुचित है और देश की भाषाई एकता के लिए घातक भी है।

मुम्बई न केवल आर्थिक राजधानी है, बल्कि भाषाओं, संस्कृतियों और समुदायों का संगम स्थल भी है। इस महानगर में मराठी का बोलबाला होना स्वाभाविक है, यह इस मिट्टी की आत्मा है, लेकिन आज एक चिंताजनक प्रवृत्ति उभर रही है:हिन्दी के प्रति अघोषित घृणा दिख रही है, जिसके पीछे असहिष्णुता, राजनीतिक विद्वेष एवं स्वयं को सर्वश्रेष्ठ बताने की अजीब मानसिकता है। मराठी को सम्मान देने में किसी को भी कोई आपत्ति नहीं हो सकती है। आपत्ति तब होती है, जब इस सम्मान के नाम पर हिन्दी को हाशिए पर धकेला जाता है, हिन्दी भाषियों को 'बाहरी' करार दिया जाता है, और उनके साथ दुर्व्यवहार होता है। यह केवल भाषाई टकराव नहीं, एक गहरी राजनीतिक साजिश है, जिसे समझना, उजागर करना और विरोध करते हुए हिन्दी के लिए खड़े रहना बहुत आवश्यक है। यह समझना होगा कि मराठी स्वाभिमान की भाषा है, लेकिन हिन्दी के प्रति संकीर्णता सही नहीं है। मराठी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि सभ्यता, इतिहास और गौरव है। छत्रपति शिवाजी महाराज, संत तुकाराम, लोकमान्य तिलक और बाल गंगाधर तिलक आदि महापुरुषों ने मराठी को जनचेतना और क्रांति का माध्यम बनाया, तो कैद में रहते हुए भी राष्ट्रीय एकता के लिए वीर विनायक सावरकर ने हिन्दी कविताएं रचीं एवं हिन्दी सिखाई। आज भी महाराष्ट्र में मराठी साहित्य, नाटक, संगीत और संस्कृति की धारा बह रही है।

मराठी बोलना, मराठी में गर्व करना, उस विरासत को आगे बढ़ाना हर मराठीभाषी का हक़ और कर्तव्य है मगर जब यह गर्व दूसरों की भाषा के प्रति घृणा में बदल जाता है, तो यह स्वाभिमान नहीं, संकीर्णता बन जाता है।

सबको समझना पड़ेगा कि हिन्दी एकता का सेतु और मुम्बई का मौन आधार है। हिन्दी भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, जो उत्तर भारत से लेकर भारत के कोने-कोने तक संवाद का माध्यम है। मुम्बई जैसे महानगर में हिन्दी केवल उत्तर भारतीयों की नहीं, बल्कि लाखों मराठी, गुजराती, बिहारी, तमिल, मलयाली और बंगालियों के भी दैनिक संवाद की भाषा बनी हुई है।

मुम्बई यानी बॉलीवुड सहित रेडियो, टेलीविजन, विज्ञापन, सेवा क्षेत्र और मीडिया के अधिकतर प्रमुख उद्योग हिन्दी के दम पर खड़े हैं। यही नहीं, लाखों मेहनतकश मजदूर, वाहन चालक, नौकर, घरेलू कामगार, उद्घोषक, पत्रकार और कलाकार भी हिन्दी के माध्यम से ही रोज़ी-रोटी व पहचान प्राप्त करते हैं, तो बड़ा सवाल है कि इस हिन्दी से इतनी घृणा क्यों, मारपीट क्यों, प्रदर्शन क्यों... ?

स्थानीय राजनीतिक कारण देखें तो पता चलता है कि 'मराठी बनाम हिन्दी' की कृत्रिम खाई बनाई गई है, क्योंकि उसी से तो सत्ता प्राप्ति का मार्ग मिलेगा। भाषा का यह संघर्ष अचानक नहीं पनपा है, बल्कि यह कुछ राजनीतिक दलों और संगठनों की योजनाबद्ध रणनीति का परिणाम है। 'मराठी मानुस' के नारे के पीछे वर्षों से एक 'अपराध-बोध' और 'भय' को बोया गया, कि हिन्दी भाषी मुम्बई को 'हड़प' रहे हैं, जबकि सत्यता इससे अलग है और धरातल पर ऐसा कुछ भी नहीं है। हिन्दी बोलने वाला अपना काम कर रहा है, तो मराठी एवं अन्य भाषा बोलने वाला अपनी जिम्मेदारी निभा रहा है, इनमें कोई झगड़ा नहीं है। राज्य और मुम्बई को निगलने के ऐसे विचार न केवल झूठे हैं, बल्कि सामाजिक सौहार्द के लिए खतरा हैं, क्योंकि मुम्बई की आत्मा में तो हिन्दी हमेशा रही है। 1950 के दशक में भी जब बम्बई राज्य बना था, तब भी हिन्दीभाषी इसके विकास में बराबरी से सहभागी थे।

हिन्दी को 'बाहरी भाषा' कहने वाले यह भूल जाते हैं कि संविधान में यह राजभाषा घोषित है और इसे पूरे भारत में समान सम्मान प्राप्त है। ऐसा भी लगता है कि असल डर हिन्दी से नहीं, बल्कि उस जनसांख्यिकी बदलाव से है, जो उत्तर भारत से आए श्रमिकों और युवाओं के कारण मुम्बई में हो रहा है। बेरोज़गारी, शिक्षा में गिरावट और स्थानीय युवाओं को नौकरियों नहीं मिलने का दोष भी हिन्दी भाषियों पर डाल देना आसान बहाना बन गया है, लेकिन इसका उचित समाधान खोजने की अपेक्षा हिन्दी को रोककर गुंडागर्दी करना कहाँ से सही हो गया है ? क्या हिन्दी भाषियों को निकाल देने से, हिन्दी नहीं बोलने देने से, राजनीति करने से एवं सिर्फ मराठी की जिद लगाने से युवाओं को रोज़गार मिल जाएगा ? राज्य तरक्की कर लेगा, हिन्दी और मराठी का स्नेह बना रहेगा ?

उत्तर साफ़ है-नहीं, क्योंकि विकास की कुंजी भाषाओं को सीमित करने में नहीं, बल्कि उन्हें सर्वव्यापी व समावेशी बनाने में है। राजनीति के चक्कर में यह भूलना घातक है कि हिन्दी को अपमानित करना आसान है। वास्तव में यह संविधान का अपमान है, क्योंकि संविधान की धारा *4* हिन्दी को राजभाषा घोषित करती है। अनुच्छेद 19 हर नागरिक को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता देता है, तो कोई भी राज्य, नगर या संस्था किसी भाषा विशेष को किसी को बोलने से कैसे रोक सकता है। मुम्बई में हिन्दी बोलने वाले पर तंज कसना, दुकानों के बोर्ड बदलवाना या हिन्दी में सेवा देने से इनकार करना सीधे तौर पर संविधान का सीधा उल्लंघन यानी राष्ट्रद्रोह है।

मुम्बई में हिन्दी का विरोध करने वालों एवं भाषा के बँटवारे पर मौन रहने वालों को भाषाई सौहार्द के उदाहरण दक्षिण भारत से सीख लेनी चाहिए। तमिलनाडु, केरल और कर्नाटक जैसे राज्यों ने अपनी भाषाओं को मज़बूत किया, लेकिन कभी हिन्दी को दुश्मन नहीं बनाया। बेंगलुरु जैसे शहर में भी कन्नड़ प्रमुख है, लेकिन हिन्दी स्वीकार है। वहाँ के लोग हिन्दी सीखते हैं, सिखाते हैं और साथ रहते हैं।

मुम्बई, जो देश का सबसे बड़ा समावेशी शहर कहलाता है, वहाँ से हिन्दी फ़िल्म और टी.वी. उद्योग निकाल दिया जाए, तो कल्पना करें कि क्या बचेगा ? अगर हिन्दी बोलने वाला अपने ही देश में पराया महसूस करे, तो यह केवल शर्मनाक नहीं, बड़ा जहर है।

सबको इस बात को महसूस करना होगा कि भाषाई टकराव से कुछ नहीं सधेगा। मराठी और हिन्दी दोनों समृद्ध भाषाएं हैं। दोनों में साहित्य, संस्कृति, ज्ञान और इतिहास की गहराइयाँ हैं। इसलिए कुछ सकारात्मक कदम एवं उदारता लेकर विद्यालयों में मराठी और हिन्दी दोनों को सम्मानजनक स्थान दिया जाए। सार्वजनिक बोर्डों में मराठी प्रमुख हो, लेकिन हिन्दी को न हटाया जाए। सरकार ऐसे कार्यक्रम चलाए, जो भाषाई सौहार्द को बढ़ावा दें। यानी नेता 'वोट बैंक' के लिए भाषा को हथियार न बनाएं।

राजनीति से पनपाए गए इस विवाद का समाधान बनाम निष्कर्ष यही है कि मुम्बई की आत्मा मराठी और हिन्दी का संगम है, यानी मुम्बई केवल मराठी या हिन्दी की नहीं, बल्कि पूरे भारत की है। जैसे कश्मीर भारत का स्वर्ग है, ऐसे ही महाराष्ट्र और मुम्बई का असली सौंदर्य विविधता-अनेकता में है। हिन्दी से घृणा करके हम न तो मराठी को मजबूत कर सकते हैं, न मुम्बई को।

मराठी और हिन्दी २ भाषाएं नहीं, २ आत्माएं हैं-जिन्हें जोड़कर ही भारत एकता और शक्ति की मिसाल बनेगा। कारण कि किसी भी भाषा से प्रेम करना अच्छी बात है, लेकिन किसी भाषा से घृणा करना अपने ही देश और उसके नियम-कायदों से घृणा करने जैसा है।

यह भी तय है कि मुम्बई और राज्य के अन्य हिस्सों में मराठी बनाम गैर-मराठी भाषा विवाद को लेकर चल रहे राजनीतिक और सामाजिक तनाव, प्रदर्शन, गुंडागर्दी और जबरदस्ती से भाषा एवं क्षेत्रीय अस्मिता का मुद्दा हल नहीं होगा, बल्कि इससे आमजन के बीच विश्वास घटकर विष फैलेगा। बेहतर यह है कि सरकार और सभी को राज्य-देश हित में इस घमासान को टालते हुए देशप्रेम दिखाकर दोनों भाषा का सम्मान स्वीकारना चाहिए।

## एक शाम गुरु देव के नाम विशाल भजन संख्या सफलतापूर्वक संपन्न हुई जिसमें राजस्थान से पधारे हुए कलाकार दिनेश नाथ योगी धरला एंड पार्टी मैं अपनी प्रस्तुति थी समस्त याप्रल मित्र मंडल व दिनेश नाथ योगी का स्वागत हीराराम खण्डाला द्वारा किया।






## बालाजी नगर स्थित आईजी गौशाला में गुरु पूर्णिमा के उपलक्ष्य में गौभक्त महिला भजन मंडली द्वारा भजन प्रस्तुत किये। गौशाला में हरे घास खिलते गौ सेवा की।



# राहुल गांधी का यह संविधान बचाने की बैठक नहीं है, यह कांग्रेस बचाने की बैठक है : बीजेपी

**मनोरंजन सासमल**

**भुबनेश्वर :** राहुल गांधी के ओडिशा दौरे को लेकर प्रदेश भाजपा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस कर कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा है। प्रदेश भाजपा उपाध्यक्ष बिरंची त्रिपाठी ने कांग्रेस पर निशाना साधते हुए कहा, कांग्रेस अभी भी हताश है। कांग्रेस ने खुद को आम लोगों से दूर कर लिया है। यह संविधान बचाओ रैली नहीं, बल्कि कांग्रेस बचाओ रैली है।

गौरतलब है कि कांग्रेस की संविधान बचाओ रैली शुक्रवार को भुवनेश्वर के बरमूडा इलाके में होगी। इसमें राहुल गांधी के साथ अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे और महासचिव के.सी. वेणुगोपाल भी शामिल होंगे। कांग्रेस नेतृत्व ने रैली को सफल बनाने के लिए दिन-रात मेहनत की है। जमीनी स्तर से लेकर राज्य स्तर तक हर जगह पोस्टर बैनर लगाए गए हैं। लेकिन इस समय यह उम्मीद की जा रही है कि रैली में महासंघ के आंदोलन का नेतृत्व कौन करेगा। इस पर राजनीतिक विवाद है। दूसरी ओर, कांग्रेस हैजा और कुपोषण जैसे मुद्दों पर सरकार को घेर रही है, महिलाओं और किसानों पर हो रहे अत्याचारों से लेकर आदिवासियों और पिछड़े वर्गों के प्रति सरकार के पक्षपातपूर्ण रवैये तक, राज्य में कई मुद्दों पर। इस बीच, राजनीतिक गठजोड़ राहुल के दौरे का बेसब्री से इंतज़ार कर रहा है ताकि यह देखा जा सके कि इससे राज्य कांग्रेस को क्या फ़ायदा होगा।



स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023